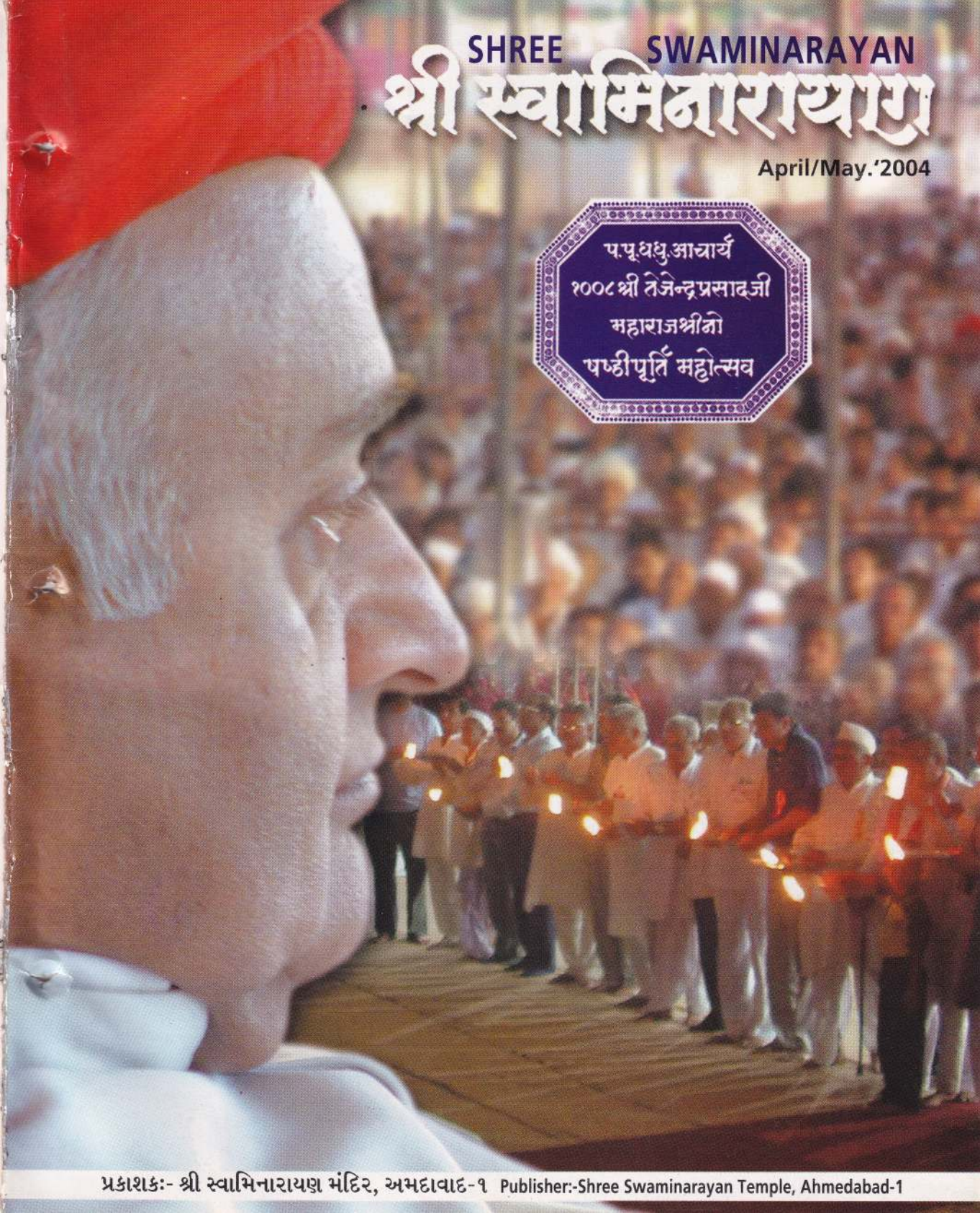
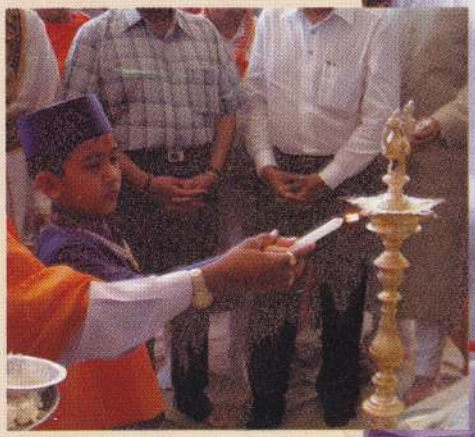
SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

April/May.'2004



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:-Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





सर्वोपरि श्रीहरिके ८वें वंशज अपने दादा के षष्ठि पूर्ति महोत्सवका तथा हरिमंडिप में अखंड धुनका दीप प्रकट कर उदघाटन कर रहे है ।



प.पू. दादा के सानिध्यमें प.पू. बाल लालजी महाराजश्री कथा को प्रारंभ करने वाले वक्ता शास्त्री स्वामी निर्गुणदसाजी को अपनी कोमल उंगलियों टीका करते हुए ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२१३३८३५ (मंदिर)
७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ अप्रेल-मई २००४

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	"श्री १०८" क्यो ?	६
४.	श्री स्वामिनारायण संप्रदाय और धर्मवंशी आचार्यपद	१०
५.	सर्वोपरि का काम सर्वोपरि होता है	१६
६.	भूज के महंत स्वामीका पत्र	२०
७.	तस्मै श्री गुरुवे नमः	२१
८.	समय के पाबन्द अपने महाराजश्री	२२
९.	धर्मवंशी धर्माचार्य के षष्टि पूर्ति	२३
१०.	षष्टि पूर्ति महा महोत्सव	२५
११.	सत्संगिभूषण कथा के वक्ता	३९
१२.	गेरी बना गोविंद।	४२
१३.	"षष्टीपूर्ति महोत्सव" में आशीर्वचन	४३
१४.	हमारे प.पू. महाराजश्री	४८
१५.	गुरुदेव के चरणो में कोटी-कोटी वंदन	४९
१६.	एक विरल व्यक्ति	५५
१७.	स्नेह सागर का उद्गम स्थान	६२

कला :- प्रफुल खरसाणी • फोटोग्राफी : योगेश भावसार

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २१३२१७०, २१३६८१८. फेक्स : २१७६९१२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com

अ स्म दी य म्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

परमात्मा की प्राप्ति के लिए भक्त को कितनी प्रतीक्षा करनी पडती है। इस विषय वस्तु का साक्षात् दर्शन करना हो तो जितना अधिक परीश्रम जगत के पदार्थो की प्राप्ति के लिए करते हैं उतना भगवत प्राप्ति में नहीं करते फिरभी स्वल्प प्रयास में स्वार्थ सिद्धि हो जाती है। उसी प्रकार हम सभी पिछले डेढ वर्षसे षष्टि पूर्ति महोत्सव की प्रतीक्षा कर रहे थे और देखते देखते में यह उत्सव आगया। जिसमें देश विदेश से लाखो धर्मकुल प्रेमी भक्तजन आन्तरिक आनंन्द के साथ उत्सव में भाग लिये साथ ही जीवन का अनमोल पाथेय साथ में बांधलिये। और अपने जीवन को धन्यबना लिए। ऐसी धन्यता एवं दिव्यता का सुमेल जिसके जीवन में मिला उसका मानव जन्म सफल हो गया। षष्टि पूर्ति महोत्सव के प्रकाश का सदेह सभीने आनन्द प्राप्त किया, यह कभी भूला नहीं जा सकता। किन्तु इस का सदा स्मरण बना रहे इस हेतु से "श्री स्वामिनारायण" मासिक अप्रैल - मई महीने में "षष्टि पूर्ति महोत्सव" विशेषांक रुप में आप सभी के हाथ में रखते हुए बहुत आनंद हो रहा है। जिसमें अपने पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री के षाठ वर्ष पूर्ण होने की जीवन गाथा तथा इतने लम्बे समयतक सत्संग का पोषण कार्य इसके साथ ही आपश्री के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष दर्शन हो सके ऐसा ही इसमें प्रयास किया गया है। इसके साथ जीव मात्र को इस महोत्सव की स्मृति बनी रहें इसलिये रंगीन चित्रों का अद्‌भुत दर्शन कराया गया है जिससे प्रत्यक्ष दर्शन का ज्ञान हो सके। जो आप सभी के लिए एक संग्रहणीय संभारण बना रहेगा। यदि अन्त में ऐसा ही संभारण का स्मरण हो जाय तो निश्चित ही श्रीजी महाराज के वचनानुसार अक्षरधाम की प्राप्ति होगी इसमें शंका का लेश मात्र संदेह नहीं है। अपने भावी आचार्य प. पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में सभी सन्त हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने जो अविरत सेवा की है उन सभी पर सर्वोपरि श्री नरनारायदेव तथा अपने अपर स्वरुप प. पू. आचार्य महाराजश्री की अधिकाधिक प्रसन्नता की अमित वर्षात होती रहें ऐसी श्री हरि के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रु परेखा

मार्च - २००४

१. जेतलपुर मंदिर पारायण की पूर्णाहुति के अवशर पर पदार्पण

२. प. भ. धर्मेन्द्रकुमार भीखाभाई सुहागीयाके यहा पदार्पण, बापुनगर
प.भ. बाबुभाई मधुभाई काछडीया के यहा पदार्पण, बापुनगर
प.भ. भगवानभाई डाह्याभाइ धानाणी के यहा पदार्पण, बापुनगर

३. रडोदरा (ता.बायड) गॉव में पारायण के अवशर पर पदार्पण, प.भ. मनुभाई हिराभाई पटेल के यहॉ पदार्पण ।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर, कलोल (जेतलपुर देश) पदार्पण

५. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशन फाउन्डेशन मञ्जुपुर उंझामें पदार्पण

६-८ मूली मंदिर में श्री घनश्याम महाराज के सुवर्ण सिंहासनके उदघाटन के अवशर तथा वहॉ से नारायणपर (कच्छ) पदार्पण

९. प.भ. राजुकुमार सोमाभाई भावसारके यहॉ पदार्पण, राणीप
प.भ. चंदुभाई नारणदास पटेल के, यहॉ पदार्पण, राणीप
प.भ. हर्षदभाई इश्वरभाई पटेल के यहॉ पदार्पण, राणीप

११. बरवाणा (ता. मोरबी, मूलीदेश) बहनो तथा भाईयो के मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के अवशर पर पदार्पण

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर रंगपर (ता. मोरबी, मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवशर पर पदार्पण

१४. जेतलपुर मंदिर में पाटोत्सव-अभिषेक करकमलो से लिया, प.भ. शंभुभाई हिरजीभाई पटेल के यहॉ पदार्पण, नवा वाडज श्री नरनारायणदेव यपवक मंडल, कालुपुर द्वारा आयोजीत ''भजन संध्या'' कार्यक्रम में आशीर्वाद देने पधारे (अहमदाबाद मंदिर पदारर्पपण में)

१५. प.भ. भाविनकुमार किर्तीकांतभाई सुखडीया के यहॉ पदार्पण, बापुनगर

१७. प.भ. ननुभाई नाथुभाई कथीरीया के यहॉ पदार्पण, बापुनगर
प.भ. रसिकभाई जादवजीभाई जेठवा के यहॉ पदार्पण, नरोडा

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर पाटोत्सव पारायण अवसर पर पदार्पण

२१. प.भ. भाविभाई आर. त्रिवेदी के यहॉ पदार्पण, मणीनगर
प.भ. दशरथभाई जी. पारेख के यहॉ पदार्पण, घोडासर
प.भ. विनीत नरेन्द्रभाई के यहॉ पदार्पण, घाटलोडीया

२२. श्री भद्रकाली मंदिर (भद्र) वेबसाईट उदघाटन अवसर पर पदार्पण
प.भ. संजीव सी. बोटादरा के वहॉ पदार्पण, सेटेलाईट

२३. प.भ. निलेश पी. मारफतीया के यहॉ पदार्पण, नवरंगपुरा
प.भ. अशोकभाई वडगामके यहॉ पदार्पण, सेटेलाईट

२६. प.भ. बालाभाई रामजीभाई पटेल के यहॉ पदार्पण, चांदलोडीया

२७. प.भ. मंगलदास उमेदराम पटेल के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा

२८. प.भ. देवेन्द्रभाई अंबालाल कंसारा के यहाँ पदार्पण, कालूपुर

प.भ. सांकणचन्दभाई सी.पटेल के यहाँ पदार्पण, सोलारोड

२९. प.भ. महेशभाई शान्तिलाल शाह के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट

३०. श्रीहरि प्राकट्यत्सव, रामनवमी अहमदावाद मंदिर में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज मंदिर कांकरिया पाटोत्सव अभिषेक स्व. हाथों से

एप्रिल - २००४

२ से ८तक षष्टि पूर्ति प.पू. लालजी महाराजकी अध्यक्षता में सत्संग समाज की तरफ से धूमधाम से सम्पन्न ।

१० से ११ मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।

१२ प.भ. विष्णपभाई (मोखासणवाला) के यहाँ पदार्पण

१४-१५ रापर (कच्छ) पदार्पण ।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मानगढ (ता. हगवद मूलीदेश) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१७ चराणा (ता. माणसा) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८ प.भ. पंकज हरिप्रसाद त्रिवेदीके यहाँ पदार्पण सेटेलाइट

प.भ. राजेन्द्रभाई अंबालाल पटेल के यहाँ भी भारत प्लायुबोड के यहाँ पदार्पण घाचलोडिया ।

१९ प.भ. अनीलभाई गजानंदभाई के यहाँ पदार्पण मणीनगर

२०-२२भुज (कच्छ) तथा भारासर (कच्छ) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा में पदार्पण

२३ प.भ. मगनभाई पटेल के यहाँ मोटा उभणा गाँव में कथा में पदार्पण

२४ प.भ. वसन्तभाई मिभुवनदास टांक के यहाँ "व्रजेन्द्र इन्जिनीयर्स में नई स्कीम के उदघाटन हेतु पदार्पण, सी. जी रोड

प.भ परसोत्तम वी. दासभाई के यहाँ पदार्पणबापूनगर

प.भ. अनिलभाई के. पटेल श्)मनन मोटर्स) के यहाँ पदार्पण, नरोडापाटिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट कथा पूर्णाहुति पर पदार्पण ।

प.भ. नरेन्द्रकुमार पोपटभाई के यहाँ के पदार्पण, बापूनगर

प.भ मनसुखभाई पी. पटेल के यहाँ पदार्पण, निकोल रोड

प.भ. अरविन्दभाई पी. ठक्कर (शीतल मोटर्स प्रा.लि) के यहाँ पदार्पण

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२६ प.भ. गोकणभाई पटेल यहाँ पदार्पण कांकरिया

प.भ. कन्है.लाल शंकरलाल पटेल के यहाँ पदार्पण मणीनगर

श्री स्वामिनारायण जेतलपुर समाजवाडी के उदघाटन प्रसंग पर पदार्पण

प.भ. कृष्णकान्तभाई डाह्याभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण ।

२७-२८दुधई (कच्छ) तथा मोडपर (मूलीदेश ता. मोरबी) मंदिर प्रतिष्ठा अवसर पर पदार्पण

२९ राजपुर ता. कडी श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

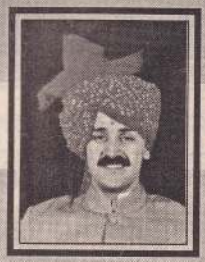
प.भ. कान्तिभाई पटेल (केनसास अमेरिकावाला) के यहाँ पदार्पण, मेमनगर

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा (ता. कडी) मूर्ति प्रतिष्ठा में पदार्पण

प.भ. अनिलभाई गजानंदभाई यादव के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, घोडासर

प.भ. अतुलकुमार मणीलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, अंबाबाडी

प.भ. पंकजभाई सोमाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण हीराबाडी सैजपुर बोघा



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मार्च - २००४

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतीज महा पूजाकी पूर्णाहुति पर पदार्पण

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर (ओढव) धुनि प्रसंग पर पदार्पण

५. श्री स्वामिनारायण गुरुकुल जयदेवपुरा में ६० घन्टे की धुनि में पदार्पण ।

७. षष्टि पूर्ति महोत्सव के प्रसंग पर विजयस्तंभ यात्रा एवं रंगोत्सव प. पू. बाललाल श्री के साथ गुजरात युनिवर्सीटी ग्राउन्ड

८. मेघाडीनगर मंदिर में पदार्पण

९. माणेकपुर (ता. माणसा) गाँव में पदार्पण

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर में धुनि की पूर्णाहुति हेतु पदार्पण

१३. देलवाडा (ता. माणसा) गाँव में पदार्पण

१४. जेतलपुर मंदिर पाटोत्सव अभिषेक में पदार्पण

प.भ. संजयभाई आर. सोनी के श्रीजी ज्वेलर्स शोरुम में पदार्पण सेटेलाईट

३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव, अन्नकूट आरती प्रसंग पर पदार्पण

एप्रिल - २००४

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव आपश्री की अध्यक्षता में सम्पन्न ।

वचनामृत में श्री नरनारायणदेव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने षष्टि पूर्ति महोत्सव में श्रीहरि के सभी आश्रितोको एक अमूल्य दिव्य भेट दी । श्रीहरि के अपर स्वरुपने स्वहस्तो से वचनामृत का दोहन कर समस्त सत्संग को अर्पण की इस पुस्तिका का जो संपूर्ण वांचन कर जीवन में उतारे तो सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव उसका अवश्य कल्याण करेगें उसमें कोई शंका नहीं है । इसीलिए प्यारे प्रत्येक हरिभक्तो जो यह दिव्य पुस्तिका न खरीदी हो वह अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र से प्राप्त करले तथा नित्य पठन तथा मनन कर उसकी पूजा करे ।

महंत स्वामी

"श्री १०८" क्यो ?

सं.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (वेदान्ताचार्य)

धार्मिक सामाजिक मान्यता प्रत्येक समाज में एवं संस्कृति में तथा देशवभााओं में नानविध देखते में मिलती है । उसमें कितनी परम्पराथें एवं मान्यतायें इतिहास एवं विज्ञान के साथ जुडी हुई है। कितनी तो सिद्धियों एवं श्रेष्ठ गुणों के आधार पर प्रचलित होती है । अंग्रेजो के समय में कुछ प्रचलित उपाधियों प्रसिद्ध है - जैसे

वेरोनेट, सर देसाई इत्यादि जिसे ऐसी उपाधियां मिली हैं। वह बडे गर्व के साथ अपने नाम के आगे लिखना भूलता नहीं था । यह हम सब जानते है। यही परंपरा अपनी भारतीय संस्कृति में है । यह वैदिक काल से चली आ रही है . यह वंशनुगढभी मान्य है । ऐसी उपाधि गौरवता के साथ नाम के आगे लगानें की परम्परा है । जैसे - चतुर्वेदी, गोषी, व्यास इत्यादि यह सभी उपाधि में ही आते है । जिसके पूर्वज चार वेदों के निष्णात हुए उन्हे चतुर्वेदी की उपाधि मिली और वह परम्परा आज भी बिधमान है ।

इस प्रकार की परम्परागत उपाधी में धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक अभिगम के साथ प्रचलित होती है। जिसमें "श्री" शब्द का उल्लेख किसी व्यक्ति के नाम से पूर्व लिखा जाता है यह परम्परा संस्कृत वेद काल से चला आ रहा है । इस कारण भी यही है जो शास्त्रो से ज्ञान हो सकता है ।

श्री शब्द का अर्थ संस्कृत शब्द कोष में इस प्रकार तर्णित है "श्री" अर्थात शोभा, समृद्धि, सदगुण, लक्ष्मी, सपत्ति तथा ऐश्वर्य इत्यादि का सबचक शब्द है । यथा

श्री वेष रचना शोभा भारती सरलद्रुपु ।
लक्ष्म्यां त्रिवर्ग सम्पत्तौ वेषोपकरणेमतौ ॥

इस प्रकार "विश्वप्रकाश" नामक संस्कृतकोष में निरतिशय शोऊाविष्ट ऐसे व्यक्ति के लिए शब्द प्रयोग किया गया है। शिष्टाचार ग्रन्थ में भी "श्री" शब्द के प्रयोग के लिए भी एसा कहा गया है । "अभियुक्त नामोच्चारणे श्री शब्द प्राकप्रयोज्.य इति शिष्टा:" जिस के लिए मान सन्मान की भावना जुडी हुई है। उनके नाम के आगे श्री शब्द रखना चाहिए ऐसा शिष्टाचार है। इस रुढ परंपरा से श्री शब्द कोई भी नाम के आगे उपयोगी है। उसे संख्या के परिप्रेक्ष्य में देखने में आह तो उसका निर्धारण भी शास्त्रों में कहने में आया है । इसी लिए "श्री" शब्द का प्रयोग कितनी संख्या में और जिसके लिए कितने "श्री" शब्द का उपयोग करना है यह विचार करें तो धर्मशास्त्रका विधान यहा है,

"विना दर्भश्च यत्कृत्यं यच्चदानं विनोदकम् ।
असंख्या यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥"

अर्था दर्भ (खुश) के विना यज्ञ, पानी के दान, संख्या के विना जो जप किया हो तो वह सब निष्फल हो जाता है। ऐसा धर्मशास्त्रका वचन प्रणामित करता है । परम्परा तथा शास्त्र के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि "श्री" शब्द का उपयोग विविध संख्या में कार्य के अनुसार तथा व्यक्ति विशेषयको सूचित करने के लिए है। जैसे "श्री१" विशेषत: मांगलिक कार्यों के लिए शारदापूजन, लक्ष्मीपूजन जैसे में प्रत्युक्त होता है । इसके अलावां विध्न हर्ता गणेशजीकी

पूजा में भी "श्री१" (सवा अर्थात् सवाया के साथ में श्री का उपयोग होता है। विवाहादि प्रसंगों में भी (श्री१) का उपयोग होता है। सांकेतिक भाषा के आधार पर कूटनीति (राजनीति) में भी "श्री" की संख्या कार्य पर देखने में मिलती है -

१. एक "श्री" माननीय व्यक्ति, पूज्य व्यक्ति अथवा बड़े के लिए प्रयुक्त होती है।
२. दो "श्रीश्री" "श्री२" ज्ञान गुरु के लिए, उपदेशक के लिए प्रयोगमें आती है।
३. तीन "श्री" "श्री" "श्री" अथाव "श्री३" इस प्रकार नौकर-चाकर, आश्रित, शिष्य, पोष्य या अनुयायी के लिए प्रयुक्त होता है।
४. चार श्री "श्रीश्रीश्रीश्री" अथवा "श्री४" का उपयोग शत्रु या दुष्ट के लिए है।
५. पांच श्री "श्रीश्रीश्रीश्रीश्री" अथवा "श्री५" पार्यश्री का प्रयोग समाज में प्रतिष्ठित व्यक्तिों के लिए या राज्य द्वारा पुरस्कृत व्यक्तियों के लिए होता है।

इस प्रकार एक से आरम्भ करके हजार के भी अधिक श्री का प्रयोग नामाविध हेतु या अर्थ से सम्बन्धित है। जिसमें १०८ श्री की संख्या का विमर्श करें तो १०८ श्री का प्रयोग विशेषरुप से धर्माचार्य, योगी पुरुष, महापुरुष तथा सिद्ध व्यक्तियों के लिए युक्त होता है। जैसे ऊपर १ से अनेक श्री का अर्थघटन किये वैसे ही भारतीय संविधान की कलम संख्या बड़ी होगी। परन्तु जिस क्रम का नंबर ४२० दिाय गया है उसमें जिस गुनाह का वर्णन है उसका ध्यान करके किसी को भी यह संख्या अच्छी नहीं लगती है। किसी कों यह कह दिया जाय कि यह व्यक्ति ४२० हैं तो तुरन्त उसका दुष्परिणाम दिखायी देगा। ऐसे ही शुभ कार्यों या विशिष्ट व्यक्ति के साथ प्रयुक्त १०८ संख्या में शुभ अर्थ छिपा हुआ है।

सर्वोपरि श्रीहरि द्वारा प्रस्थापित श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के आचार्य को भगवान का अपर स्वरुप माना जाता है। श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा लिखी गयई शिक्षापत्री में २१२ श्लोक है। जिसमें १०८ वा श्लोक "श्री कृष्ण" से स्पष्ट होता है कि यही परमात्मा भगवान है। इसलिए १०८ की संख्या सार्थक प्रतीत हो रही है। इसी प्रकार मुस्लिम समाज में ७८६ की संख्या का महत्व है जिसमें शुद्ध का विषय स्पष्ट होता है। इसी प्रकार अपने यहाँ भी समझना चाहिए।

भारतीय हिन्दू धर्म तथा संस्कृति में वेदो उच्च स्थान है। वेदों का कुल अध्याय मिलकर (कर्मकांड-ज्ञानकांड) १०८ हैं। इस माहात्म्य से युक्त जिसके साथ १०८ संख्या को जोड़ा जाय निश्चित ही उसका गौरव बढेगा। इसी लिए इस संख्या से युक्त "श्री" का प्रयोग किया जाता है।

भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म में वेदो के बाद अति महत्व का स्थान षट्शास्त्रों का है। जिसमें व्याकरण शास्त्र, धर्म शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, न्याय शास्त्र, दर्शन शास्त्र, इस छ शास्त्रों को समझने के लिए व्यासजीनेपुराणों की रचना की। जिस में १९ पुराण बतायें। श्रीमद् भगवद् गीता में भी १८ अध्याय है इस प्रकार १८ को षट् शास्त्रों का गुणन करें १८ X ६ तो १०८ होता है इस प्रमाण से भी जिस व्यक्ति विशेष के पीछे १९८ श्री का उल्लेख किया जाय तो उसका महत्व बढ़ जाता है। जप की संख्या भी १०८ को होती है जो सभी हिन्दू शास्त्र-हिन्दू धर्म के शिवाय भी यही संख्या प्रयुक्त होती है। १०८ की संख्या का महत्व जानने के लिए अंक शास्त्रमें भी ९ का अंक पूर्ण है गुणाकार भागाकार जैसे भी करें लेकिन अंत में ९ ही आयेगा। जैसे ९X२=१८, १+८=९, ९X३=२७, २+७=९, ९X४=३६, ३+६=९, ९X९=८१. ८+१=९ इस प्रकार नव का अंक पूर्णांक ही है।

समग्र ब्रह्मांड में सतत भ्रमण करने वाले ९ ग्रह ही हैं। तथा उन ग्रहों की भ्रमण कक्षा जिसे हम राशि कहते है वे १२ हैं। १२ राशी में नव ग्रहों का भ्रमण होता है। जिसके गति का असर मनुष्य के जीवन पर पडता है। भारतीय सांस्कृतिक के अलावा अन्यने भी इसे स्वीकार किया है। नवो ग्रह १२ राशियों में भ्रमण करते हुए मनुष्य के जीवन में असर करते है इसलिए १२X९=१०८, अर्थात् राशी-ग्रह दोनों के प्रबाव को जिसने जीत लिया हो इस प्रभाव शाली सिद्ध व्यक्ति के लिए शोभायुक्त श्री को १०८ प्रकार से उपा दी जाती है।

आकाश में ग्रह तथा राशी की तरह पृथ्वी पर सर्वत्र प्राणीमात्र पर शक्ति शाली प्रभाव डालने २७ नक्षथ्र है जिनमें ४ चरण होते है २७X४=१०८ होता है इन नक्षत्रों की कुल चरण के साथ १०८ संख्या होती है। जैसे राशी-ग्रह मनुष्य को प्रभावित करते है ऐसे ही नक्षत्र भी कहते है। उन से जो न प्रभावित हो अर्थात् राशी ग्रह नक्षत्र के प्रभा का अति क्रमण जो किया हो वही १०८ संख्या से अलंकृत हो सकता है।

भारतीय दर्शन शास्त्र अर्थात् तत्वज्ञान द्वारा यह प्रमाणित होता है कि "एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" ब्रह्म अर्थात् ईस्वर परमातमा एक ही है। सभी ने इसे स्वीकार्य किया है। उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिए माया रुपी अन्धकार को हटाना आवश्यक है। अन्धकार शून्य है उसे दूर करने के लिए ज्ञान आवश्यक है तभी परमात्मा मिलेंगे। व्यक्ति यदि ज्ञान प्राप्त करके शून्य को पार कर जय तो परमात्मा को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार जिसने अष्टावरण को भेद दिया है उस ज्ञानी महापुरुष को जगत समक्ष विशिष्ट रुप से श्री १०८ की उपमा दी जाती है। इसका मतलब यह कि १ ईश्वर ० माया ८ आवरण इसके लिए जिसा जीवन समर्पित है उस महापुरुष के लिए १०८ की संख्या प्रयुक्त होती है।

वैदिक ऋषि मुनियों ने मनुष्य के जीवन की १०० वर्ष की कल्पना की है जैसे - "जीवेम शरद् शतम्"। इन्ही उपनिषदों में आता हैं कि जीव मात्र को आठ प्रकार का भय सताता है। छांदोग्योपनिषद में कहा गया है -

अपहतपाप्मा विजरो
विमृत्युर्विशोकोविजित्योऽपिपास
सत्यकामः सत्य संकल्पः ॥

आढ प्रकार के जिन्हों ने भय को और सौ वर्ष की आयु के भय को जो आत्मसात् कर लिया है, ऐसे ज्ञानी निर्मल स्वास्थ्यवाले व्यक्ति के लिए "१०८श्री" की उपमा से अलंकृत किया जैता है। अथवा जो १०० वर्ष की आयुं में आढो विज्ञाओं में अपनी कीर्ति को फैलाई हो उसे "१०८श्री" अलंकृत किया जाता है।

भारतीय शास्त्रों में अष्टसिद्धि की चर्चा होती है, जिसने "जीवेम शरदः शतम्" के साथ आठ सिद्धियों को वस में कर लिया है उसे "१०८श्री" लगाया जाता है।

इस प्रकार अनेक कारणो तता प्रमाणो जिसमें ऐसे शास्त्रों द्वारा "१०८श्री" का अनुलेखन आवश्यक है। योगशास्त्र के प्रणेता महामुनि पतञ्जलि हजारों वर्ष पूर्व मनुष्य के शरीर का सूक्ष्मातिसूक्ष्म वैज्ञानिक आलेखन किया है। मानव शरीर में कितनी हड्डियां है, कितनी ना डियां है, इसका संचालन कौन करता है, पांच प्राण, षड्डर्मि, चौवीस तत्प तथा पचीसवां जीव, सम्पूर्ण शरीरका संचालन करतेहै। इस शरीर को स्थिर रखने के लियए ७२ हजार नाडियां हैं। इस प्रकार ५+६+२४+१=३६ ३६+७२=१०८ नाडी प्राण जिसके हाथ में है ऐसे समर्थ को यह "श्री १०८" का विशेषम लगाया जाता है। आज का वैज्ञानिक जो अन्वेषण किया है वह हजारों वर्ष पूर्व ऋषि मुनियों ने किया था। खगोल, भूगोल की गणित, ग्रहनक्षत्र तारागति की गणित सप्रमाणिक है। ऐसा ही प्रणाम योगप्रवर्तक महामुनि ने भी दिया है। जैसे - पुच्छवय का स्वस्थ मनुष्य

चौवीस घंट से च्छवासोच्छवास की क्रिया २३ हजार से २६ हजार तक करता है। जब यह प्रक्रिया चलती हो तब जीव सतत जागृत होकर चेतना पूर्वक ७२ हजार नाडियों द्वारा परिभ्रमण करता है। उसमें कितनी नाडियां अमृत का वहन करती है। कितनी नाडिया रक्त वाहिनी हैं। कितनी मल वाहिनी हैं। कार्यपरक नाडियों को सत्वगुण, वओगुण, तमोगुणात्मक कहा जै सकता है। इसमें भी मुख्य तीन नाडियां है। इडा, पिंगला सुबुम्ना, ये तीन नाडियां ही सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हैं। सुबुम्ना सत्वगुण प्रधान नाड़ी है। जो अमृत का वहन करती है। ईडा तथा पिंगला, रजोगुण एवं तमोगुणी होने से रक्त एवं मल का वहन करती है। पुषुम्ना को ईडा तथा पिंगला दोनो ने घेर रखा है। जब च्छवासोच्छावश की क्रिया होती है तब जीव सतत परिभ्रमण करता है जिससे ईडा, पिंगला, सुबुम्ना के अपर से जाना पड़ता है। परिणामत, जीव की नाना विध स्थिति बताई गयी है। महामुनि पतंजलि ने अष्टांगयोग सिद्ध करने के लिए आठ अंगो पर सिद्धि होता आवश्यक बताया है - १. यम, २. नियम, ३. आसन, ४. प्राणायम, ५. प्रत्याहार, ६. ध्यान, ७. धारणा, ८. समाधि।

इनको क्रमशः सिद्ध करके अन्त में लक्ष्य परमात्मा का साक्षात्कार होता सम्भव है। आयुपर्यन्त सौ वर्ष तक आठ अंगो की साधना करने वाले व्यक्ति के लिए भी "श्री १०८" का शुभयोग युक्त विशेषण वाला है। ऐसा जानना चाहिए।

साष्टांग प्रणाम

पदश्यां कराभ्यां जानुभ्यांमुरसा
शिरसा दृशा।
मनसा वचसा चेति प्रणामोऽष्टांग
ईरितः॥

अष्टांग ब्रह्मचर्मपालन पूर्वक सौ वर्ष पर्यन्त निर्मल स्वस्थ जीवन विताने वाले, मोक्षप्राप्ति में दृद संकल्प वाले व्यक्ति के लिए "श्री १०८" पमा लगायी जाती है।

श्रवणं कीर्तन केलिः प्रेक्षँ
गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसावश्च
क्रियानिर्वार्तिरेवच॥
एतन्मैपुनमष्टांगं प्रवदन्ति मनीषिणः।
विपरीतं ब्रह्मचर्ममेतदेवाष्ट लणम्॥

अग्निपुराण में इस प्रकार ब्रह्मचर्म पालने का विधान बनाताय गया है।

योग शास्त्र के दिव्य सिद्धान्तानुसार जीव सदा सात्विकता में रहे इसी शुभि भावना से अष्टांग योग सिद्ध करके जीव सदा सुबुम्ना नर्डी में ही भ्रमण करे। इसके लिए प्रत्येक श्वांस कहाली - जाती है इसकी गणित की गयी है। एक दिन में २३ से २६ हजार श्वांस लेना पड़ता है। मनुष्य मात्र को जीने के लिए शुद्ध सात्विक सुबुम्ना नाडी अमृत का वहन करने वाली का आश्रय लेना चाहिए। जीव केवल १२० श्वांस लेता है। ७२ हजार नाडियां ईडा विगामा के साथ च्छवासोच्छवास क्रिया करती है। योगी पुरुष प्राणायाम को सिद्ध करके श्वास का नियमन करके सुषुम्ना नाडी में जवजीव हो उसी समय ऐसा दृढ निर्णय करके श्वांस की गति को रोक रखता है उसमें भी १२० श्वांस में से १२ श्वांस संधी का है इसे योगी लोग तमोगुणात्मक मान कर त्याग करते है। अपशिष्ट १०८ श्वांस को ग्रहण करते हैं। तब पूर्णसिद्धयोगी कहे जाते है। ऐसे पूर्ण सिद्धयोगी को १०८ की शोभा से युक्त किया जाता है। परिणामतः "श्री १०८" जिसके पूर्वलगा हो उसे समर्थ सिद्ध तपस्वी, योगी, ज्ञानी महापुरुष का यथार्थ ज्ञान होता है।

इस प्रकार अनेक कारणों प्रमाणों की ध्यान में रकर भगवान श्री स्वामिनारायण के साक्षात् पुत्र भगवान के अपर स्वरुप परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के लिए १०८ की उपमा से अलंकृत किया जाता है। जिससे स्वामिनारायण के सत्संगी अलौकिकता को जानते है। तथा श्रीजी महाराज के सिद्धान्तानुसार योग्य है और सार्थक भी है।



प.पू.ध.घु. आचार्य महाराज के षष्ठी पूर्ति समारोह प्रसंग पर

"श्री स्वामिनारायण संप्रदाय और धर्मवंशी आचार्यपद की महत्ता की एक झलक"

– हरिकेशव शास्त्री

भारत के कई राज्यों में तथा दुनियाभर के अनेक देशो में लाखो लोग जिस नाम पर उन्नत मस्तक से पवित्र आचार और पवित्र आचरण के साथ गौरव से जीवन व्यतीत कर रहें है उस विश्व विख्यात स्वामिनारायण संप्रदाय के विषय में और उनके स्थापक के विषय में तथा इस संप्रदाय के आचार्यश्री के विषय में संक्षेप में परंतु रसप्रद जानकारी लेतें है।

जगत के श्रेष्ठ इतिहासकार भारतीय संस्कृति की मुक्त मन से प्रशंसा करतें हैं। विश्व की अनेक संस्कृतिओं के आगे यह संस्कृति अखंडित और अबाधित रही है। उसका कारण है धर्म धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण है। अनेक महापुरुष, आचार्य और अवतारो ने मानव इतिहास से लेकर आज तक उसका पूर्ण रक्षण किया है।

भगवान श्री कृष्णने तो प्रसिद्ध किया हैं कि जब जब धर्म का क्षय होगा तब तब मैं जन्म धारण करके धर्म का रक्षण करुँगा। विक्रम की उन्नीसवी सदी के प्रारंभ में देश में भिन्न भिन्न झंझावात उत्पन्न हुए थे। राजकीय और सामाजिक क्षेत्रों में अशांतिकारक अनेक उपद्रव होने लगे। राजा और प्रजा अपने धर्म को भूल गये (मनुष्य धर्म को भूलने लगे। हिंसा अनीति, दंभ, धोखा आदि का तो जैसे एकचक्रीय शासन स्थापित हो गया।

शांतिप्रिय प्रजा तो त्राहिमाम् पुंकारने लगी। इस तरह विकराल कलिकाल के पंजो में आकर लुप्त हो रही धार्मिकता को बचाने उस समय परमात्मा ने अवतार धारण किया। और स्वामिनारायण के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उत्तर भारत में प्रसिद्धतीर्थ अयोध्या के पास छपैया नाम का छोटा सा गाँव है। वहाँ हरिप्रसाद और प्रेमवती नामक सररीया बाह्मण दंपती रहते थे। धर्म और भक्ति के साक्षात् अवतार जैसे इस दंपती कोही भगवानने अपने माता-पिता बनाए थे। विक्रम संवत १८३७ चैत्र सुद-९ की सोमवार को (ई.स. १७८६ दूसरी अप्रिल) रात दस बजे अजन्मा ऐसे परमात्मा ने उनके द्वारा जन्मधारण किया। प्रभु का बचपन का नाम था घनश्याम। घनश्याम के जन्म से सभी के हृदय में आनंद हुआ था। श्री घनश्याम को एक बडे और एक छोटे इस तरह से दो भाई थे।

श्री घनश्याम का विद्याभ्यास सामान्यतः उनके पिता के पास पूर्ण हुआ था। सामान्य अभ्यास के बाद वेदशास्त्रो के अभ्यास में भी निपुण बने। श्री घनश्याम का बाल्यजीवन ही प्रेरणा, उत्साही और प्रशुद्धमय था। आकृति देखते ही लगता की वह कोई सामान्य मानव नहीं है। उनके जीवन द्वारा अनेको के कार्य सिद्ध होगें। पिता हरिप्रसादने अपनी मृत्यु के समय अपने अन्य पुत्रो को बुलाकर यह बात कही थी की यह घनश्याम घर में बैठे रहें वैसे नहीं है। वह समग्र

पृथ्वी को ही अपना कुटुंब बनाऐगे ।

श्री घनश्याम के ग्यारवे वर्ष के दौरान माता और पिता छःमास के अंत में शरीर छोड कर स्वधाम चले गए । बाद में श्री घनश्याम ने गृहत्याग का मन में निश्चय किया । भाई-भाभी तथा अन्य संबंधी जनो को इस विषय में कोई भी जानकारी नहीं दी । वस्त्र अलंकर, जीवन उपयोगी वस्तु अरे चरणों की पादुकाऐ भी त्याग कर खुले पैरों से उत्तर दिशा में चलने लगे ।

घनश्याम का गृहत्याग बुद्ध के महानिष्क्रमण से भी ज्यादा महत्व रखता है । इस गृहत्याग के पीछे केवल वैराग्य की शुष्क भावनाए ही नहीं थी परंतु उसके साथ तो जन हितकारी सर्वजीव हितावह परोपकारी भावनाए थी ।

सबसे पहले हिमालय की यात्रा की । वनवास के दौरान वह श्री नीलकंठ के नाम से प्रसिध्ध हुए । मुक्तिनाथ में चार महीने तक एक पैर पर तीव्र तपश्चर्या की । वहॉ से आदिवाराह सीरपुर में चातुर्मास निवास करके वहॉ से बालवाकुंड होकर गंगासागर के संगम पर गए और वहॉ से कपिलाश्रम में जाकर एक महिने रह कर जगन्नाथपुरी गए ।

श्री नीलकंठ की ये यात्राए भी निरर्थक न थी । अपने अवतार के कई हेतुओं की सिद्धि तो इन यात्राओं से ही हो जाती थी । तपोमय आचरण से उन्होंने तपस्वियों को धर्म बताए और कहीं कहीं तो मांत्रिक तांत्रिको के चमत्कारों के द्वारा भोली प्रजा के सिर पर दमन चलानेवालों के साथ वादविवाद होता और उसमें श्री नीलकंठ की विजय होती । जगन्नाथपुरी में भी ऐसा ही हुआ । व्यसन विलास के कीचड में खडबदता और वैरागी जैसे नामो को धारण करनेवाले हजारो दंभीमों को श्री नीलकंठ का निस्वार्थी उपदेश और पवित्र जीवन खूंचने लगा । पर निर्भय मनवाले नीलकंठवर्णीने सत्य, त्याग और तप का ख्याल देने के लिए कितने ही महिनो तक वहॉ निवास करके समाज को सत्य और साधुता कैसी होती है उसका ख्याल करवाया ।

वहॉ से आदिकूर्म, वेंकेटाद्रि, (तिरुपति बालाजी) शीवकांची, विष्णुकांची, श्रीरंगक्षेत्र, रामेश्वर, कन्याकुमारी, पद्मनाभ जनार्दन आदि दक्षिण भारत की यात्रा करके पंढरपुर पधारे । यहॉ दो महिने विश्रांति लेकर वहॉ से त्र्यंबक की यात्रा करके तापी और नर्मदा के किनारे पर विचरण करके भालदेश में घूम कर सौराष्ट्र में प्रवेश किया । वि.स. १८५६ श्रावण वदी छठ्ठ (रांधण छठ्ठ) के दिन लोज गॉव में पधारे । वहॉ रामानंद स्वामी के शिष्य मुक्तानंदजी का मिलाप हुआ । पवित्र और निस्वार्थी संत को देखकर श्री नीलकंठवर्णी वहीं रुक गए और थोंडे महिने के बाद रामानंदस्वामी को मिले ।

मुमुक्षुओ के उपदेश के लिए श्री नीलकंठ रामानंद स्वामीको गुरु के रुप में स्वीकार किया । और दीक्षा ली । तब से वह सहजानंदस्वामी के नामसे प्रसिद्ध हुए । रामानंद स्वामी को मिलने से पहले से ही रामानंद स्वामी ने अपने शिष्योमे प्रसिद्ध कर दिया था कि, "मैं तो डुग डुगी बजाता हूं, वेष धारण करनेलाले तो अब आ रहें है ।" इस गूढार्थी वाक्यसे कई सुज्ञ तुरंत समज गए थे ।

कुछ समय के बाद सहजानंदस्वामी संप्रदाय की जवाबदारी स्वीकार किये । तब उस समय अपने गुरु के पास मांगे हुए दो वरदान ही उनका सर्वोपरित्व भाबित कर देंते है, "भगवान के किसी भी भक्त को प्रारम्भ होनेवाली पीडा मुझ को हो और वह भक्त सुखी रहे, तथा प्रभु के भक्त को अन्न वस्त्र का दारिद्रय दुःख हो तो वह नाश योग्य बने और वह दुःख मुझे मिले ।"

इन दो वरदानो के पीछे करुणा की भावना ज्यादा भरी हुई थी । स्वामिनारायण भगवान का समाज कल्याण कार्य अबसे व्यवस्थित रुप से शरु हुआ । असत्य और दंभ के सदैव सहवास से अंधश्रद्धालु बनी हुई प्रजा को जागृत करने के लिए काषाम्बरधारी एक धर्मसेना (संत मंडल) तैयार किया । उन संतोने गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ तथा अन्य प्रांतो में गॉव - गॉव घूम कर घर घर पहुंच कर आचरण और उपदेश द्वारा समाज को सत्य, धर्म, नीति और

पवित्रता का ज्ञान दिया ।

स्वामिनारायण भगवानने भी अहिंसक यज्ञो द्वारा लाखो मानवो को सत्य, धर्म और मानवजीवन का मूलभूत सिद्धांत समझाया । और अन्नक्षेत्रो, पूर्तकर्मो और गरीबों को दान आदि लोकोपकार कार्यो को करके दो दशको में तो लोक हृदय के स्वामी बन गए ।

और अपने अलौकिक योग ऐश्वर्य द्वारा हजारो मुमुक्षुओं को समाधि कराकर उनके इष्टदेवताओं के दर्शन करवाकर अपना आश्रित बनाया ।

स्वामिनारायण भगवानने जिस तरह लोकहित के कार्य, समाज सुधारणा की है उसका विचार भी करें तो उसमें भी दिव्यता दीखे बिना नहीं रह शकती । धर्मिक, सांप्रदायिक व्यवस्थाने तो सहजानंद स्वामी की अदभुत करामत है. जो अद्यापि पर्यंत संप्रदाय में देख शकते है ।

सहजानंदस्वामी के आश्रित होनेवाले को दारु, मांस, चोरी, व्यभिचार छोडना पडता । इस प्रतिज्ञा को लेने के बाद ही उसको कंठी बांधी जाती । श्री हरि के आश्रितो को सत्संगी कहाजाता है । सत्संगी इस लिए भगवान शास्त्र और सत पुरुषो का संगी ।

स्वामिनारायण भगवानने पच्चीस वर्ष के बीच में तो गुजरात की कायापलट कर दी । हाथ में धनुष - बाण या तलवार लिए बिना घर के बाहर पैर न रखनेवालेने हथियार को न छूने का नियम लिया । चोरोंने चोरी छोडी । मांसाहारिओने मांस का भक्षण छोडा । व्यसनिओने व्यसन छोडा, निर्दयीको दयावान बनाया, विलासिओने विलास छोडकर वैराग्य लिया, समाज को कंटकरुप बनाने वाले मनुष्य सच्चे समाज सेवक बने,



कोईभी ज्ञाति का मनुष्य सत्संगी बन शकता । और फेल, फतुर, व्यसनो को छोडकर सुख पूर्वक जी शकता । समाज में एक विचार स्थापित हो गया था कि सहजानंद स्वामी के आश्रित दुःखी होते ही नहीं है । स्वामिनारायण भगवान का समाज सुधारणा रुप इस पवित्र यज्ञ में पत्थर फेकलेवालो की भी खोट नहीं थी । चारो तरफ से कई विरोध झंझावत खडे हुए थे । उसमें मुख्य ढोंगी, पाखंडी, तथा अनेक वेशधारी भी थे । उन्होंने इस पवित्र कार्य में भयंकर उपद्रव किया था । और संतो को अनेक विविध उपद्रवो को करने में भी कुछ बाकी न रखा । पर त्याग, सहनशक्ति और क्षमा की प्रतिकृति जैसे संतोने उस तरफ ध्यान दिए बिना अपना कार्य जारी रखा ।

तीन दशको में तो जैसे युगपरिवर्तन हो गया । समाज मे से शंकाए दूर हुई, जडता नाबूद हुई । अंधश्रद्धा नामशेष हो गई । समाज सत्य को जानने लगा । असत्य को फेंक देने के लिए तत्पर हुआ । समाज में नवजागृति आई । सहजानंद स्वामी के संत सत्संगीओ का सर्वत्र सन्मान होने लगा । उस समय अपने देश में अपने राजकीय नीब को मजबूत करने के लिए अंग्रेजो तथा उनके अनेक प्रवासिओं ने सहजानंद स्वामी के कार्यो को श्रद्धापूर्वक स्वीकार्य किया । जिसके दो दृष्टांत यहाँ प्रस्तुत है ।

"सहजानंदजी की प्रतिभा हिन्दू धर्म के शुद्ध स्वरुप में पुनः प्रतिष्ठा करने में ही पूरी नहीं होती । उस जमाने में अनेक दुराचार और दूसरे अनिष्ट दूर करने में और जो लोग भूख से बिलखतें, भोजन के लिए चोरी और लूंटपाट द्वारा आजीविका पाते थे । ऐसे लोगो के, सच्चे मार्ग पर वापस लाने में भी उन्हें काफी सफलता मिली । उनकी सफलता को गुजरात में जगह - जगह पर देख सकते है । वे इस तरह सुधारक के रुप में भी बडी प्रतिष्ठा प्राप्त किए थे ।

हेनी ज्योर्ज बर्जेस
(इन्डीयन ओन्टीकवेरओ में से)
इ.स. १८७३

इसी तरह हेनी ज्योर्ज ब्रीग्स अपने पुस्तक में लिख ते है कि -

"जिस समय ब्रह्म के अनुवादिओं में वर्षो तक अज्ञान और धर्मान्ध की वजह से अंधकार और अहंकार छाया था । उस समय एक अद्‌भुत व्यक्ति का प्रादुर्भाव हुआ । प्रकृति से उनकी मुखमुद्रा सौम्य थी । आपत्ति का नाश कर शके तथा संपत्ति मोहित न कर शके वैसा हिंमतवाला और साहसिक उनका हृदय था । हिन्दू धर्म के सिद्धांतो में परस्पर द्वेष और धर्मान्ध जैसे लक्षणो के कारण धर्म का उपहास हो रहा था । यह सब उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से दूर किया । आर्य जनता इन सब कामो के लिए उनकी ऋणी है ।"

(सीटीझ ओफ गुजरात)

उस समय महाप्रभुने विचार किया कि उन्होने प्रारंभ किए इस मोक्ष का सदाव्रत, धर्मप्रचार और समाजसेवा का कार्य सदैव चालु रहना चाहिए और इसिलिए उन्होंने खुद तीन युक्तियोंमें शुद्ध गुरुपरंपरा स्थापित किया और तीसरी युक्ति थी सत्शास्त्रो की रचना करनी ।

अपने इन तीन उपायों का अमल करने का प्रारंभ अहमदाबाद से हुआ । सबसे पहले अहमदाबाद में तीन शिखरोवाला मंदिर बनवाया । उसके बाद भूज, मूली, वडताल, जेतलपुर, धोलेरा, धोलका, जूनागढ और गढपुर इस तरह नव महा मंदिरो का निर्माण करके स्व हस्त से उनमें मूर्तियॉ स्थापित करके भक्ति उपासना का पवित्र प्रवाह बहाया ।

अनंत जीवो के अविरत उद्धार के लिए दूसरे उपाय में अचार्य महाराज की स्थापना का विचार महाप्रभुने किया । जिनकी महत्ता के बारे में अब हम सोचेंगे ।

मंदिर बनाकर उसमें देवस्थापन का कार्य चालु था । बाद में मंदिरो की देख भाल रखने के लिए और हजारो संतो और लाखो गृहस्थ अनुयायिओं के धर्म की रक्षा करने, विशाल सत्संग की रक्षा के लिए, मोक्ष के लिए दूसरे उपाय में गुरुपद की स्थापना की श्री हरि को जरुरत हुई ।

दीर्घ दृष्टिवाले आचार्य स्थापन का विचार सबसे पहले जेतलपुर के पास के असलाली गॉव की सभा में आया । प्रभुने अपना यह विचार सबसे पहले अपने आश्रितजनो के समक्ष रखा । सभी खुश हुए । बाद में जेतलपुर की सभा में अचार्य स्थापन के लिए निश्चय किया गया । बाद में घूमते - घूमते वडताल मंदिर पधारे तब वडताल में १८८२ का.सु. एकादशी के दिन आचार्य स्थापन को मूर्त स्वरुप दिया गया ।

आचार्य स्थापन पूर्व धर्मकुल की पसंदगी के पीछे भी अलौकिक हेतु और अलौकिक कारण है । मुख्य हेतु तो शिक्षापत्रीमें स्वहस्त द्वारा धर्म रक्षण हेतवे इस श्लोक से निरुपित है । और विशेष में

"अमे आचार जथी कल्याण रे,
बारो सहु जीवननुं सुजाण रे,
मानो मोक्षनो छेल्लो उपाय रे,
अेह उपरांत नथी कांय रे.
"धर्मकुलने जे अनुसरे,
त्यागी गृही नर कोई नार,
परिश्रम विना ते पामशे,
अपार भवनो पार"

इस तरह अपने सभी आश्रितो का आत्यंतिक कल्याण हो यही आचार्य स्थापन का हेतु था । और पसंदगी के रहस्य कोभी निष्कुलानंद स्वामीके शब्दों में ही देखतें है -

"काम कर्युं छे अेह सारु रे,
मन मान्यु छे बहु अमारुं रे
कां जे अे छे धर्मनुं कुल रे,
माटे अे वाननुं उगडु,
मूल के जेवुं अमारुं कुल मानसे रे,
तेने तुल्य बीजु केम धारो रे
माटे विचारीने बात कीधी रे,
घणुं समजीने गादी दीधी रे."

स्वामिनारायण भगवान कहतें है कि जीवो के कल्याण के लिए हमने यह बहुत ही अच्छा कार्य किया है । धर्मकुल में गादी स्थापन करनें से हमारा मन खुश हुआ है । मतलब की हमें बहुत संतोष हुआ है । क्योंकि धर्म के कुल का मूत बहुत गहरा है । कोई लाख उपाय करें तो भी धर्म के कुल के समकक्ष कहॉ से हो सकता है ! इस लिए बहुत विचारकर धोडा समझकर धर्मकुल में गादी स्थापी है । युग के युग बीतते है फिरभी इस गादी पर धर्मवंशी ही बैठ सकता है, गुण, तप करके भी चाहे कोई भी महान ही क्यों न हो फिरभी धर्मवंशी के अलावा

कोई भी गादी के योग्य नहीं है ।

धर्मकु ल के प्रति महाप्रभु का कैसा अटल विश्वास है कि यह हमारा कुल है । यह धर्मवंशी है । अधर्म मार्ग में कभी भी पैर नहीं रखेंगे । सदाकाल धर्म में ही रहेंगे । और सभी गृही त्यागी आश्रितजनो को धर्म में रखेंगें ।

"धर्मवंशी ते धर्ममा रहेशे रे,
अधर्म बातमां पग न देशे रे
धर्म पाणशे ने पडावशे रे,
अधर्मनी रीत टलावशे रे."

इस वचन पर से फलित होता है कि महाराज का आग्रह धर्म पालना और ऐसे धर्मवंशी की पनाह में जो आता है उसके कल्याण में क्या कमी हो सकती है । अपने आत्म कल्याण के लिए उन्हें कोई परिश्रम करने की जरुरत ही नहीं है ।

"धर्मकुलने जे अनुसरे,
त्यागी गृही नर कोई नार
परिश्रम विना ते पामशे,
अपार भवनो पार"

इस पद की गरिमा को रक्षित करनेवाले महाप्रभुने उत्तम नियम भी बनाए है । प्रभु कहतें है कि हमारे इस धर्मवंशी पद पर संस्थापित आचार्य दूसरो जैसे नहीं है कि जिसकी सेवा करते श्रद्धा तूट जाए ! हमारे आचार्य तो निस्वार्थी है । शिष्य अपनी इच्छा से धन-धान्य अर्पण करेंगे तो संतोष से उनका स्वीकार्य करके उनका हित ही चाहेंगे ।

समीप संबंध के अलावा किसी भी स्त्री के साथ बातचीत नहीं करेंगे, किसी पर दोषभाव नहीं रखेंगे, किसी पर भी कलंक नहीं लगाएगे, किसीका भी बनेंगे । कल, छल, कपट, दगा, इर्ष्या, आदि से सदैव दूर रहेंगे । ऐसे सद्‌गुणशालीन धर्मकुल को जानकार हमने इस दिव्य पद को अधिकार दिया है ।

ऐसे दिव्यपद पर बिराजमान आचार्यश्री के आश्रित रह कर भजन करने से किसका कल्याण नहीं होता ? सब का होता ही है,

"अेह आचारथी ज अपार रे,
बहु जीवोना थाशे उद्धार रे."

इस धर्म पद पर बिराजमान आचार्यश्रीके अपने नियम, कर्तव्य, अधिकार , फर्ज के विषय में स्पष्टता के लिए श्रीहरिने एक कायदा बनाया । "देश विभाग के लेख " इस नाम से प्रसिद्ध किया । जिसका सारांश निष्कुलानंद स्वामीने इस तरह से बयान किया है -

"स्थाप्या दत्तपुत्र पोते स्थिर रे,
अवध प्रसादने रघुवीर रे
तेने आपे कर्या आचारज रे,
करया बहु जीवना कारज रे,
आप्या वेची मंदिरने देश रे,
जैसा कोईने न थाय क्लेश रे
साधु सत्संगीना गुरु किधा रे,
देश उत्तर दक्षिण वेची दीध्धा रे."

इसी तरह धर्मवंशी आचार्यपद की महिमा अपरंपार है । क्योंकि श्रीहरि संस्थापित इस पद के प्रताप से यह संप्रदाय दिन दूने आगे बढताही जा रहा है । इस संप्रदाय की कोई भाषा , वर्ण, समाज, देश, विदेश, आदि जैसे कोइ भी बादाए अवरोधरुप नहीं हुई । संप्रदाय की एकता, एकजुटना, संप और संगठ्न रक्षित है । और यह सारा प्रताप श्रीहरि संस्थापित धर्मवंशी आचार्यपद का है । इस दिव्य पद द्वारा स्वयं श्रीहरि ही सभी मुमुक्षुआत्माओं का कार्य कर रहे है । सभी छोटेबडे आश्रितोको इस बात की याद रखनी ही चाहिए । इस लिए प्रभु दबाण पूर्वक कह कहतें है कि -

माटे सहु धर्मकुल मानजो,
सहु करज्यो ऐनी सेव
अन्य जन जेवा ऐह नहि,
ए छे जणजो मोटा देव
एक ब्राह्मणने जाजो भक्त अति,
वली कावे अमारु कुल
ऐने सेवतां सौ जन तमो,
पामशो सुख अतुल."

श्रीजी महाराज संस्थापित धर्मवंशीपद की गरिमा, गौरव को रक्षित करने आदि हतु से आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज से आरंभीत करके आज तक के सभी आचार्य महाराजश्री सतत प्रव्रशील रहें हों ऐसा उनके जीवन और कार्य में से जानने को मिलता है ।

परंतु नदी का बहाव और समय की करवट तो संदैव बदलती रहती है । सभी पूर्वाचार्योंने अपने समय और संजोगो में सभी मुसीबतों का सामना करना ही पडा है ।

पर आज समय बदल चुका है । वर्तमान छठ्ठे आचार्य गादीपति श्री

नरनारायणदेव पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने अनेक विविध मुसीबतोका सामना किया है । उ.दा. पहले के समय में कोई को पिक्चर देखना हो तो किस शो में जाना हैं वह समय पहले से लेना पडता था । टिकिट लेने के लिए कतार में खडा रहना पडता था । जबकि आज सभी सिनेमा सभी के घरो में ही आ गए है । ऐसे घरो में नई पिढीयों के धर्म - सत्संग -संस्कारो को रक्षित करने के लिए धर्मगुरु को सदैव सजग रहना पडता है । धर्मगुरु की जागृतता सेही नई पीढी में सत्संग, संस्कार, मानवता, सद्भाव जैसे सद्गुण आदि का विकास हो । इसि लिए प. पू. आचार्यश्रीने प्रायमरी स्कूल, हाईस्कूल, कालेज, जैसी शिक्षण संस्थाए और इस्पिताल की स्थापना की है ।

इसके अलावा प. पू. आचार्य महाराजश्री कभी भी शांति से बैठे नहीं रहते । छोटे बडे का ख्याल लिए बिना ही वे कोई भी पूर्वशरत के बिना घरोघर पधरामणी के लिए पधारतें हैं ।

और सभी पर समान अनुकंपा बरसातें है, वह आचार्य महाराजश्री के कार्यकाल में देश और दुनिया में स्वामिनारायण भगवान के असंख्य मंदिर बनवाये गये परंतु आफ्रिका, युरोप, इग्लेन्ड, अमेरिका के घरो में राज्यो में स्वामिनारायण भगवान की भक्ति उपासना केन्द्र जैसे मंदिर बनवाए ।

इसके अलावा पीछले बीस वर्षोमें श्री नरनारायणदेव पीठस्थान की तरफ से आचार्य महाराजश्री की आज्ञासे गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी में पिछले चालीस वर्षो से श्री स्वामिनारायण मासिक द्वारा सत्संग साहित्य की गंगा बह रही है वह भी अजोड है । ऐसी साहित्य सेवा पीछले दोसो वर्षो में भी नहीं हो सकी है । पूज्य पाद आचार्य महाराजश्रीने धर्मवंशी आचार्यपदने शतशः सहस्त्रशः प्रकाशित किया है ।

इस तरह प. पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने सेवाका अजोड और अनोखा कार्य किया है । जो अद्धितीय और अजरामर है ।

जीवो के मोक्ष के लिए भी प्रभुनें तीसरा उपायभी सोचां जो संक्षेप में देखतें है ।

तीसरे उपाय में सत्शास्त्रो की रचना करने की आज्ञा विद्वानो और संतो को की । अतः संतोने उपनिषद पर भाष्य तथा व्याससूत्र और भगवद् गीता पर संप्रादायिक सिद्धांत द्वारा भाष्य लिखे तथा सत्संगिभूषण आदि अनेक संस्कृत ग्रंथो को तैयार किया ।

श्रीहरि के जीवनचरित्र, सहित संप्रदाय के सिद्धांत, मान्यता, आज्ञा, धर्म, ज्ञान, वैराग्य प्रतिपादक सर्वमान्य महाग्रंथ सत्संगिजीवन शतानंद स्वामीने तैयार किया ।

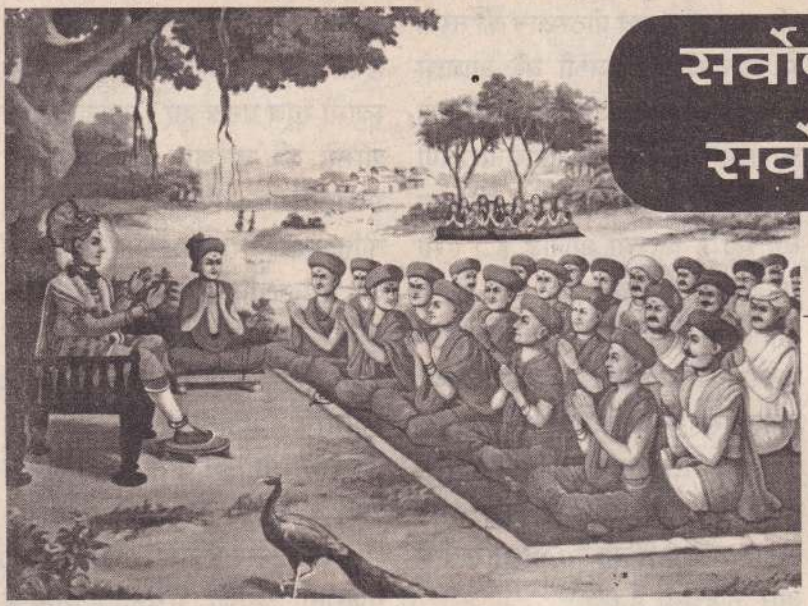
श्री हरिने गढडा, अहमदाबाद, वडताल, जेतलपुर इत्यादि गामों में रहकर जो उपदेश दिये वहीं २७३ वचनामृत हुए और मूर्ख से मूर्ख भी उसका रसास्वाद ले सकता है । सर्वशास्त्रो का सार वेदान्त तत्व का उदबोधन किया गया है । अपने तीन संकल्पो को पूर्ण देखकर सहजानन्द स्वामी खूब प्रसन्न हुए । पश्चात सभी शास्त्रो की सारभूता शिक्षापत्री की रचना किए । जिसमें समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र के साथ आध्यात्मिकतत्व का गुम्फन किया गया है । गृहस्थ, त्यागी, राजा इत्यादि के नियमों को बताया गया है । अन्त में सहजानन्द स्वामीने शिक्षापत्री के अनुकूल आचरण करने वाले को अपना आश्रित बताया है ।

कालान्तर में गद्य - पद्य, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, संस्कृत इत्यादि में रचना हुई । भगवान द्वारा स्थापित यह संम्प्रदाय लोकोत्तर स्थिति को प्राप्त हो गया ।

अपने अवतार का हेतु पूर्ण जानकर श्रीहरि वि.स. १८८६ जेष्ठ शुक्ल १० मी मंगलवार (इ.स. १८३०/२२ जून) गढपुर में अपनी मानव शरीर का परित्याग किया । कुल ४९ वर्ष २ महीना १ दिन पृथ्वी पर विचरण किये थे ।

थोडे ही समय में जितना कार्य किये वह भगवान के लिये ही सम्भव था । सामान्य मानव के सामर्थ्य के बाहर की बात है ।

अन्तर्ध्यान होने के बादभी बहुत से भक्तो को अक्षर धाम ले गये यह प्रत्यक्ष रुपसे कितने प्रमाण है । ऐसे परमात्मा में अहर्निश ध्यान धारणा भक्ति बनी रहे उसी परमात्मा के चरणों में भाव पूर्ण भावना सभी अर्पण करें इसी में जगत का कल्याण है ।



सर्वोपरि का काम सर्वोपरि होता है

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(पी.पी. स्वामी) जेतलपुर

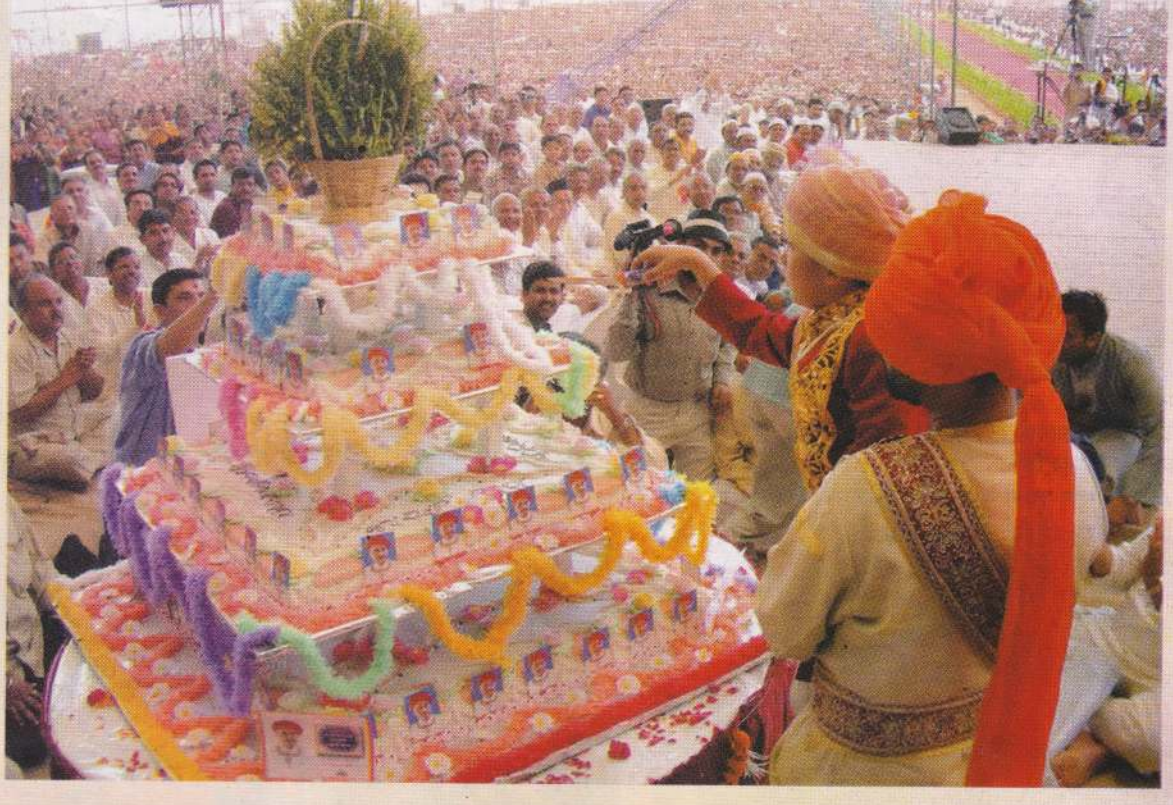
भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु जेतलपुर के सन्निकट असलाली गाँव में पांचसौ परमहंस, पार्षद तथा हरिभक्तो की बड़ी सभा में बिराजमान थे । ज्ञानवार्ता चालू थी । उस सभा में श्री जी महाराजने सन्तो से कहा कि मुझे रामानंद स्वामी ने इस उद्धव सम्प्रदाय की धर्म धुरा सौंपी और उसे ग्रहण करके वहन कर रहा हूं । लेकिन अब सन्तो आप लोग मिलकर किसी एक सन्त का नाम दीजिए जिसे हम अपनी गद्दी पर बैंढ दें । ऐसी हमारी इच्छा है।

ज्ञानवार्ता के बीच अचानक ऐसी प्रस्तुतीकरण वर्णो, सन्त हरिभक्त सभी लोग अवाक रह गये । कोई भी उत्तर देने में समर्थ न रहा । लेकिन कुछ विचार विमर्श के बाद संतोने महाराज से पार्थना की कि प्रभु ? हमारा कल्याण आप नित्य चाहे है । आप के सिवाय हमारा कल्याण करने वाला कोई नहीं है । यदि आप त्यागी को गद्दी पर बैठायेंगे तो साधु की साधुता तब हो जायेगी - क्योंकि सत्ता-गादी तथा साधुता में भयंकर बाधारुप है । हिमालय का अतिक्रमण सरल हैं । लेकिन गद्दी पर रहकर साधुता रखना कठिन है । सत्ता तथा साधुता का सीधा विरोध है । आपने हमको थोड़े कड़क नियम दिए हैं । उन्हें हम शुद्धता से निभा रहें है । परंतु गादी मिलते ही प्रसिद्ध, पूजा-प्रचार का फोटो द्वारा सन्मान होने लगता है इसीलिए चाहे कितने ही नियम निभाएगे फिरभी साधुत्व संपूर्ण खत्म हो जाएगा । इसीलिए महाराज ! हमारी और हमारे साधुत्व की रक्षा करनी हो तो गादी के वारसदार में से मुक्त रखना होगा सेवा-सत्संग ही हमारा आभूषण है । परंतु महाराज हम सभी की महेच्छा है कि आपका पवित्र धर्मकुल छपैया से आया है । गृहस्थ होने के बावजूद भी अति पवित्र साधु जैसे गुण है । तो जबभी गादी के वारसदार बनाए जाए तब धर्मकुल के ही हों । हमें आज भी धर्मकुल में आपके दर्शन होंते है । हम उनको आपकी तरह रखेंगे, पूंजेंगे जो भक्त आपके धाममें आने की इच्छा रखेगा वह मनुष्य उनको मानेगा, पूजेगा ।

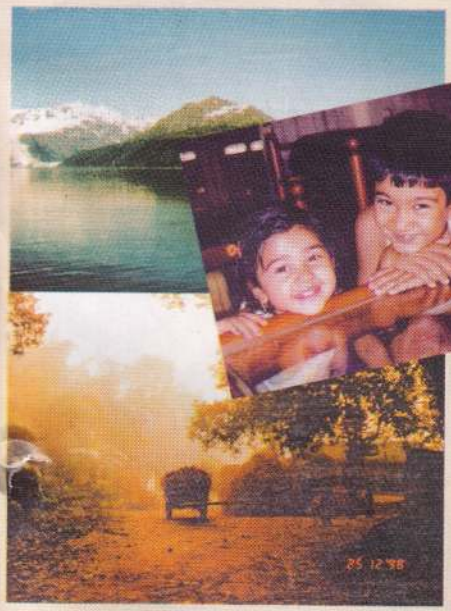
इतनी वार्ता असलाली में होने के बाद वड़ताल में अहमदाबाद-वडताल, उत्तर-दक्षिण श्री नरनारायणदेव - श्री लक्ष्मीनारायणदेव विभाग करके संवत १८८२ कार्तिक सुद-११ के मंगल दिन पर श्रीजी महाराजने स्वहस्त से अयोध्याप्रसादजी को अहमदाबाद और रघुवीर महाराज को वड़ताल के आचार्यपद पर स्थापन करके धर्मधुरा सौंपी ।

धर्मकुल की पवित्र परंपरा से आज करोडो जीवो का कल्याण हुआ । भगवान खुद आचार्य द्वारा विचरण करते पूजन-सेवा-सत्संग का लाभ देंते है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ६०वें भव्यातिभव्य प्राकटोत्सव प्रसंग कभी कल्पना न की हो ऐसी वे अति सुंदर केक काट कर प्राकटोत्सव मनाते हुए ।

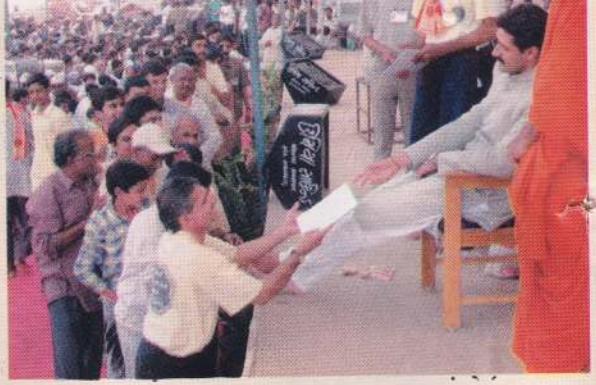




प.पू. महाराजश्रीने अपने कैमेरे से खींची तस्वीरो का हठीसंग विझयुअल आर्ट गॅलेरी में प्रदर्शन किया गया था उसके उद्घाटन के अवसर पर फोटोग्राफर पू. महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री, पू. श्री राजा तथा गुजरात के प्रसिद्ध कलाकार श्री पी. खरसाणी तथा गुजरात के प्रसिद्ध अंबालाल (के जो महाराजश्री के सहाध्यायी हैं) जिन्होंने तस्वीर तथा तस्वीरकारों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी । इस महोत्सव में आकर अनेक तस्वीरों का प्रदर्शन संप्रदाय के लिए तथा तस्वीरकारों के लिए जीवन का प्राथेय बना रहेगा



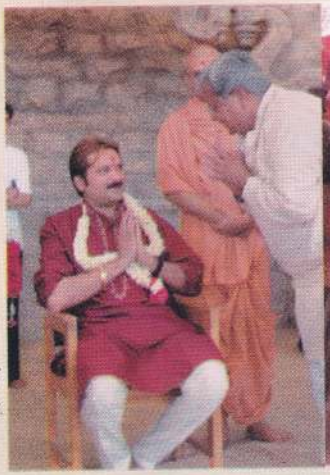
अपने संप्रदाय में और उसमें भी प.पू. महाराजश्री के लिए भारत तथा पाकिस्तान के किसीभी मुस्लिम को खूब आदर तथा मान है । इस भव्य महोत्सव में मुस्लिम बिरादर बडी संख्या में दर्शन तथा पूजन करना नही चूके थे । हिन्दु मुस्लिम एकता के प्रसंग एसे महोत्सव में जरुर देखने मिलते है ।



श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने रात दिन सेवा में कोई कमी नही रखी थी । फिर पू. लालजी महाराजश्रीने प्रसन्नता की वर्षा की थी ।



ये वामन स्वस्थ विप्र बटुक भाववाही मुद्रा में मिले हुए इस भव्य अवसर को प्रसन्नतापूर्वक अनुभव कर रहा है । प.पू. महाराजश्रीने ऐसे १५१ बटुको को यज्ञोपवित दी थी ।



पू. श्री प्रफुलकुमार का सन्मान कर महोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. रमेशभाई मारफतीया दर्शन कर रहे है ।



प.पू.अ.सौ. बिन्दुराजा, पू. श्री राजा तथा पू. स्मलराजा साथ बहनो की सभा में उपस्थित रह कर दिव्यलाभ दिया था ।



शोभायात्रा के पश्चात शानदार आतशबाजी हुई थी



महिला संमेलनका उद्घाटन प.पू. श्रीराजा ने किया था तत्पश्चात सत्संगी युवती द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ था ।

तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री श्रीहरिके पवित्र परंपरा के छठ्ठे वंशज विधमान है। पिछले पैंतीस वर्ष से गादी पर पदारुढ हैं फिर भी आज भी स्वामिनारायण प्रभु का सतत विचरण मंत्र को चरितार्थ करके देश-विदेश-शहेर-गाँव के हरिभक्तो के घर-घर पधरामणी करके हजारो संत करोडो सत्संगीओ को प्रसन्न कर दिया। अपने देह की सुख शांति या आहार-विहार की चिंता किए बिना जिस तरह स्वामिनारायण भगवानने जीवन सत्संग के लिए समर्पित किया या उसी तरह प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ऐसा सुख दे रहे है। एक भी जीव को अभाव न हो, एक जीव का भी कल्याणकार्य न बिगड़े ऐसी सूक्ष्म द्रष्टि से सदैव देखतें ही रहेतें है। इसीलिए प्रचार देख रहे है वह मात्र आचार्य महाराजश्री के ही स्वयं पुरुषार्थ का परिणाम है।

कोटि-कोटि भक्तो के हृदय में जिसका स्थान है और कोटि-कोटि भक्तो को जिन्होंने अपने हृदय में रखा है ऐसे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर साष्टांग दंडवत सह वंदना।

ते जो दया और प्रेम के भंडार हैं।

जे सदा आतुर हैं धर्म विकास के लिए।

न्द्र इन्द्र की तरह अपने प्रभाव को धर्मार्थ में लगाने वाले।

प्र सन्न मुखारविन्द मनमोहक स्मित।

सा धना हैं जिसकी धर्म और भक्ति।

द र्द को भुलवा देने वाले, आनन्द देने वाले।

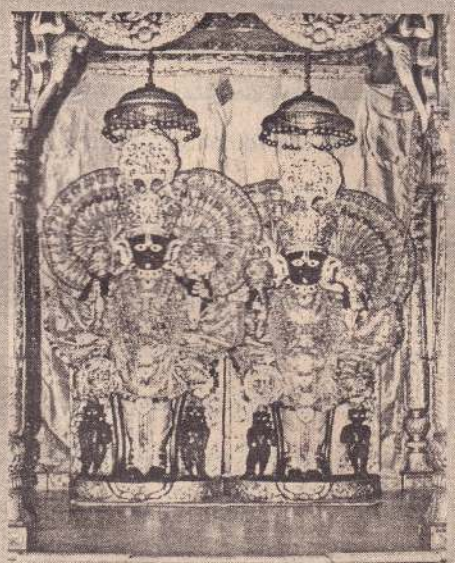
म नुष्य को धर्म की राह बताने वाले।

हा कते हैं सभी को धर्मप्रचार प्रसार के लिए।

रा जाधिराज भगवान श्री स्वामिनारायण के छठ्ठे वंशज है।

ज यकार जो स्वामिनारायण मन्त्र का करते हैं।

(राजदीप ब्रह्मभट्ट)



अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है। तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं। शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती

ટ્રસ્ટ રજી. નં. A ૨૩ કચ્છ. -:- શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ -:- FAX / 50131
☎ 50231-50331

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE
SWAMINARAYAN ROAD. BHUJ (KUTCH) 370001
卐 શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર ભુજ - કચ્છ. 卐

તારીખ
DATE ૭/૫/૨૦૦૪

પરમ પૂજ્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય, ધર્મકુળ મુગટમણી, ધર્મભાસ્કર, ધર્મધુરંધર આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ આપણો ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવ ઉજવાયો એ કારણથી આપણા ઉદ્ધવ સંપ્રદાયમાં ખુબજ ગૌરવવંતું વાતાવરણ સર્જાયું છે. અને આવા ઉત્સવો કરવાથી સત્સંગનો ખુબજ વિકાશ થાય છે. આ ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવ ઉજવવાનો વિચાર પૂજ્ય ભાવી આચાર્યશ્રી લાલજી મહારાજશ્રી ૧૦૮ શ્રી કૌશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજને ત. સંકલ્પ્યો કે અમદાવાદની ગાદી ઉપર આદી આચાર્યશ્રી અયોધ્યાપ્રસાદજી મહારાજથી આરંભીને પૂજ્ય આચાર્યશ્રી દેવેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ સુધી કોઈ પણ આચાર્ય ૬૦ વર્ષની ઉંમર સુધી પહોંચ્યા નથી. અત્યારે વિદ્યમાન આચાર્યશ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ ૬૦ વર્ષ પૂર્ણ કરી ૬૧મા વર્ષમાં પ્રવેશ કરેલ છે. માટે એમનો ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવ સર્વે સંત હરિભક્તોએ ખુબજ ઉદાર દિલથી ઉજવવો જોઈએ. અને એ ઉત્સવના પ્રમુખ સ્થાને પૂજ્ય લાલજી મહારાજ રહે એ યોગ્ય ગણાશે. એમ નક્કી કરી ઉત્સવ ઉજવાયો. એ ઉત્સવ એવો થયો કે ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ,

અને પૂજ્ય આચાર્યશ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ જ્યારથી ગાદી ઉપર આવ્યા ત્યારથી આરંભીને આજ દિવસ સુધી સત્સંગને માટે અને હરિભક્તોને રાજી રાખવા માટે શરીરના દુઃખને નહિ ગણીને સત્સંગ સમાજને ખુબજ રાજી રાખેલ છે. ને સત્સંગનો વિકાશ કરેલ છે. હરિભક્તો જ્યારે કોઈ પણ પ્રસંગનું આમંત્રણ આપે ત્યારે ભલે જરૂર પધારશું પણ એમના મુખથી નાકારનો શબ્દ નીકળેલ નથી. આવા આચાર્ય મહારાજશ્રી આપણને મળ્યા છે. એ આપણાં અહો ભાગ્ય છે. અને એમની આજ્ઞામાં રહેવું એજ આપણું કર્તવ્ય છે. એવા આપણા પૂજ્ય આચાર્યશ્રી મહારાજને અમારા કોટી કોટી દંડવત પ્રણામ સહ જયશ્રી સ્વામિનારાયણ.

લી. પુરાણી હરિસ્વરૂપદાસજીના જય સ્વામિનારાયણ ([illegible])

પુરાણી ધર્મનંદનદાસજીના સપ્રેમ જયશ્રી સ્વામિનારાયણ વાંચશોજી.

।। तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

– साधु घनश्याम प्रकाशदास (महंत श्री नारायणघाट)



जेने जोईये ते आवो मोक्ष मांगवा रे लोल ! आज धर्मवंशी के द्वार नरनारी जिसे जो चाहिए... धर्मवंश की प्रभु ने स्वयं इतना अधिक प्रज्वलित बनाया कि आजभी सम्पूर्ण दिशाओं में प्रकाश ही प्रकाश है । सात समुद्रको पार कर के नवखंड धरती पर सम्पूर्ण प्रकाश पुंज फैल गया है । उस के प्रवर्तक धर्मकुलावतंश षष्ठ आचार्य पू. महाराजश्री हैं ।

बड़े-बड़े साहित्यकारों ने कहा है कि – "गुणाः पूजास्थानः गुणे लिङ्ग न चवय" गुणवान पुरुषो में गुण ही पूजा का स्थान होता है उसमें जाति या उम्र पूजा का स्थान नहीं हो सकता । इस प्रकार से अपने प्राण प्यारे पूज्य आचार्य महाराजश्री के लिये तो जितना लिखा जाय उतना कम ही होगा । महाराज श्री धर्मधुरा जबसे सम्हाले तबसे आजतक अहं का भाव नहीं आया बल्कि आदर, प्रेम, संमान अदम्य उत्साह उत्तरोतत्तर बढ़ता ही गया परिणाम स्वरुप आज सम्प्रदाय की लहर सम्पूर्ण विश्व में तरंगायमान ही रही है । धर्म परायणता इतनी अधिक है कि लोग अनुकरण करने लग जाते है कहने की जरुरतही नहीं । त्यागी हो या गृही सभी को समभाव से देखना इसी प्रकार त्यागी गृही भी अपना सर्वस्व न्योछावर करके अपने प्राण प्यारे गुरु आचार्य महाराज को अपनाने में लग गये है । धर्मगुरु के स्थान पर आरुढ़ होने के बाद आज तक किसी के पास एक रुपया हो कि करोड़ रुपया है । वह सब भगवान नरनारायणदेव अर्थात मंदिर में जमा हो जाता है । कथा कभी होती हो तो मन्त्र मुग्ध होकर रहते थे कहते थे कि "घनश्याम कथा करना" परिणाम स्वरुप आज उन्ही की अभित प्रेम है आशीर्वाद है कि हम कथा जगत में अपना स्थान बना सके । यह स्थिति केवल हमारी नहीं बल्कि छोटे-बड़े पता नहीं कितने सन्तों प्रेरणा की मूर्ति हैं यह सभी के अनुभव का विषय है । में केवल धर्म की गादी के गुरु या आचार्य ही नहीं है बल्कि हम लोंगो के जीवन के सच्चे बाप है । हम सभी के सर्वांगी विकास का अन्तर से चिन्तन किये है । मन्दिर का मुहूर्त हो, मूर्ति प्रतिष्ठा हो, महोत्सव हो, पारायण की आरती हो, इन्डस्ट्रीज का उद्घाटन हो, गुरुकुल दवाखाना, सदाव्रत हो अथवा बंगला वास्तु हो इन सभी कार्यक्रमों में बिना थके एक युवान की तरह आजभी क्रियाशील हैं । हरिभक्तों में भी कभी गरीब-अमीर का विचार किये पधरामणी के लिए मना नहीं किये । तीनसौ से अधिक मंदिरों की प्रतिष्ठा किये हैं । ५०० से भी अधिक सन्तो को दीक्षा दिये है । अपके करकमल से विविध कार्यक्रम हुए हैं आज भी होते जा रहे है । अथाक परीश्रम से कभी थके नहीं । आबाल वृद्ध नर-नारी, त्यागी-गृही, सभी के अन्तर की आवाज एक ही बात को स्वीकार करती है कि वर्तमान आचार्य महाराजश्री जो समग्र सत्संग समाज के हृदय हैं ऐसे श्री गुरु के लिए सभी की वाणी पुकार रहीं है । आप ऐसे ही सदा नित्य बने रहो ।

समय के पाबन्द अपने महाराजश्री

कोठारी सत्यप्रकाशदासजी (अहमदाबाद)

शरदपूर्णिमा के दिन बावला मंदिर में देवो के पाटोत्सव प्रसंग में अभिषेक हेतु वहॉ के महन्त स्वामीने प.पू. आचार्य महाराजश्री को आमंत्रण दिया तो महाराजश्री ने कहा स्वामी पूनम को अहमदाबाद रहना ठीक है क्योकि हरिभक्त, लोग दर्शनार्थ आते है ।

स्वामीने कहा बापजी आप जितना पहले कहिए अभिषेक रखदें। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने कहा यदि आप ५ बजे अभिषेक प्रारंभ करदें और ६ बजे अवकाश दें तो आसकता हूं । यह सुनकर महंत सम्मत हो गये ।

पू. बापजी ने मुझे आज्ञा कि स्वामी हमे सवाचार बजे अहमदाबाद से निकलजाना है ।

संयोग वश पूनमके दिन प्रातः हमारे संतो को मंदिर से निकलनें में दश मिनट बिलम्ब हुआ । हमलोग जल्दी से महाराजश्री के बंगले पर पहुंचे तो गेटमैनने बताया कि महाराजश्री तो निकल गये । हमने बावला के रास्ते पर खूब जोरो से गाडी को दौडाया (१०० कि.मी. की रफ्तार से) वहॉ महाराजश्री भगवान का अभिषेक बड़ी तन्मयता से कर रहे थे ।

प्रेम से दर्शन करके बावला तथा देश विदेश के भक्तो तथा हम सभी को बहुत आनंद हुआ । प.पू. आचार्य महाराजश्री अभिषेक करने के बाद वस्त्र परिधान करके सभा में पधारे । यजमान हरिभक्तो ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन किया । संतोने प्रवचन दिए । प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिए । पू. ध्यानी स्वामी, तथा महंत स्वामी की विदाय लेकर प.पू. आचार्य महाराजश्री और हमने पू. लालजी के नियम अनुसार जेतलपुर पधारे । परमकृपालु श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन किए । वहॉ दर्शन के लिए आए अनंत भक्तो में आनंद की लहर दौड गई । प.पू. आचार्य महाराजश्री वहॉ से अहमदाबाद मंदिर में पधारे ।

भक्तो । इस बात में रहस्य तो अब आना है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रतिदिन ७-४५ बजे कालुपुर मंदिर के सभामंडप में बिराजते हैं । इस तरह ही बावला पाटोत्सव जेतलपुर दर्शन करके ७-४५ बजे प.पू. महाराजश्री अहमदाबाद के दैनिक नियम के अनुसार पधारे थे । पूनम के दर्शन के लिए आए भक्तों को आनंदित किया था ।

कितनी समय सूचकता ।

भक्तो ! विचार करो । प.पू. महाराजश्री कितने बजे जगते होंगे स्नान पूजा-पाठ करके बावला के निर्धारित समय पर पहुंच गए ।

भक्तो ! मेरे तो अहोभाग्य कि मुझे पू. बापजी की सेवा प्राप्त हुई । हंमेशा अहमदाबाद हो या बहारगॉव का प्रवास हो प्रातः पूजा में पू. महाराजश्री कभी जल्दी नहीं करतें । मुझे या आपको कई बार जल्दी होती है परंतु पू.महाराजश्री के साथ प्रवास हो तब कभी भी त्वरितता नहीं दिखी है ।

कितने ही संतो भक्तो को तथा भगवान को प्रसन्न करने की महेच्छा ।

६० वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर ऐसे दयालु परम उपकारी श्रीहरि के अपर स्वरुप जैसे अपने सभी के गुरुवर्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को कोटी-कोटी वंदन ।

धर्मवंशी धर्माचार्य के षष्ठि पूर्ति महोत्सव की सेवा में से प्रगट होगा "मोक्षामृत"

शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (श्री सहजानंद गुरुकुल, वडनगर)

प्यारे सत्संगियो । विगत एक वर्ष से एक ही बात चारो तरफ सुनाई देती । जोर शोर की एकमात्र उसी की तैयारी के लिए तन-मन-धन जैसे नाशवंत पदार्थो द्वारा अविनाशी तथा शास्वत सुख प्राप्त करने लिए लाखो हरिभक्तोने कमर कस लिये थे । वह महा महोत्सव अपने प्यारे श्री स्वामिनारायण भगवानके छठ्ठे वंशज धर्मवंशी आचार्य धर्म शिरोमणी, धर्म भास्कर १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का "षष्टि पूर्ति महोत्सव".

ता. २ अप्रैल से ८ अप्रैल तक अहमदाबाद के आंगन में भावी अचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में उन्ही की देखरेख में संत महन्त तथा हरिभक्त लोगों के सहकार से यह षष्टि पूर्ति महा महोत्सव निर्विध्न पूर्ण हुआ ।

इस महा महोत्सव में प.पू. लालजी महाराज के आदेश तथा आज्ञा से संत तथा भक्त गुरुऋण में से मुक्त मन के साथ तन और तन के साथ धन तथा गुरु के प्रति निष्ठा वफादारी, कर्तव्य तथा भावना पूर्वक समर्पित कर षष्टि पूर्ति महोत्सव को विश्व के प्रत्येक कोने पर प्रसारित किया था । इस धन्य घडी को इष्टदेव भगवान श्रीहरि कैसे भूल शकते है ? संपूर्ण समर्पण करनेवाले भक्त के सभी कर्मो की जिमेदारी श्रीहरि अपने सर लेते है ।

षष्ठी पूर्ति जैसे महोत्सव में कौन सहभागी नही होगा ? क्योंकि त्रिलोक में प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव, श्रीजी महाराज द्वारा संस्थापित धर्मवंशी धर्माचार्य प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा भावी आचार्य लालजी महाराज श्री तथा बाल लालजी पू. व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज तथा अ.सौ.पू. गादीवालाश्री तथा पू. मातुश्री एवं अ.सौ.पू. वहूजी महाराज तथा अ.सौ.पू. बिन्दूराजा जैसे श्रीजी महाराज के सीधा संबंधीका शुभाशीर्वाद लेनेको कौन नहीं चाहेगा । दुर्भागी हो वही नहीं चाहेगा वह इस लाभ से वंचित रह जायेगा ।

सज्जनो ? महाभारत का युद्धपूर्ण होने के बाद श्री कृष्ण अर्जुन को रथ से नीचे उतरने का आदेश देते है । अर्जुन कहता है प्रभो ? पहले आप उतरिये बाद में हम उतरेंगे । परंतु श्री कृष्ण आग्रहपूर्वक अर्जुन को उतारते है । बादमें अपने उतरते है । श्री कृष्ण के उतरते ही रथ भस्म हो जाता है । अर्जुन विचार करने लगा प्रभु पहले उतर गये होते तो । रथ के साथ हमभी भस्मीभूत हो गये होते । अपने योग- तपबल से भगवान अस्त्र शस्त्र सभी को रोक रखते थे ।

ऐसे ही अपने जीवन पर जबतक अपने धर्मगुरु धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री है और उनकी कृपा दृष्टि हैं तब तक किसी चिन्ता का विषय नहीं है । लेकिन जिसदिन कृपा दृष्टि हटी उस दिन से जीवन रथ भष्मीभूत हो जायेगा ।

इष्टदेव श्रीहरि, धर्मगुरु तथा संत, सत्संगीयोकी प्रशंन्नता किस प्रकार प्राप्त करे उसे श्रीहरिने 'वचनामृत' जैसा गहन तथा मोक्षकारी ग्रंथ में स्वमुख से कहा है कि भगवान का जिसे दृढ आश्रय हो एकमात्र सर्व साधना में सबसे बड़ा साधन है । उससे ही भगवान राजी होते है । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भी एक भगवान के दृढ आश्रय वाला सत्संगी जीव खूब पसंद है । उन हरिभक्तोके उपर बहुत राजी है । बस यदि वे प्रशंन्न हो तो क्या चाहिए ?

सज्जनो ! षष्टि पूर्ति महोत्सव द्वारा प्रशन्न कर मोक्षामृत प्राप्त करनेका अवसर है । वचनामृत में भी भगवान ने गुरु परंपरा की बात को समर्थन देते हुवे १८ वें वचनामृत में कहा है ।

फिर श्रीजी महाराज बोले आप सभी ज्ञानी परमहंस है तो एक प्रश्न का उत्तर दिजीये, सत्संगी हो उसे अवश्यपूर्वक क्या जानना चाहिए ?

इसप्रकार पूछ कर फिर खुद ही बोले इसका उत्तर हमही देते है । हमारा संप्रदाय उद्धव सम्प्रदाय के रुप में है जिसके प्रवर्तक रामानंद स्वामी में थे। तथा वे स्वप्न में साक्षात रामानुजाचार्य से दीक्षा प्राप्त किये थे । तथा वही रामानंद स्वामी के शिष्य हम है।

सज्जनो । श्रीजी महाराजने "धर्मरक्षण हेतवे" त्यागी गृही सभी के गुरुपद पर अहमदाबाद श्री नरनारायण देवकी गादी पर अपने भाई श्री रामप्रतापजीके पुत्र श्री अयोध्याप्रसादजी को दत्तकपुत्र के रुप में ले कर आचार्य के रुप में स्थापन करके सत्संगि के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उन पर सौंप दिया। श्री नरनारायणदेव गादी के उपर क्रमशः पारम्परिक आचार्य के रुप में पू. आचार्य महाराजश्री आज विद्यमान है । जो कलिकाल में भगवान का दिव्य संदेश "सर्वजीव हितावह" दिगदिगन्त तक फैला रहे है। शास्त्रो में सत्य कहा गया है कि गुरु के प्रतिप्रेम बहता हुआ अखंडित समुद्र है। जीवन में गुरु का बड़ा महत्व है। बिना गुरु के मार्ग चाहे इहलौ किक हो या यार लोकिक हो सम्भव नहीं है मोक्ष मार्ग द्रष्टा तो गुरु ही होता है । ऐसी स्थिति में अपने सम्प्रदाय में गुरु को खोजनें की जरुरत ही नहीं अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणनें हम सभी के लिए धर्मवंशी आचार्य को दिया हैं।

गुरु के बिना इस संसाररुपी भवसागर पार करना कठिन है। व्यक्ति कितना बड़ा हो जाय, ब्रह्मज्ञानी हो जाय तोभी उसे गुरु तो बनाना ही पड़ता है। गुरु की आज्ञा में जीवन का मूल्य समझना चाहिए।

सज्जनो ! भगवान श्री स्वामिनारायण नें शिक्षापत्री में स्ववाणी से स्पष्ट कहा है कि धर्मवंशी आचार्य ही आचार्य होना चाहिए तथा उन्ही का आश्रित रहना चाहिए इसी में मोक्ष है।

श्री कृष्णने सुदामा को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि समाज कभी खराब होता ही नहीं । सत्य वस्तु को धारण करनेवाला व्यक्ति सभी काल में रहता है। तुम्हारी शिक्षा- योग्यता पुरुषार्थ जीवन के पथ पर उत्तरोत्तर वृद्धकारक होगा। तुम्हारे ज्ञान का सभी को यथार्थ ज्ञान होगा तो अवश्य समाज प्रसंशा करेगा। परिणाम स्वरुप में सुदामा भारत के इतिहास में गुरुमित्र प्रेरणा से अमरतत्व को प्राप्त किया।

सज्जनो ? हम भी अपने धर्मवंशी गुरु प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा में उन्ही की सेवा स्वीकार करके आश्रित वनेंगे तो गुरु सेवा द्वारा निश्चित ही अन्तिम क्षण में "मोक्षामृत" प्राप्त होगा इसमें कोई संदेह नहीं।

षष्टी पूर्ति महोत्सव में कायमी सभ्यो को सौजन्य भेट

प. पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा-प्रेरणा से षष्ठि पूर्ति महोत्त्सव के उपलक्ष्य में वंश परंपरागत सभ्यो को सौजन्य भेट दे कर श्री स्वामिनारायण अंक के प्रचार पसार में सुंदर योगदान दिया।

१. अ.नि.प.भ. रणछोडलाल जेठालाल मारफतीय परिवार प.भ. रमेशभाई मारफतीया, प.भ. नविनभाई मारफतीया (न्युजर्सी, अहमदाबाद - १००००/-)
२. अ.नियप.भ. मोहनलाल प्रभुदास राव परिवार, प.भ. हरिशभाई राव, शिकागो-अहमदाबाद १००००/-
३. प.भ. रमेशभाई बी. ब्रह्मभट्ट, प.भ. विवेक रमेश ब्रह्मभट्ट शिकागो-अहमदाबाद १००००/-

५० सभ्यो को रु. १००/- सभ्य

१. प.भ. आत्मारामभाई पटेल परिवार, प.भ. जगदीशभाई आत्माराम पटेल शिकागो- अहमदाबाद ५०००/-
२. प.भ. अमृतभाई पटेल साबरमती रु. ५००१/-

प.भ. नारणभाई पोपटभाई टांक (जीरागढ) ने रात दिन श्री स्वामिनारायण पत्रिका के सभ्य कैसे बढे तथा आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री को राजी करने के लिये सेवा की थी। उसकी सेवा भूली जाय वैसी नही है। षष्ठि पूर्ति महोत्सव के दौरान ७०० वंश परंपरागत सभ्य मिले है।



षष्ठि पूर्ति महा महोत्सव

संकलन :- गोरधनभाई वी. सीतापरा, बापुनगर

प्रस्तावना

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान ने मुमुक्षु गॉवो वे कल्याण के लिए अपने स्थान पर रह कर सनातन धर्म वेदोक्त धर्म धुरा सुनाने के लिए कोलकाता से द्वारका तक रेखा बना कर भरतखंड के सत्संग प्रसार के लिए उत्तर दक्षिण इस प्रकार दो हिस्से किए । उत्तर का पीठ स्थान अहमदाबाद कालुपुर मंदिर तथा दक्षिण का पीठ स्थान वडताल मंदिर निश्चित कर धर्मदेव के वंश मे से अपने दो भवीजो को वेदोक्त विधि के मुताबिक दत्तकपुत्रो के रुप में स्वीकर्य कर दो आचार्य बनाये । श्रीजी महाराज ने छ अंगो वाले सत्त्सङ्ग की स्थापना की । मंदिर, देव, आचार्य, संत, शास्त्र तथा हरिभक्ते । श्रीजी महाराजने स्थापीत किए देव, आचार्य, संत धर्मवंशी आचार्य दीक्षित तथा शास्त्र ईन चार स्वरुप में भगवान श्री स्वामिनारायण आज कलियुग में भी प्रत्यक्ष प्रकट प्रमाण मिलते है । नारद मुनिने छपैया में घनश्याम महाराज चरित्रिका तथा आचार्य वद का वीणा के सुमधुर ध्वनि के साथ काव्यात्मक गान किया था । धर्मदेवने भी अंत समय पर इस बातकी स्पष्ट जानकारी दी थी । उसके मुताबिक श्रीजी महाराजने वडताल में बिराजमान हो कर गुरु पुरुष तथा स्त्री की गुरु स्त्री हो और इसीलिए स्वयं श्रीजी महाराजने आचार्यश्री सत्संगी के गुरु तथा संप्रदाय के सर्वोच्च व्यक्ति के जाती है । वे त्यागी तथा ग-ही तमाम सत्संगी बहनो की गुरु है

आचार्यश्रीकी विशिष्टता :

श्रीजी माहाराजने आचार्यश्री में अपना तेज रखा है । श्रीजी महाराज आचार्यश्री में प्रत्यक्ष रहे है । इसीलिए तो आचार्यश्री को श्रीजी महाराज का अपर स्वरुप है

अमे एमा ए छे अममांइ रे,
एम समझो सहु बाई भाई रे ॥
एथी अमे अगणा न रव्हीए रे,
एमा रही ने दर्शन दैये रे ॥
एम समझो सहु सुजाण रे
अम विना न होय कल्याण रे॥
धर्मवंशी अचार न मांय रे,
सदा रह्यो छुं मारी ईच्छाय रे ॥

(पु.प्र.४०)

निष्कुलानंद काव्य के पुरुषोत्तम प्रकाश प्रकरण में निष्कुलानंद स्वामीने कुल ६ पृष्ट में धर्मवंशी आचार्य की महिमा का वर्णन किया है । श्रीजी महाराज धर्मवंशी आचार्यश्री की महिमा करते हुए कहतें है कि.

धर्मवंशी आचार्यश्री को श्रीजी महाराजने तीन अधिर दिये है । (१) मूर्ति प्रतिष्ठा करने का (२) त्यागी को साधु की दीक्षा देनेका (३) गृहस्थ को सत्संगी के रुप में भागवती दीक्षा का अधिकार ।

शि. श्लोक नं. ६२ के अनुसार धर्मवंशी आचार्यश्री भगवद स्वरुप मूर्ति प्रतिष्ठा करे तो ही वह मूर्ति पूजा के योग्य है । सत्संगिजीवन के चतुर्थ प्रकरण के अनुसार आचार्यश्री त्यागी को भगवा वस्त्र प्रदान करे और महामंत्र प्रदान करे तो ही वह स्वामिनारायण का संत कहलाएगा । उसी तरह आश्रित गृहस्थ को श्री कृष्ण का अष्टाक्षरमंत्र (गुरुमंत्र) प्रदान करे तो ही वह सत्संगी कहलाएगा । जगत में कितने ही मनुष्य कहतें है कि हम स्वामिनारायण को मानते है परङ्तु आचार्यश्री को नहीं मानते है । सचमुच ऐसे मनुष्य ही वचनद्रोही होतें है । क्योंकि जो स्वामिनारायण को मानतें है वह

शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगीजीवन आदिक वचनो में भी मानतें ही है। ऐसे ही मनुष्य धर्म के प्रति पाखंड दिखाते है।

वर्तमान प. पू. ध. धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादीज महाराजश्री

श्री हरि के छठ्ठे वंशज अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प. पू. ध. धु. तेजेन्द्रप्रसादजी के विषय में एक दो पृष्ठ लिखना सभ्य नहीं है। अमेरिका के एक छोटे से बालक ने उनका दर्शन करके अपने साथी मित्रों में कहाकि "Indian God !" कोई जैन या इस्लाम धर्मी कहते है कि आपके गुरु को एक बार देखने के बाद उनका तेज हमें भूलता ही नही है। अहमदाबाद के एक साड्य के नामंकित सर्जन डॉक्टर. ने कहा की अगर आप अपने धर्मगुरु के श्रध्धापूर्ण दर्शन करेंगे तो मेरी दवा या ट्रीटमेन्ट की जरुरत ही नहीं पडेगी। इस डॉक्टर मे सिरफ एक ही बार प. पू. महाराजश्री का दर्शन किया था फिरभी उनके मन में प.पू. महाराजश्री के लिए कितना आपर और मान है। ऐसे तो अनेक प्रसंग हुए है। कोई तो कहता है कि वे तो भगवान के अवतार ही है।

कलयुग में श्रीजी महाराजके दर्शन का सुख लेना होतो उनके स्थान पर विराजमान आचार्य महाराजश्री द्वारा भी मिल शकता है। उनकेसदगुण, रस, आदि जानने के लिए स्वामिनारायण भगवान के दर्शन मात्र से लोग सत्संगी बन जाते है तो आज प. पू. महाराजश्री के दर्शन मात्र से भी लोग सत्संगी बनतें है।

उनके आशीर्वाद से लोग आधि, व्याधि, उपाधि इस तरह से विविध ताप में से मुक्त हुए है। उनके आशीर्वाद से नर्मदाविकास योजना के सारे अवरोध पूर होकर सरदार डेम की ११० फूट की उँचाई के लिए सुप्रिम कोर्टने बहाली दी है।

विधमान आचार्य महाराजश्री के शासन काल में असंख्य शिखरबध्ध मंदिर तथा हरिमंदिर का निर्माण हुआ है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मच्छु होनारत, कारगील, धरतीकंप जैसी कुदरती आफतो में विशाल फलक पर समाज सेवा हुई है। उन्होंने स्थापित I.S.S.O. (Internation Swaminarayan Satsang Organiseation के माध्यम से यु. के. के लेस्टर स्ट्रेधाम, ब्राईटन और न्युजर्सी, बोस्टन, यु.अेस.ए. के सान्फ्रान्सिको, केलिफोर्निया, बुस्टन, टेकसास, शिकागो, लोंस एंन्जलस, वोशिंग्टन, स्वीडन और औस्ट्रलिया के सीडनी, न्यझीलेन्ड, टोरेन्टो तथा दोर सलाम, ट्राझानीया, पूर्व आफ्रिका और खाडी के देशो में सत्संग बहुत ही पिस्तृत हुआ है। प. पू. महाराजश्रीने सत्संग प्रसारके लिए करोडो मनुष्यो को धर्माभिमुख करके भगवान के साथ जोडने के लिए अपने जीवनकाल के समय में रात-दिन, ठंडी-गरमी-बरसात की परवाह किए बिना लाखो कि.मी. तक मुसाफरी की। विदेश की अनेक नामांकित राजकीय, सामाजिक व्यक्तिाओ ने महाराजश्री के दर्शन से प्रभावित हुए है। आचार्य परंपरा में अपने जीवनकाल के जिसने ६० वर्ष परिपूर्ण किए हो वैसे प. पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री सबसे पहले आचार्यश्री है। और इसिलिए इस बृहद संप्रदाय में षष्ठी पूर्ति महोत्सव पहला प्रसंग है।

सत्संग समाज का संकल्प और पू. महाराजश्रीकी अनुमति :

अपने हृदय सम्राट विश्व वंदनीय प. पू. महाराजश्री जब अपने जीवनकाल के ६० वर्ष के नजदीक पहोंचे तब प. पू. लालजी महाराजश्री, प. पू. महंत स्वामी और समग्र संत सत्संग समाज को ऐसी भावना हुई की हमारे महामूल्य रत्न समान, अपने जीवन को धर्म और भक्ति और प्रेम से गदगद करनेवाले प. पू. महाराजश्रीने जीवन के ६० वर्ष और आचार्यपद के ३५ वर्ष परिपूर्ण कर रहें है। तब सत्संगने ऋणमुक्ति करने के लिए और उनको ऐसी ऐसी धार्मिक, सामाजिक, प्रवृति करने के लिए विशेष उत्ससव

का आयोजन करने का संकल्प किया ।

अपने प. पू. महाराजश्री भी अत्यंत उत्सव प्रिय होने के कारण उनके निश्च में द्विशाताब्दी महोत्सव, रजत सुवर्ण जयंती महोत्सव, शतामृत पाटोत्सव आदि असंख्य चिर:स्मरणीय बड़े बड़े उत्सव मनाए है । अपने नाम को भी निमित बनाकर भी अगर उत्सव में धार्मिक कार्यो द्वारा लाखो जीवो का कल्याण होना हो तो महाराजश्री सदैव तत्पर होने की वजह मे इस उत्सव को व्यक्तिगत न मानकर आचार्यपद का उत्सव होगा उसका उपयोग स्वामिनारायण भगवान की प्रसादी की चीजो को रखनेवाला एक म्यझीयम बेन चिंता किसे होगी । कैसी उच्च भावना ।

आदिकाल से भगवान द्वारा स्पर्श कि गई चीजो का संग्रह किसी भी अवतार में भी रक्षित नहीं की गई होगी । स्वामिनारायण भगवान ही एक ऐसे है जिन के द्वारा स्पर्श किए गए पथ्थर, कागज, पुस्तक, माला, मूर्ति, वर्तन, रथ, वस्त्र, रजाई आदि प्रसादी की चीजें मंदिर संतो हरिभक्तो के परिवार में नवा प.पू. महाराजश्री पास रक्षित है । यह सब चीजें समय जोन खोज जाए, नष्ट ने हो हा । चोरी न हो जाए इसि लिए प. पू. महाराजश्री के वंशज सत्संग समाज समक्ष दिव्य अलौकिक और संग्रहित चीजो का पान मॉग रहे है । वे अस म्यझीयम में तन; मन, धन से हम सभी जडकर सत्संग की सेवा कर शकते है, क्योंकि जो भी प्रवासी प्रसादी की चीजो का गर्शन करेगा अगर वह सत्संगी नहीं होजा तो भी अगले जन्म में सत्संगी बनना चाहेगा और प्रसादी की चीजों को सच्ची महिमा को समझे गा । भगवान की चीजो का स्मरण करेक अक्षरधाम को प्राप्त करेगा ।

<u>पूरे एक वर्ष लगातार तलता हुआ सत्संग सेवा महोत्सव</u>

षष्ठी पूर्ति महोत्सव की अगर कोई बडी विशेषता हो तो वह यह है कि इस सत्सङ्ग सेवा महोत्सव संवत २०५९ के चैत्र वद ३ से संवत २०६० चैत्र वद-३ तक पूरा एक वर्ष प्रतिदिन



और प्रतिपल मनाया गया । ता. २-४-२००४ से ता. ८-४-२००४ जो प्रसंग मनाने वाला था उसमें सविशेष भजन, भक्ति, सेवा, कार्य होंते रहें । श्री सहजानंद स्वामी के स्वामिनारायण धर्म का सर्वजीव हितकारी संदेश देश-विदेश में विस्तृत हो के लिए समान और सुसंगत विचारधारा वाले उत्साही और उधमी संत और हरिभक्त प.पू. लालाजी महाराजश्री की अध्यक्षता के आश्रय और मार्गदर्शन ध्वारा सत्संग और सामाजित सेवा के विविध कार्यक्र होने रहे है ।

उपरोक्त कार्यक्रमों के नीचे असंख्य गॉव और हजारो मंदिरो में ६० घंटे की अं ड स्वामिनारायण महामंत्र की धून हुई, माला तथा मंत्र लेखन ध्वारा स्वामिनारायण महामंत्र का साठ अबज से ज्यादा मंत्र जाप हुआ । मंगल स्त्रोत, श्री विष्णु सहस्त्र स्तोत्र, नारायण कवच, विष्णप गायत्री मंत्र, अष्टक्षर

मंत्र, महामंत्र और ध्वादशाक्षर मंत्र के पाठ करोडो की संख्या में व्यक्तिगत और सामूहिक वर्षभर होंते रहें। इसके अलावा धार्मिक प्रवृत्ति में श्री स्वामिनारायण भगवानने नंद संत ध्वारा रचित शास्त्र सत्संगिभूषण, सत्संगिजीवन आदि सास्त्रोकी पारायण और संगित पाठ करवाया है। जनमंगल नामावली के पाठ किए, स्वामिनारायण महामंत्र की माला की हनुमानचालीसा के हजारो आयोजन हुए । अनेक मंदिरो में युवा और महिला शिबिर और शाकोत्सव हुए। अनेक पदयात्राए हुई । और सत्संग सभा की तो गिनती भी नहीं हो शकती। ज्ञानी संख्या में संतो और प. पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में मंगल सत्संग सभाए हुए । जीवका परमात्मा से मिलन होती ही जीव का कल्याण होता है। ऐसा कल्याणकारी उत्सव पूरे एक वर्ष तक चला । यह इस प्रसंग की विशिष्टता थी। यह इस महोत्सव की शोभा थी .

महोत्सव की सफलता के लिए देश विदेश में और गुजरात के गॉव-गॉव में प. पू. लालजी महाराजश्री और ब्रह्मनिष्ठ संतो का विचरण हुआ। सत्संग सभा हुई। और संतो की और प. पू. लालजी महाराजश्री के नाम मात्र से ही सभी के हृदय में भगवान पधारे । साखो बजारो लोग हजारो लाखों रुपयों का दान करके अपने आप को धन्य मानने लगा संप्रदाय रे हरिभक्त पैसे-रुपये महाराज को अर्पण करते है और महाराजश्री इसके बदले में उन्हें बहुत कुछ वापस देंते है । इसिलिएसाढे दो सौ कम समय में स्वामिनारायण संप्रदाय भौतिक और आध्यात्मिक प्रकार से समृद्ध हुआ है।

<u>महोत्सव की पूर्वसंध्यापर</u>

दि. ७-३-२००४ के घूलेंडी के दिन महोत्सव स्थल (गुजरात युनि. अेज्यु. ग्राउन्ड) पर प. पू. लालजी महाराजश्री के वरद हस्तने हजारो हरिभक्तो भी उपस्थिति में पवनपुत्र हनुमानजी के चित्रवाली धर्मध्वजावालो विजयस्तंभ की स्थापना की गई। प. पू. लालजी महाराजश्री और प. पू. बाल लालजी महाराजने प्रसादी के रंग की पिचकारी विशाल मंदनी पर डालने का प्रारंभ किया। ऐसा लगने लगा जैसे कि यह शुभ प्रसंग की शुरुआत है । भूलकर भी कोई इस प्रसंग का लाभ लेना नहीं चूकता है। वायुपुत्र हनुमानजी ध्वज पर आकाश में रह कर सभी सत्संगीओ को जैसे प्रेरणा दे रहें हो कि यह तो श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप प. पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी का उत्सव है।



धर्मपिता और भक्तिमात के साथ की सहजानंद स्वामी की प्रसादी की मूरष्ठतति तथा प.पू. महाराजश्री के स्वहस्त कि हुई कुम कुम के टीके वाली निमंत्रण पत्रिकाए देश विदेश में स्थापित दोनो देश के हजारो शिखरबद्ध मंदिर और हरिमंदिर में भेजी गई थी । और अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के वंश परंपरागत सभ्यों को भी व्यक्तितिगत निमंत्रणपत्रिकाए

पोस्ट द्धारा भैजी गई थी । सभी जगह पर षष्ठी पूर्ति महोत्सव के विविध स्टीकर, पत्रिकाए विशाल मात्रा में बॉटकर धार्मिक जनता को आमंत्रित ककिया गया है । स्वयं श्रीजी महाराज सभी को दर्शन देकर सुख शांति दे रहे हो ऐसा आभास होता है ।

जिस कार्य के लिए जो व्यक्ति योग्य हो उसी को कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए । शिक्षापत्री के आदेश के अनुसार प.पू. लालजी महाराजश्रीने अनुभव संत हरिभक्तो को साथ रखकर संत हरिभक्तो की कुल ३२ अलग अलग कार्यकारी समिति रचना करके कार्यभार की यथा योग्य । बॉटा । सभी क्षेत्र में इनिरिपुण ऐसे प.पू. कौशलेन्द्रप्रसादजी ने महोत्सव के संकलन के लिए वैज्ञानिक चरह सें कोम्प्युटर जैसे उपकरणो का लाभ लेकर महोत्सव को एक सुत्रता प्रदान की ।

<u>हरिभक्तो की सेवा</u>

महोत्सव की ता. २-४-२००४ के कुंड बनाना, साफ करनी, अनाज साफ करना आदि अनेक, प्रकार की सेवा करने क् लिए बापुनगर, राणीप, महादेवनगर, मेघाणीनगर, ाडज, चांदलोडीया, शाहीबाग आदि अहमदाबाद के तमाम विस्तारो तथा आस-पास के गाँव में से स्वयं सेवक भाई तथा बाईयाँ असंख्य ट्रेक्टरो द्वारा स्थल पर पहुचने लगे । संतो के मार्गदर्शन द्वारा सेवा द्वारा मुक्ति प्राप्त करने का अवसर मिला । प.पू. लालजी महाराजश्री का द्वारा संचालित राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय श्री नरनारायणदेव युवक मंडल में से कुल १७५ गाँव और अहमदाबाद शहर को विदेश के हरिभकक्त भी इन युवान स्वयंसेवको की सेवा से बहुत प्रभावित हुए ।

<u>षष्ठी पूर्ति महा महोत्सव</u>

विश्व वंदनीय, प्रातः स्मरणीय, अपने हृदय सम्राट नरनारायणदेव पीठाधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री दि. ८-४-२००४ के दिन ६० वर्ष पूरे करनेवाले थे । इसिलिए इस निमित पर दि. २-४-२००४ से दि. ८-४-२००४ के बीच में पूरे एक सप्ताह के लिए समग्र संप्रदाय के सत्संग समाज तथा धर्मप्रेमी जनता के तरफ से गुरुऋण अदा करने की भावना से युवाचार्य प. पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के अध्यक्ष स्थान पर पूर्ण भक्ति भावसे तथा खूब धूमधाम से षष्ठी पूर्तति महोत्सव का प्रारंभ किया ।

<u>ता. २-४-२००४</u>

प्रातः ७-३० से ८-३० के बीच में श्री सत्संगि भूषण ग्रंथ की पोथीयाक्षा धामधूम से संपन्न हुई । इस महोत्सव के निमित्त पर गुजरात युनिवर्सिटी के विशाल एज्युकेशन ग्राउन्ड पर श्री स्वामिनारायण नगरका आयोजन किया गया । इस नगर का प्रवेश द्वारा कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर के मुख्य



पास आते इ्टदेव श्रीहरि के संकल्प मात्र से ही हरिभक्त में स्वयं सेवाका रस पैदा हो जाता है । यहा

प्रवेशद्वारा की बिलकुल कलाकृति जैसा ही था। इस स्वामिनारायण नगर के मुख्य प्रवेश द्वारका उदघाटन आचार्यश्री महाराज तथा प. पू. लालजी महाराजश्री के मुख्य मेहमान श्री शशीकांत अदाणी और श्री राकेश शाह (अदाणी ग्रुप ओफ, इन्डस्ट्रीझ) साथ रहकर करने के बाद भक्ति मंडप में अखंड धून का प्रारंभ किया। इस के बाद श्री स्वामिनारायण नगर के मुखख्यय सभा मंडप में प. पू.महाराजश्री के वरद हस्त से प्रतिष्ठाविधि तथा शुभ प्रसंग के लिए दीप प्रागट्य विधि की गई। प्रात: ९-०० बजे वव्ययासपूजन, पोथी पूजन तथा संहिता पूजन बाद प. पू. महाराजश्री के शुभी आशीवचन के साथ श्रीमद सत्संगिभाचार्य अहमदाबाद मंदिर के स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजी स्वामी के वक्तापद का शुभारंभ हुआ। शां को ६-०० बजे कथा अंतर्गत श्री घनश्याम महाराज का जन्ममहोत्सव धामधूम से मनाया गया। शिवजी, हनुमानजी आदि देव छपैया में श्री घनश्याम महाराज के दर्श करने के लिए पदारे हो ऐसी झांखी हरा प्रसंग में में प्रस्तुत की गई थी। प. पू. बाल लालजी महाराजने वेशभूषा अपना। अलौकिक दर्शन करवाकर श्रोताजनको मंत्रमुग्ध किया था।

सांम के गोपाल बारोट (साहित्य), अरविंद बारोट (गायक) तथा चीका खरसाणी (हास्य) द्धारा सभाजनो को आनंद सागर का भास करवाया था।

इस महोत्सव की सबसे बडी विशेषता यह थी कि प.पू. महाराजश्री संत हरिभक्तो पर ज्यादा समय व्यतीत करते थे। हररोज साम की कथा की पूर्णाहुति में आशीवचन देतें थे (जिस आर्शीवचनो का अलग संकलन करके इस अंक में प्रकाशित किया गया है। प.पू. महाराजश्री के समग्र धर्मकुल तथा संबंधी सदैव कथा श्रवण करने के लिए पधारते थे।

ता. ३-४-२००४

विद्वान संतो के अमृतवचन का सभी को लाभ प्राप्त हुआ था। कथा पारायण सत्संग तथा महापूजा, युवा सम्मेलन और महिला सम्मेलन के कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। इस दिन राज्य सरकार के कृषिप्रधान भूपेन्द्रसिंह चुडासमा तथा डे. म्यु. कमिश्नर श्री त्रिकम झालावाडिया, गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष मंगलदास पटेल तथा गोधरा विस्तार के धारासभ्यश्री पदारे थे। राजस्थान कांकरोली के पीठ स्थान वैष्णवाचार्य १०८ श्री व्रजेशकुमारजी महाराजने इस प्रसंग पर उपस्थित होकर अपनी शुभ भावनाए प्रकट की थी और प.पू. महाराजश्री को सन्मनित किया था।

रात को प.पू. लक्ष्मीस्वरुप गादीवानाश्री तथा पूज्य लक्ष्मीस्वरुप



बहुजी महाराजश्री के सानिध्य में और शिक्षणमंत्री आनंदीबहन पटेल की अपस्थिति में विराट महिला संमेलन का आयोजन किया गया था। जिसमें देश विदेश के हजारो सत्संगी बहनो ने भाग लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए थे।

ता. ४-४-२००४

रविवार के दिन प्रात: १५० विप्र बटुको को द्धिजत्व के प्रतिक जैसी जनेउ (यज्ञोपवित, वेदोकक्त विधि द्वारा प. पू. महाराजश्री के हाथो से हुई थी। यज्ञोपवित धारण करनेवाले बटुको के संबंधीओं के लिए भोजन (प्रसाद) का प्रबंध किया गया ता। ब्राह्मण बटुको की यज्ञोपवित की विधि पूरी होने के बाद प.पू. महाराजटी के सानिद्य में सबा मंडप के मध्यमें विशाल सभा का आयोजन किया गया था। मुख्य मेहमान कानूनमंत्रीश्री अशोक भट्ट, गृहमंत्रीश्री

अमीत साह, धारासभ्य श्री जीतुभाई पटेल, और प्रागजीभाई पटेल आदि ने इस प्रसंग पर पधारकर प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद पाकर शुभ भावनाएं व्यक्त की थी। न्यजर्सी (आई. अेस. ओ) प्रमुख भक्तिभाई पटेल के पटे और बोस्टन (आई. अेस. अेस.अे) के सेक्रेटरी सेक्रेटरी ज्ञानेशभाई धोलकीयाने प.पू. महाराजश्री को विदेश में किए सत्संग प्रचार की रसप्रद बाते बताई। धारासब्य मायाबहन कोडनानी गादीवालाश्री के पास आशीर्वाद प्राप्त किया था। अकील भारतीय ब्राह्मण समाज की तरफ से सरयुवारीण ब्रह्मणो के सूत्रधार जैसे प्रधान पंडित वाचस्वति श्री मिश्रा झाटलने साथ हर कर प.पू. महाराजश्री को सन्मानपत्र अर्पण करके स्वास्तित वाचन करके अपनी शुभ भावनाओ कां निवेदन किया था। और प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किए थे।

ता. ५-४-२००४

कालुपुर मंदिर में प्रातः के समय में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू. महाराजश्री ने वेद विधिवत २१ त्यागीओं के संत के बनने के लिए भागवती दीक्षा की और प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाने २८ त्यागी बहनो ेक सांख्ययोगी दीधा दी। श्री नरनारायणदेव को अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले न्युझीलेन्ड, ओकलेन्ड के महादानवीर डॉ. कांतिभाई पटेल और लंडन वीलसडनलेन मंदिर के सेक्रेटरी प.भ. कुंवरजीभाई देवराजभाई वेकरीया आदिने प्रेरणात्मक प्रवचन दिए थे।



प.पू. महाराजश्री के स्वहस्त लिखी हुई पुस्तक 'वचनामृत में श्री नरनारायणदेव' का विमोचन किया गया।

पू. महाराजश्रीने स्वहस्त लिखी हस्तप्रत, प.भ. श्री कांतिभाई हिरदास पटेल (डांगरवाले अभी यु.एस.ए.) उत्सव में सातलाख रुपयों का दान दिया था। नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रतिनिधो और प्रतापपुरा के उत्साही युवक राकेशभाई के चौधरीने श्री नरनारायणदेव की गादी के प्रति वफादार रह कर चौधरी भाषा में अद्भुत उद्बोधन किया। माननीय श्री द्विवेदी साहब का सन्मान धर्मकुलकी तरफ से संतोने किया। जलयात्रा साम को ६-३० बजे संपन्न हुई।

ता. ६-४-२००४

श्री स्वामिनारायण नगर के पास निर्माण की गई मध्य यज्ञशाला प.पू. महाराजश्री के हाथों से और मथुरावीस वेद पुरुष शा.श्री वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदीजी आचार्य पद पर '१०८' कुंडी महाहरियाज्ञ महाविष्णुयाग का प्रारंभ हुआ। कथा पाराण के सथा विद्वान संतो के प्रवचन तथा मुख्य महेमान माजी मुख्य मंत्रीश्री केशुभाई पटेल, राज्य सभा के सभ्य ए.के. पटेल, उद्योग और खान मंत्री (जुल) श्री अनील टी. पटेल, माजी मुख्यमंत्रीश्री सुरेश महेता, विद्वान श्री वाचस्पति, के. का. शास्त्री, रामानंद स्वामी की गादी के पीठाधिपति कौशलकिशोरदासजी, राजड बाबो, सुनिलजी, महंत पू. ध्यानी स्वामी, कानजी भगत, डॉ. श्री जयदिप पटेल, बर्ल्ड बेंक के श्री मनुभाई पटेल, जनरल एस.एन. शेलत आदि अनेक महानुभावोने शुभेच्छा व्यक्त की थी। संस्कृत के विद्वान पंडितो का सन्मान हुआ था और ज्ञान और भावतीदीक्षा विचार पर चर्चा हुई थी। महाराजश्री ने सभी सत्संग समाज को मन्मान पत्र देकर सबको आशीर्वाद दिए थे।

ता. ७-४-२००४

प्रातः ७ से ९ मुख्य सभा मंडप में प.पू. महाराजश्री के मुख्य महेमान पद के लिए समूह महापूजा का

आयोजन हुआ । इस भव्य महापूजा का तीसनों यजमानों ने लाभ लिया । इस के बाद यजमानो तथा महानुभावो का प.पू. महाराजी के द्वारा 'श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण' लिखी हुई शाल, नरनारायणदेव की मूर्ति तथा फूल हाल से सन्मानित किया गया । श्री वाचस्पति मिक्षा द्वारा लिखित आचार्य प्रशस्ति पत्र पुस्तिका विमोचन वयोवृद्ध भाषाविद् के. का. शास्त्री के हाथों से हुआ । प्रो. फाधर मोरन्डो ने अंग्रेजी में वक्तव्य करके महाराजश्री को सच्चे गुरु का सन्मान दिया ।

उपस्थित महेमानो में स्वामिनारायण सिरीयल के निर्माता पोप सींगर श्री देवांग पटेल, सिरीयल में सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान का पात्र निभानेवाले विशाल पांडे,



सिरीयल के डायरेक्टर मूलराज राजग, जीतुभाई पटेल, रसिक भगत, ध्रांगध्रा के धारासभ्य आई. के जाडेजा, कौशिक पटेल, किंगसुख नाग साहब, राजकुमारदास खाखी आदिने हाजर रहकर महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त कीए थे ।

शोभायात्रा

दोपहर ३-३० बजे प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की श्री नरनारायणदेव तथा



घनश्याम महाराज के साथ भव्य शोभायात्रा कालुपुर मंदिर रोड, रीलीफ रोड, बीजलीघर, नहेरुब्रीज, आश्रमरोड, टाईम्स ओफ ईन्डिया, माउन्ट कारमल स्कूल, नवरंगपुरा चार रस्ता, स्वस्तिक चार रस्ता से होकर श्री स्वामिनारायण नगर में ७ बजे महोत्सव के स्थल पर बहुत धूमधाम से पहोंची थी । शोभायात्रा में २१ घोडे जिसमें सबसे आगेल के घोडे पर सहजानंद स्वामी अहमदाबाद मंदिर का प्रतिक तथा अहमदाबाद गादी के आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज से शुरु करके प.पू. बाल लालजीश्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराज तक धमकुल की तस्वीरे रखी गई थी । २२५ ध्वज के साथ कोटेश्वर गुरुकुल तथा कालुपुर, जेतलपुर, फुज-मूली आदि संतो के ३ रथ तथा एक यजमानश्री का ट्रेकटर, सहजानंद कोल्ड स्टोरेज की गादी, जायन्टस एम्ब्युलन्स वान, सहजानंद गुरुकुल असारवा के बच्चों की गाडी के उपर रास की मंडली तथा राजस्थानी भक्त की भजनमंडली आदि शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे ।

मार्गोपर रतनपोल और माणेक चोक कापड महाजन अह. सोनाचांदी दागीना महाजन अहमदाबाद ईलेकट्रीक बजाज आदि महाजनो, अह. झालावाडी समजा, भाजप तथा वि.हि.प के आगेवान, गादीनशीन आस्तानावाले एहमद बापु तथा विविध विस्तार के मुस्लिम समाज, कला निकेतन, कृष्ण आईस डेपो, किसान ज्वेलर्स, ज्वेलर्स एसो (स्वस्तिक चार रस्ता) चंदु टेलर्स, एन्ड क्लोर्यींग आदि अनेक संस्था-दुकोन के आगेवानो के तरफ से फूलहार द्वारा महाराजश्री का सन्मान किया गया । अनेक दुकानो ने हरिभक्तो के लिए ठंडे सरबत की सेवा की थी । २०० बहनोने कलश के साथ तथा अन्य १००० बहनोने धून-कीर्तन के साथ शोभायात्रा में अभिवद्धि की थी । प.पू. महाराजश्रीने सबी की



खुदकी सुवर्ण जयंती हो या षष्टि पूर्ति हो परंतु ऐसे महान भगवान के अपर स्वस्म निमांनी अंगवाले महान विभूति स्वस्म अपनी सुवर्ण से या प्लेटीनम से तुला न करवाते हुए, धर्मकुल में परंपरा के सर्वोपरि हरिकृष्ण महाराज की तुला स्वयं पू. राकेशप्रसादजी महाराज तथा पू. लालजी महाराजश्रीके साथ प्लेटीनम तुलाविधि कर रहे है।



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री।



बैल की जगह एक किसान भक्त ने साबरकांठा से कंधे परलाये पथ्थर में से बने हुए इस स्थंभ को श्रीहरि ने बाथ में भरा कर भक्त का कल्याण किया था। जीस दिव्य स्थंभ को मढा गया था। जिसका पूजन करते हुए प.पू. महाराजश्री।

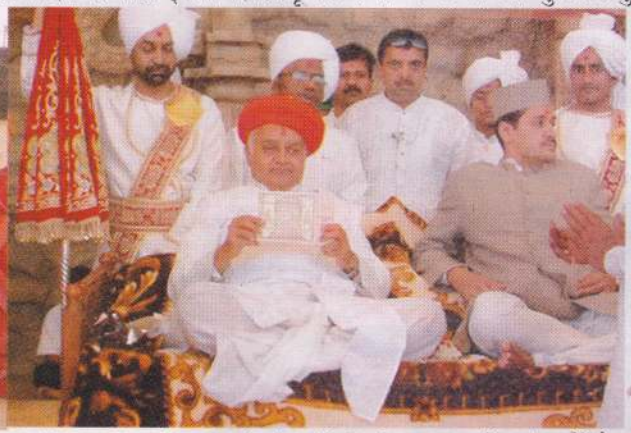






ष्टि पूर्ति महोत्सव के अवसर पर शहर के राजमार्गो पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराज
की लंबी शोभायात्रा इतनी शिस्तपूर्वक तथा भव्य थी की गुजरात पुलिस की शांति इतिहा





अहमदाबाद मं
समान षष्टि पूर्ति
तथा भ



दोनो देश (गादी) के आश्रितो को सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की सर्वोपरि
निष्ठा सहजपूर्वक समझाय इसलिए श्रीहरिके अपरस्वरूप स्वयं अपने करकमलो
मे लिखित ' वचनामृत में श्री नरनारायणदेव ' नामकी पुस्तिका लिख उसका
विमोचन करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।









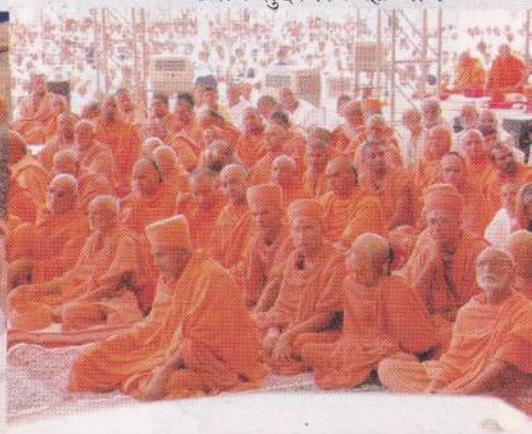
श्री, कई गाँव के सजाये हुए वाहन तथा घोडागाडी और उंटगाडी
स बन गई थी ।

राजस्थान के हरिभक्तों की उपस्थिती से समग्र
उत्सव सुंदर लग रहा था ।

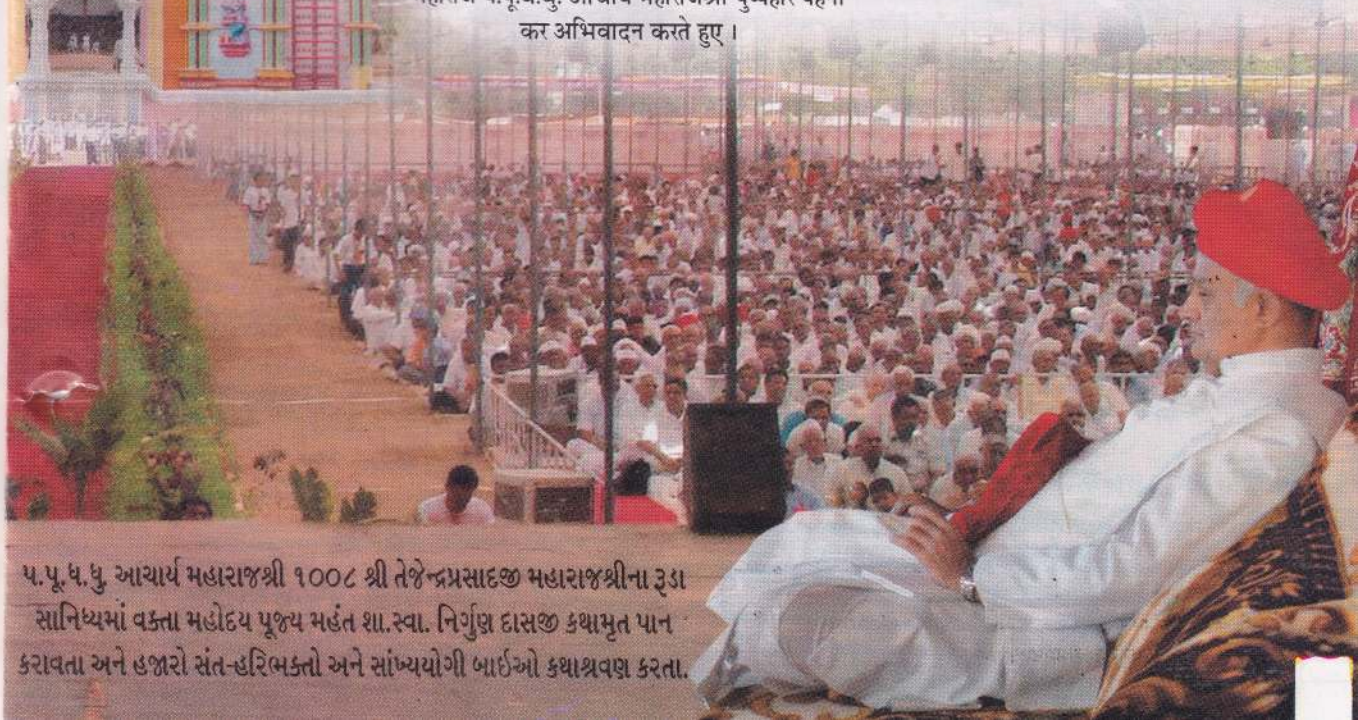
दर के भव्य प्रवेशद्वार की प्रतिकृति
महोत्सव स्थल का मुख्य प्रवेशद्वार
व्याति भव्य कथा मंडप ।







श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. राकेशप्रसादजी
महाराज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पुष्पहार पहना
कर अभिवादन करते हुए ।



પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના રૂડા
સાનિધ્યમાં વક્તા મહોદય પૂજ્ય મહંત શા.સ્વા. નિર્ગુણ દાસજી કથામૃત પાન
કરાવતા અને હજારો સંત-હરિભક્તો અને સાંખ્યયોગી બાઈઓ કથાશ્રવણ કરતા.



श्रीहरि के छठ्ठे और सातवे वंशज के कर कमलो द्वारा महापूजा विधि ।



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो द्वारा १०८ कुंड महाविष्णुयाग प्रारंभ ।

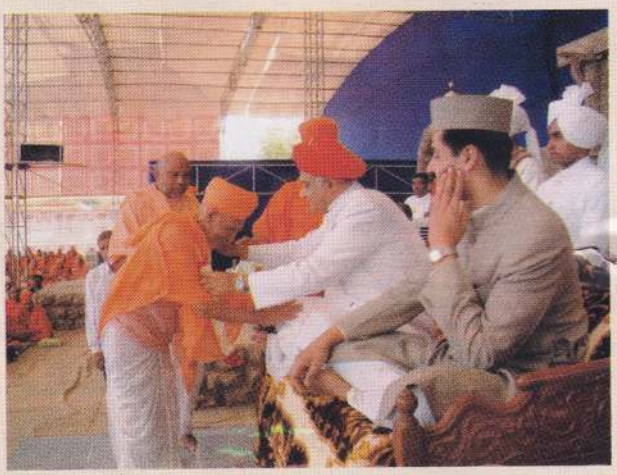




संत महादीक्षा मंत्र और गृहस्थ को गुरुमंत्र प.पू. आचार्य महाराजश्रीके कर कमलो द्वारा अपने संप्रदाय के शास्त्रो के अनुसार संप्रदाय में आचार्य महाराजश्रीने यह दोनो दीक्षामंत्र प्राप्त किया हो वही संप्रदाय का सच्चा आश्रित माना जाएगा ।



समस्त सत्संग की तरफ से पूज्य महंत स्वामी और संत मंडल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को परंपरागत 'सन्मानपत्र' अर्पित करके आशीर्वाद प्राप्त कर रहें है ।



षष्ठि पूर्ति महोत्सव में वयोवृद्ध संतो का सन्मान ।

प्रसन्नता करके सभी को दिव्य सुख दिया था ।

ता. ८-४-२००४

अहमदाबाद मंदिर पर प्रातः प.पू. महाराजश्री के हस्त से ६ से ७ बजे के बीच में श्री नरनारायणदेव तता सभी देवों का महाभिषेक वेदविधिवत हुआ था । उनके बाद शृंगार आरती और अन्नकूट के दर्शन हुए थे । प्रातः ९-३० बजे प.पू. महारजश्री के आशीर्वाद के साथ अखंडधून तथा यज्ञ की पूर्णाहूति की गई थी । सुबर १०-३० बजे पारायण की पूर्णाहुति होने के बाद ११-१५ बजे प.पू. बाल लालजी महाराजने बर्थ-डे केक काटकर प.पू. महाराजश्री को और श्री लक्ष्मीनारायण देव देश इस तरह से दोनो देस के आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के वरद् हस्तो से प.पू. महाराजश्री की पूजा में स्थायी परंपरा में प्रस्थापित हरिकृष्ण महारजा का प्लेटीनम तुलाविधि किया गया ।

भगवान के पुत्र और सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव देश के उत्तर विभाग के पीठाधिपति की प्लेटीनम तुलाविधि के महान प्रसंग रजन-सुवर्ण जयंती और षष्ठि पूर्ति महोत्सव इस तरह दो बार ऐसे भव्य प्रसंग के दर्शन करने को मिते । इस प्रसंग पर सभा में महानुभाव मेहमानो में महामंलेश्वर नित्योगोपालदासजी, शंकरसिंह वाधेला, रजनीभाई पटेल, मुस्लिम समाज के आगेवान, भाविन शेठ, लालकृष्ण आडवाणी के पुत्र श्री जयंत आडवाणी, बहेनो की सबा में उनकी पत्नी कमलाजी और पुत्री प्रतिभा उपस्थित थे । वडताल श्री लक्ष्मीनारायण देव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराज, प.पू.ध.धु. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को सोने का हार पहनाकर अभिवान कर रहें थे । अ.नि. शा.स्वा. देवचरणदाजी के शिष्य मंडलने प्रसादी के संग्रहस्थान के लिए १९ प्रसादी की चीजे तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी) और अनेक संतोने अपने पास रखी हुई प्रसादीकी पीछे प.पू. महाराजश्री को समर्पण की थी । अहमदाबाद देश के तथा वडताल देश के अग्रगण्य विद्वान संतोने प्रासंगिक प्रवचन दीए थे ।

इस महोत्सव में अमेरिका, इग्लेन्ड, केनेडा, बेंगकोक, ओस्ट्रेलीया, न्यूझीलेन्ड, आफ्रीका और दूबई । सहमीज इस्ट में से ३००० तथा हरिभक्त भी पधारें थे ।



इस उत्सव में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से चलते नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्योने सभी सेवा समितिओं से जुडे थे । सम्राट नमकीन की तरफ से उत्सव से पहले ग्राउन्ड पर सेवा करने आनेवाले को, उत्सव के समय पर

हररोज सुबह स्वयंसेवको को और शोभायात्रा में भी नरमकीन, चीकी, नास्ता (प्रसाद) के रुप में मूल्य के बीना बाँटा जाता था ।

प्रदर्शन विभाग में श्रीहरि के चरित्रो, उपदेसो तदा प.पू. महाराजश्री के जीवनकाल की स्मृति की तस्वीरें रखीं गई थी । प.पू. महाराजश्री की जीवनयात्रा से उन्होंने सत्संगा और समाज को दीए योगदान से बहुत प्रभावित थें । और विशिष्ट महानुभाव और प्रतिष्ठित नागरिकोने इसे प्रसंग के पदर्शन करके अपने आप को धन्य मानने लगे थे ।

इस महोत्सव में पधारे हुए अन्य महानुभावो में धारासभ्यश्री बाबुभाई जमनादास पटेल । नटुमामा पटेल, श्री घनश्याम जोषी, श्री दिनेश रावल, श्री धीरुभाई एन. पटेल, वि.हि.प. के प्रमुखश्री चीनुभाई पटेल, उद्योगपति निरमा अध्यश्री करशनभाई केप टेल आदि नामांकित उद्योगपति, शिक्षणविदं, और सरकारी अधिकारीओ ने पधारकर प.पू. महाराजश्री तथा संप्रदाय के प्रति अपनी शुभ भावना प्रकट करके महाारजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

इस प्रसंग पर वडताल से नौतम स्वामी, बालकृष्ण शास्त्री स्वामी तथा वडताल, जूनागढ, गढडा, धोलका, भूज, मूली, धोलेरा, सालंगपुर, सुरत, जामजोधपुर, लोज आदि धामों धाम से संत इस प्रसंग पर उपस्थित हुए थें । अहमदाबाद मंदिर के भूलपूर्व महंत स.गु. पुज्य शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामीने महोत्सवका अद्‌भूत और सुंदर सभा संचलान का कार्य किया था ।

हररजो एक लाख जितने लोग महोत्सव के दर्शन कथा श्रवण 'स्वामिनारायण' नाम संकीर्तनरुपी भजन तथा भोजन के रुप में महाप्रसाद प्राप्त किया था । भोजन में कोईभी प्रकार के वास के बिना तथा कई भी



भेदभाव के बीना सुबह-साम, सुंदर भोजन-नास्ता दिया जाता था । कथावार्ता सुनने के लिए संत पैसे नहीं लेते । इसिलिए ऐसी कथा जीवन में अवश्य ग्रहिन होती है । बडे मंदिरो में भूखे लोगों के लिए भोजन के सेवा देने का व्रत श्रीजी महाराज के समय से चालु है ।

महोत्सव के समय पर हररोज रात्री को नामांकित कलाकारो द्वारा सांस्कृतिक कार्यकर्म, भजन, कीर्तन, रास-गरबा, नृत्य आदि का आयोजन होता था ।

डीडी-१, डीडी-२ तता ई.टी.वी. द्वारा महोत्सव का प्रतिदिन प्रसारण किया जाता था । तथा सभी समाचार पत्र में तथा लेखो मों यह सब फोटों के साथ प्रसारित किया जाता था ।ट

इस महोत्सव के दरमियान अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के देश-विदेश में ९०० वंश परंपरागत सभ्य बने थे । उत्सव दरम्यान सभी सभ्यों कों अहमदाबाद मंदिर के तरफ से 'श्री मुक्तानंद काव्य' नामकी पुस्तक प्रथम १०० सभ्यों को वहेलाल मंदिर की तरफ सें 'नवधाम कीर्तन' पुस्तक भेट स्वरुप दिया गया था ।

महोत्सव की कलश्रुति के रुप में स्थल पर आनेवाले अनेक को संप्रदाय का गुण सजाया गया । धर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य में लोग आगे बढ़े । गादी परत्वे की निष्ठा विशेष शक्तिशाली बनी । धून, कथा-श्रवण, यज्ञ, महापूजा, आदि साधनो को शास्त्रो में महिमा लिखी गी । सभी को अपने अंग से कोई न कोई स्वरुप में श्रीजी महाराज और नरनारायणदेव का आसीर्वाद और प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा संतसमागम का लाभ मिला । इस महोत्सव का अंतिम समय में किसी जीवन को स्मरण होगा तो वह अवश्य ही परमपद को प्राप्त करेगा । यही महोत्सवो का शुद्ध और यथार्थ हार्द है ।

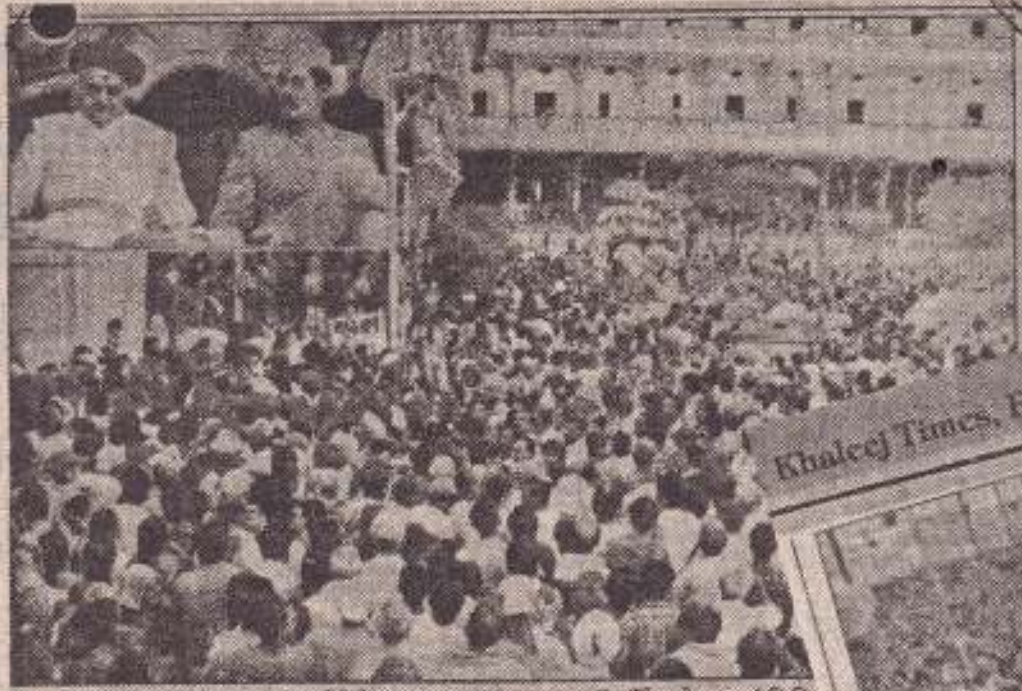
सत्संगिभूषण कथा के वक्ता स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी स्वामी के विचार मौक्तिक



कथा पारायण के वक्ता पूज्य महंत शास्त्री स्वामीश्री निर्गुणदासजी स्वामी के मुख से मोती के जैसे आशीर्वाद के वचन:

- कोई भी भगवान को धोखा दे तो वह खुद ही धोखा खा कर परेशान परेशान हो जाता है ।
- भगवानको कोई मारने आये तो उसे खुद ही मरना पडता है ।
- कोई भगवान को धन-संपत्ति अर्पण करता है तो उसके वहॉ धन की बढ़ौतरी होती है ।
- भगवान को खिलाता है तो उसे भी भोजन मिलता है ।
- धर्ममार्गमें से चलित होजाए तो धन चला जाता है, संपत्ति चली जाती है, सत्ता चली जाती है, जीवन परेशान हो जाता है ।
- वृद्धावस्था होने पर भी भक्तिहीन आत्मा को भगवान में विश्वास नहीं होता है, मंदिर नहीं जा पाते ।
- थोड़ी सत्ता मिले, थोडा लेबल मिले तो जगमें बहुत पावर आ जाता है और कितनो का ही अपमान कर देते है . सामने मृत्यु दिखती है तो भगवान की याद आ जाती है, तब तक तो ऐसा ही लगता है कि मुझे कहॉ कीसी की जरुरत है ?
- एकादशी का व्रत - उपवास मनुष्य पर भगवान की कृपा द्रष्टि के लिए होता है । परमात्माके प्रभावसे जीव के जन्म जन्मांतर के पाप जलकर भस्म हो जाते है ।
- परमात्मा के नाम का उच्चार करनेवाले मनुष्य के जन्म की सार्थकता है ।
- पाप साथ होता है तब तक शुद्ध भक्ति नहीं होती । परंतु दंभ होता है । आडंबर होता है । जगत को धोखा देने का मतलब है कपट ।
- जीव जब परमात्मा की शरण में जाता है तभी उसे जामुन जैसे मीठे फल की प्राप्ति होती है ।
- कपटी सत्संग में टिक नहीं शकता . कामी, क्रोधी, लोभी टिक जाते है । कपटी को भगवान की कृपा नहीं मिलती ।
- छपैया के खांपा सरोवर में स्नान करने से खून के विकार चर्मरोग तत्काल नष्ट हो जाते है । मीन सागर में स्नान करने सें अंत:शत्रु मान का नाश हो जाता है । छपैया की रज सिर पर लगाने से अक्षरधाम की प्राप्ति होती है ।
- जब भगवान को भूल जाते है, तभी दु:ख आता है ।
- माता-पिता का ऋण देहधारी पर अपार है । मनुष्य जब तक इस ऋण को चुकाता नहीं है । तब तक उसे सत्कर्म का फल नहीं मिलता ।
- अंत:शत्रु को जब तक जीत नहीं शकते तब तक हृदय में भगवान का वास नहीं होता ।
- त्यागी होकर श्रीजी महाराजके स्थापित देव और आचार्य के साथ आध्यात्मिक संबंध न जोड़े तो धोबी के कुत्ते तरह जैसी स्थिति है, न घर का न घाट का । भौतिक संबंध श्री नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायणदेव के साथ न जुडा हो तो संबंध तूट जातें है । लाईट न हो इसिलिए नहीं होती है ।
- दूसरों को उपदेश देना हो तो घंटो तक भी दे शकतें है परंतु अपने जीवन में उतारना हो तो कठिन लगता है ।

उत्सव समैया में धन खर्च का और सभी महेमानो का सन्मान करने का मुख्य एक ही हेतु है कि कुछ भी करके सभी को सत्संग का गुण प्राप्त हो और सभी के जीव का कल्याण हो । वह जीव भगवान के साथ जुडकर परम पद को प्राप्त करे ।



કાલુપુર સ્વામિનારાયણ મંદિ...
અતિભવ્ય શોભાયાત્રા યોજા...

અમદાવાદ, બુધવાર

આચાર્ય ૧૦૦૮ તેજેન્દ્ર પ્રસાદજી મહારાજના ષષ્ઠિપૂર્તિ મહોત્સવના છઠ્ઠા દિવસે ૭/૪ના રોજ ૩૫૦૦ મહાપૂજા આચાર્ય મહારાજની નિશ્રામાં યોજાઈ હતી. ઉપરાંત આજે આ મહોત્સવના ...

प. पू. तेजेन्द्रप्रसाद की षष्टिपर्ति ... समारोहों की शुरुआत

... यू.एस.ए. के रमेशभाई मारफतिया तथा अन्य यजमानों ने आचार्य महाराजश्री की आरती उतारी। इस अवसर पर प. पू. तेजेन्द्रप्रसादजी ने आर्शीवाद देते हुए कहा कि ...गवान श्री ...मीनारायण ... जन्मदिवस है। ...यह महोत्सव हमारा नहीं ...ायण का है। इसके माध्यम से ... श्री स्वामीनारायण का संदेश ... जेतलपुर के ब्राह्मण छात्रों ने ...किया। कालुपुर के महंत ...र्गुणदासजी ने कथा की ...ी।





LONG, LONG GARLAND: Devotees carry a 61-feet garland to put on Tejendra Prasadji, religious head of Lord Swaminarayan sect during the 60th birthday celebrations of Tejendra Prasadji in Ahmedabad on Thursday. — AP

Khaleej Times GULF

प. पू. तेजेन्द्रप्रसाद महाराज की षष्ठीपूर्ति समारोह के दूसरे दिन महिला सम्मेलन

अहमदाबाद, ३ अप्रैल (संवाददाता)। प. पू. आचार्य श्री तेजेन्द्र प्रसाद महाराज की षष्टि पूर्ति महोत्सव के दूसरे दिन महिला सम्मेलन एवं सी.डी. का विमोचन हुआ। आचार्य महाराज श्री तेजेन्द्रप्रसाद जी के जीवन पर आधारित सी.डी. का विमोचन लालजी महाराज ने किया। कथा के अंतर्गत आज भगवान स्वामीनारायण का जन्मोत्सव, शिवजी, हनुमानजी सहित विविध वेश भूषा में रासनृत्य का आयोजन किया गया।

कृषिमंत्री श्री भूपेन्द्रसिंह चूड़ासमा ने तेजेन्द्रप्रसाद जी की दीर्घायुकी कामना कर उनका आर्शीवाद प्राप्त किया। कथा वक्ता श्री निर्गुनदासजी महाराज ने छापैया में भगवान स्वामीनारायण के बाल चरित्र, उनके बड़े भाई रामप्रसाद का सुहासिनी के साथ विवाह वगैरह की कथा की। आज यहां महिला सम्मेलन आयोजित किया गया। बहुजी महाराज की अध्यक्षता तथा शिक्षा मंत्री आनंदी बेन पटेल की निश्रा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प. पू. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसाद जी महाराज ने लोगों को सदाचारी बनने का अनुरोध किया। कार्यक्रम के दूसरे दिन आज हजारों छात्र उमड़ पड़े थे।

અમદાવાદ, સો... ૨૦૦૪ | દિવ્ય ભાસ્કર



ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવમાં ૧૫૧ બટુકને યજ્ઞોપવીત

ભાસ્કર ન્યૂઝ, અમદાવાદ, ૪ એપ્રિલ

શહેરમાં યુનિવર્સિટી ગ્રાઉન્ડ ખાતે ચાલી રહેલ ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવમાં ૧૫૧ બટુકને યજ્ઞોપવીત આપવાનો કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. જેમાં આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીએ બટુકોને આશીર્વાદ આપ્યા હતા અને બાળલાલજી મહારાજે બટુકોને કંઠી પહેરાવી હતી. રાયખડ, અમદાવાદ મુસ્લિમ સમાજના આગેવાનોએ મહોત્સવમાં પધારી આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીનું અભિવાદન કર્યું હતું. રવિવારે યોજાયેલ રક્તદાનમાં પણ મુસ્લિમ ભાઈઓએ રક્તદાન કર્યું હતું. જેમાં કુલ ૬૦ બોટલનું રક્તદાન થયું હતું.

તા. ૬ઠ્ઠી એપ્રિલના રોજ વી.પ્ર. બટુકોને સવારે ૯ કલાકે યજ્ઞોપવિતના કાર્યક્રમનું આયોજન કરાયું હતું અને તા. ૭મીના રોજ સમૂહ મહાપૂજા સવારે ૭-૦૦થી ૯-૦૦ દરમિયાન યોજાશે. તા. ૮મીના રોજ શ્રી નરનારાયણ દેવનો મહાભિષેક સવારે ૬-૦૦થી ૭-૦૦ કલાકે, અન્નકૂટ સવારે ૮-૩૦ કલાકે યોજાશે.

...નારાયણ ભગવાનના છઠ્ઠા વંશજ

આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદ મહારાજના ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવનો આજથી આરંભ



અમદાવાદ, શુક્રવાર ૯ એપ્રિલ, ૨૦૦૪ | **દિવ્ય ભાસ્કર**



કાંકરિયા ખાતે આવેલા સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના મંદિરના ૨૫મા રજત જયંતી પાટોત્સવ નિમિત્તે બુધવારે પ્રાસંગિક સભા બાદ શ્રીહરિનાં અન્નકૂટ દર્શન સાથે જ આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ ખાસ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. — મનીષ મિસ્ત્રી



કાલુપુર સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીના અંદર રહેલા કલાકાર જીવે નિજાનંદ ખાતર દસ વર્ષથી છબીઓ ઝડપવાની શરૂઆત કરી અને એમનું હૃદય એમને કુદરતના સાન્નિધ્યમાં લઈ ગયું.. અને લીલાછમ વૃક્ષો, ખેતરો, ગામડાની ગોંદરેથી પસાર થતું ગાડું ગિરિકંદરા હિમાલય, એમ સંખ્યાબંધ કચકડામાં કેદ થયેલી આધ્યાત્મિક તસવીરોને પણ ખબર નહોતી કે અમદાવાદના હઠીસિંહ વિઝ્યુઅલ આર્ટ ગેલેરીમાં ફોટો પ્રદર્શન યોજાશે. હમણાં જ ઉજવાઈ ગયેલી સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના ગાદીપતિ આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીની ષષ્ટીપૂર્તિના છેલ્લા દિવસે આ પ્રદર્શનનું આયોજન કરવામાં આવ્યું છે. આમ તો શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજીના મસ્તકે લાલપાઘડી શોભતી હોય છે. પરંતુ ફોટો પ્રદર્શનના ઉદ્ઘાટન ટાણે તેઓ આચાર્ય મટી જઈને એક ફોટોકલાકાર બની જઈને ઉપાડ માટે આવ્યા હતા. જાણે કે 'બેસ્ટ સીનીયર ફોટોગ્રાફર' આચાર્ય શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી આ છબીમાં એમની તસવીરોની ઓળખાણ કરાવી રહ્યા છે. છતાં એમણે અહિં ઉપસ્થિત કલારસિક પ્રેક્ષકોને કહી દીધું કે મારી કૃતિઓ વિષે મને માર્ગદર્શન કે સૂચનાઓ આપી શકો છો. (ફોટો : ઝવેરીલાલ મહેતા)

અમદાવાદ, ગુરૂવાર ૮ એપ્રિલ, ૨૦૦૪ | **દિવ્ય ભાસ્કર**



હઠીસિંહ વિઝ્યુઅલ આર્ટ સેન્ટરમાં શરૂ થયેલા ફોટોગ્રાફી પ્રદર્શનમાં છેલ્લા નવ વર્ષની તેજેન્દ્રપ્રસાદજીએ ખેંચેલી તસવીરો મૂકવામાં આવી છે. તેમાંથી ડિસ્પ્લે કરાનારી પ્રિન્ટોને તેઓ બારીકાઈથી તપાસી રહ્યા છે. - દિલીપ ઠાકર

તેજેન્દ્રપ્રસાદજીની આધ્યાત્મિક અને કુદરતી તસવીરોની સફર

ભાસ્કર ન્યૂઝ, અમદાવાદ, ૭ એપ્રિલ

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના ગાદીપતિ આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીની ષષ્ટીપૂર્તિની ઉજવણી ચાલી રહી છે. જનોઈ, શોભાયાત્રા, ધાર્મિક પ્રવચનો ચાલી રહ્યાં છે. આ બધાંની સાથે એક અનોખો કાર્યક્રમ પણ યોજાયો છે. આધ્યાત્મ અને કલાનો સંગમ!! તેજેન્દ્રપ્રસાદજીએ કેમેરાની આંખે જોયેલી પ્રાકૃતિક આધ્યાત્મિક સુંદરતાને પ્રદર્શનરૂપે આજથી જાહેરજનતા જોઈ શકશે.

હઠીસિંહ વિઝ્યુઅલ આર્ટ સેન્ટરમાં આજથી શરૂ થનારા તેજેન્દ્રપ્રસાદજીના ફોટોગ્રાફી પ્રદર્શનમાં નવ વર્ષથી માંડીને અત્યાર સુધી ખેંચેલી તસવીરોમાંથી પસંદ કરેલી ૯૦ જેટલી તસવીરો આ પ્રાર્થનામાં મુકાશે. બે દિવસ પહેલાં યુનિ. મેદાનમાં ચાલતા તેમના ઉત્સવમાં બપોરના સમયે ડિસ્પ્લે કરાનારી પ્રિન્ટોને બારીકાઈથી તપાસતાં તેમને જોવાનો અનેરો લ્હાવો હતો.

બાળપણથી જ ઘરમાં કલા ને સંગીતનું વાતાવરણ હતું. પંડિત ઓમકારનાથ ઠાકુર અને ઉસ્તાદ ફૈયાદખાનના તેઓ વિશેષ ચાહક હતા. સેન્ટ ઝેવિયર્સ કોલેજના અભ્યાસકાળ દરમિયાન સાહિત્યમાં પણ તેઓ ઊંડો રસ ધરાવતા થયા હતા.

હમેશાં નાનપણથી કેમેરાનો

કળા અને આધ્યાત્મ

- તેઓ અભ્યાસકાળ દરમિયાન સાહિત્યમાં રસ ધરાવતા હતા
- ફોટોગ્રાફીનો શોખ ૬૦ વર્ષની ઉંમરે પણ યથાવત્

સામનો કરતા તેજેન્દ્રપ્રસાદજીને કેમેરા પાછળ રહીને 'કુદરત'ને ક્લીક કરવાનો શરૂથી જ શોખ હતો. ૪૫ રૂપિયામાં ક્રોનિકાનો કેમેરા ખરીદીને ફોટોગ્રાફી શરૂ કરી હતી. તે શોખ હજુ ૬૦ વર્ષે પણ બરકરાર છે. હાલમાં સૌથી મોંઘી બ્રાન્ડ 'લાઈકા'નો કેમેરા તેમની પાસે છે. ''લાઈકા કેમેરા મારી પાસે હોય એ મારું સપનું હતું. જે આજે સાકાર થયું છે. જેનો મને ખૂબ આનંદ છે.'' ફોટોગ્રાફીના મેગેઝિનો તથા પોતાના ફોટોગ્રાફનો નિયમિત અભ્યાસ પણ તેજેન્દ્રપ્રસાદજી કરતા રહે છે. ફોટોગ્રાફીની દુનિયા સાથેનો નજીકનો સંપર્ક સતત તેમણે જાળવી રાખ્યો છે.



આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદની ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવનો પ્રારંભ

ભાસ્કર ન્યૂઝ, અમદાવાદ, ૨ એપ્રિલ

આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીની ષષ્ઠીપૂર્તિ મહોત્સવનો શુક્રવારે સવારે યુનિવર્સિટી ગ્રાઉન્ડ, ડ્રાઈવઈન રોડ ખાતે પ્રારંભ થયો છે. સમગ્ર મહોત્સવ જે સ્થળે યોજાયો છે, તેને સ્વામિનારાયણનગર નામાભિધાન કરવામાં આવ્યું છે. તેના પ્રવેશદ્વારનું ઉદ્ઘાટન સવારે આચાર્ય તેજેન્દ્રપ્રસાદજીએ કર્યું હતું.

આ પ્રસંગે લાલજી મહારાજ, બાળ લાલજી મહારાજ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. રવિવારે બ્રાહ્મણ બટુકોને યજ્ઞોપવીત અપાશે. તા.૮મી એપ્રિલ સુધી ચાલનારા આ મહોત્સવમાં પ્રથમ દિવસે [illegible] દીપ પ્રાગટ્યથી પ્રારંભ થયો હતો. સવારે પોથીયાત્રા નારણપુરાથી નીકળી કથાસ્થળે આવી હતી. આ જ્ઞાનયજ્ઞ દરરોજ સવારે ૯.૦૦ થી ૧૨.૦૦ અને બપોરે ૩.૩૦થી ૬.૩૦ સુધી યોજાશે.

સાત દિવસ ચાલનાર આ મહોત્સવમાં સ્વામિનારાયણ મહામંત્રની અખંડ ધૂનનું આયોજન થયું છે તથા ભગવાન સ્વામિનારાયણનું જીવન, સંપ્રદાયના મંદિર તથા તેજેન્દ્રપ્રસાદજીએ પાડેલા ફોટા પ્રદર્શનમાં રજૂ થયા છે. જેમાં તેઓના પૂજા કરતા, ક્રિકેટ રમતા વગેરે અત્યાર સુધી અપ્રદર્શિત ફોટાઓ દર્શાવવામાં આવ્યા છે. આ પ્રસંગે રાજ્યભરમાંથી [illegible]

प.पू. महाराजश्री के क्षणिक समागम से

गेरी बना गोविंद ।

- महंत स्वामी मुकुंदप्रसादासजी - मूली

युरोप लंडन के स्ट्रेधाम शहर में प.पू. महाराजश्री की शोभायात्रा की विशाल जनमेयनी और वाजीत्रो के नाथ, शरणाईके सूर और संत-हरिभक्तो के कीर्तन के गान के साथ रस्ते पर से मीकल रहें थे । इस शोभायात्रा के दर्शन करने के लिए और भारतीय संस्कृति की परंपरा को देखने अनेक स्थानिक लोग भी जड़ गए थे । जिसमें जमैका देश का नागरिक लंडन में नौकरी कर रहे गैरी नामक व्यक्ति प.पू. महाराजश्री के दर्शन करके अपनी जात को धन्य मानने लगा ।

प. पू. महाराजश्रीके दर्शन करते ही उसने प.पू. महाराजश्री में श्रीहरिके ऐश्वर्यकारी दर्शन हुए और मंदिर आकर प.पू. महाराजश्री के समक्ष अपना जीवन अर्पण कर दिया । और प्रार्थना कि की मुझे अपनी परंपरा के अनुसार संत दीक्षा देकर मुझे साधु बना दिजीए । में आपका दास बनकर आजीवन सेवा करना चाहता हूँ । प.पू. महाराजश्रीने उसे गृहस्थाश्रम में रहकर भजन करने की आज्ञा दी और गेरी नाम में से गोविंद नाम धारण करवाया । ऐसा ऐश्वरर्य प.पू. महाराजश्री का है कि जिन के दर्शन मात्र से ही गेरी गोंविद बन गया । जय जय हो ऐसे ऐश्वर्यशाली पू. महाराजी और धन्य हो ऐसे गेरी को कि जिसने गोविंद नाम धारण करके सत्संग को प्राकाशित किया ।

षष्ठि पूर्ति महोत्सव उपलक्ष्य में आयोजीत आरोग्य लक्षी केम्प

विश्व वंदनीय प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में संवत २०६० में हुए नि:शुल्क मेडीकल केम्प

(क)	ब्लड डोनेशन केम्प	१२	(ख)	नाक कान गले रोग के केम्प	०३
(ग)	चमडी रोग निदान केम्प	०२	(घ)	हृदय रोग केम्प	०६
(ज)	सर्वरोग निदान केम्प	१८	(छ)	डायाबीटीस केम्प	०६
(ज)	बालरोग निदान केम्प	०२	(झ)	नेत्र रोग निदान केम्प	०३
(ट)	हड्डी के रोग निदान केम्प	०३	(ठ)	स्त्री रोगनिदान केम्प	०१
(ड)	आयुर्वेदिक निदान केम्प	०१			

(१) षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में अब तक १६२४० हरिभक्त तथा रोगियो का निदान तथा जरुरी रोगीयो को दवादी गई थी। (२) पूरे वर्ष के दौरान २७०० डायाबीटीस के रोगी की जांच कर नि:शुल्क दवाई दी गई थी (३) वर्ष के दौरान १०० रोगीयो का हृदय रोग के लिए अनीवार्य २ कार्डियोग्राम तथा केकडे की जांच जैसे पल्मानरी टेस्ट नि:शुल्क किया गया (४) वर्ष के दौरान १०६० रोगीयो का कार्डियोग्राम नि:शुल्क नीकाला गया तथा दवाईया भी दी थी । (५) इस वर्ष दौरान ३८७३ हरिभक्तो ने ब्लड डोनेशन केम्प में रक्तदान किया था । तथा रेडक्रोस तथा प्रथमा ब्लड बेन्क में रक्तदान कर राज्यपालश्री के कमलो से सर्वश्रेष्ठ रक्तदान के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर को एवोर्ड मिला था । तथा प्रमाणपत्र मिला था । (६) डाकोर जाते पदयात्री को २४ घंटे एकादशी से पूनम तक सर्वरोग निदान केम्प में मुफ्त दवाई दी गई थी । तथा मोबाईल मेडीकल वान द्वारा भी दवाई दी गई थी । (७) प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के ६० डॉक्टरोने एक वर्ष के दौरान महिने में पांच दिन कन्सल्टींग दवाखाना में नि:शुल्क निदान तथा दवा दी थी । (८) जून २००३ में बद्रिनारायण मंदिर (उत्तराचल) में चार दिन सेवा दी गई थी

षष्ठी पूर्ति महोत्सव में दि. २-४-२००४ से ८-४-२००४ तक श्री स्वामिनारायण नगर में आरोग्य लक्षी केम्प २४ घंटे किये थे । तथा ६००० हरिभक्तो ने दवाई प्राप्त की तथा ६०० हरिभक्तो ने रक्तदान किया था । इस आरोग्य समिति में डॉ. रमेशभाई परीख, डॉ. कनुभाई एस. पटेल, डॉ. भाविन परीख, डॉ. पी.सी.रावल, डॉ. भरतभाई पटेल, डॉ. हर्षदभगत, डॉ. दशरथभाई पटेल तथा डॉ. योगीनी बहन परीख, डॉ. उषाबहन परीख, सभीने सुंदर सेवा कर धर्मकुल तथा श्रीहरि को प्रशन्न किया है ।

पू.धु.आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीनो षष्ठीपूर्ति महोत्सव

"षष्ठीपूर्ति महोत्सव" में आशीर्वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा, हीरावाडी-बापुनगर

"हम श्री नरनारायणदेव के आश्रय में रहतें हैं। अपनी रीत दुनिया से निराली है। नरनारायण देव की जन्मजयंती वास्तव में विजय जयंती है। इस दिन हम दिव्य चेतना के रंग से रंगे हुए होते है। बाल लालजीने एक बार महाराजश्री से पूछा था, दादा ! यह हनुमानजी की मूर्ति न तो खडी है न तो बैठी है ! ऐसा क्यूँ ? दादा भी थोड़ी देर तक सोच में पड गए पी.पी. स्वमी को टेलीफोन किया। पी.पी. स्वामीने कहा, "हनुमानजी राम के सेवक थे। इसलिए सदैव वे उनकी सेवा के लिए एक पाँव पर खडे रहते थे।" सभी हनुमानजी का दर्शन करतें हैं। मन्नत मानतें है। भूत भगाते हैं ।प रंतु ऐसा किसीने भी नहीं सोचा होगा। यह तो नरनारायणदेव की फौज है। जब जरुरत पडे तब प्राण न्योछावर करने को सदैव तैयार रहना चाहिए ।

नरनारायणदेव अपने लिए अखंड तप करतें है। इसीलिए हम सुखी हैं। सांझ होते ही फूटी कोड़ी भी न पाने पाले नरनारायणदेव के आश्रय से लखपति बनते हैं। और श्री नरनारायणदेव का आश्रय छोडकर कहीं दूसरे स्थान पर जायेंगे तो लखपति से रंक बन जाएगे। आश्रय की दृढता होनी चाहिए। सत्संग के लिए क्या नहीं हो शकता ? आज नरनारायणदेव की प्रसादी को प्रार्थना करतें है कि उपरोक्त भावना सदैव प्रज्वलित रहे।"

(ता. ७-३-२००४ षष्ठि पूर्ति विजय स्तंभ स्थापना प्रसंग की सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री)

"संतोने और सभीने हमारी प्रशंसा की। परंतु यह उत्सव हमारे पद का उत्सव है। व्यक्तिगत नहीं. महाराज का अखंड स्मरण करना ऐसा उत्सव समैया का हार्द फलश्रुति होने के कारण ऐसे उत्सव हर दो-तीन वर्षो में करने चाहिए।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री
(महोत्सव के उद्घाटन समय पर)

"महाराज के सबी चरित्रो में



गहरा रहस्य होता है। महाराज छपैया में से नीकले तब कुछ लोग महाराज की ईर्ष्या करते । महाराजने उनका कुछ बिगाडा नहीं था फिर भी बाधा रुप बनते । इसिलिए महाराज भीऐसे आसुरी तत्वो को ठीकाने लगाते। ऐसे आज भी हम अगर किसी को भी बाधा रुप होतें हो तो, वैसे लोग ईर्ष्या करके हमें बाधारुप बनतें है। अवरोधक रुप होते हैं। तब महाराज ऐसा संकेत देते हैं कि उनको हम देख लेंगे ।"

(प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री (महोत्सव के प्रसंग पर २-४-२००४ के दिन हरिभक्तो को संग्रहस्थान के बारे में प्रोत्साहित करते समय)

कंठी अपना मंगलसूत्र है । सगे संबंधि भगवान के भक्त हैं। इस सभा में कोई कच्छी, काठियावाडी, गुजराती, पोत, चौधरी वाघरी या ब्राह्मण होंगे । परंतु सबसे बडी बात सत्संगिओं की है । तिलक-चंदन ही चिह्न है। वही भाग्य है। संप रखना। एकता रखना । सेवा करना । वही लाभ का मौका है। हम तो यजमान है । दूसरे महेमान है । आप सब पर महाराज बहुत प्रसन्न रहें । आपको सुखी बनाए ऐसी नरनारायमदेव से प्रार्थना । हमने सोचा कि इतने बड़े हरिभक्तों को क्या देना चाहिए निश्चय किया कि महाराजश्री के हस्ताक्षरों वाला प्रमाण पत्र । साइड पर से रात को घर गए । रात की डेढ़ बजे महाराजश्री को उठाया। महाराजश्रीने कहा क्यों अभी ? हमने कहा, एक संकल्प हुआ है । उत्सव के समय इन युवकोको सेवा करते देख हम बहुत प्रसन्न हुए है। इसिलिए आपके हस्ताक्षर वाला पत्र कल सबको देना चाहतें है । महाराजश्रीने रात्री के डेढ़ बजे पत्र लिखा । लिखकर भगवान का बल रखने को कहकर उन्होंने कहा कि, "हमको भी सेवा करते हुए देखकर सब पर बहुत प्रसन्नता होती है ।" छोटी-छोटी सेवा से भगवान बहुत प्रसन्न होते है । यह एक बहुत बड़ी फोज है। महाराजश्री को इस फोज के साथ अपनापन जैसा भाव है। हमको गर्व है कि अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हमारे पिता है। आपको जो मिला वह किसी कोभी नहीं मिला । आप सभी को भगवान सुखी रखें ऐसी श्री नरनारायणदेव से प्रार्थना ।

प. पू. लालजी महाराजश्री (दि. ८-४-२००४)

"अशोकभाई (धारासभ्य) ने कांकरिया के बारे में सुंदर बात कही है । उस पर से एक प्रसंग की बात याद आती है। पुराने इतिहास में कांकरिया सरोवर अपने मंदिर की मालिकी का सरोवर था । जब इस सरोवर को (अ.म्यु.कोर्पो.) को देने के लिए निश्चित हुआ उस समय आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजने शरत रखी थी कि, "इस सरोवर में से कोईभी मछलीयाँ मारी न जांय या उसे पकडा न जाय ।" इस विषय में एक पुराना लेख है जिस पर से संशोधनात्मक लेख तैयार करना है। जो एक रसप्रद बन जाएगा ।

संतो और हरिभक्तोने हमारे लिए बहुत शुभेच्छाए व्यक्त की उसके लिए सभी को धन्यवाद । हम भी सबको कुछ देना चाहते हैं कच्छ में नन्द संत विचरण कर रहे थे एक छोटे से बालकने संतो की खूब सेवा की । संतोने बालक से कहा, कुछ मांग । बालक बहुत चतुर था । उसने मांगा कि, "आपको जो सबसे प्यारा हो वह मुझे दे दो । संतो को सबसे ज्यादा प्यारे भगवान होते है। इसिलिए बालक को भगवान दिए । निरावरण द्रष्टि दी । वही बालक बड़ा हुआ और स.गु. अच्युतदास स्वामी के नाम से संत दीक्षा लेकर संप्रदाय के विरल संत बने गए । हमें आप सभी को क्या देना है इसकी सभीको आतुरता होगी । हमें यह देना है कि आज तक हमने जैसे श्री नरनारायणदेव को जाना है ऐसे आपभी उन्हें जानीए। इसके लिए हमने घर पर कई घंटो का समय नीकालकर (महाराजने) श्री नरनारायणदेव का किस वचनामृत में किस तरह से उल्लेख किया है वह पेरेग्राफ्स हमने अपने हस्ताक्षर में तैयार किये है। लिखने बैठे तो फोन आते हैं, मिलने के लिए लोग आतें है, मुसीबतों में से नीकल कर हमने "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" यह नामकी छोटी सी पुस्तिका तैयार की है। जिसका विमोचन आनेवाले कल के दिन करना है। हर रोज पढ़ेगे तो श्री नरनारायणदेव को दर्शन करने

का विशेष आनंद मिलेगा । प्रथम में ४२ में वचनामृत में सत्संगीमात्र को महाराजनें श्री नरनारायणदेव के पूजा में रखने की आज्ञा की है । इस में देश-विभाग का विभाजन असर नहीं करता । श्री नरनारायणदेव को महाराजने अपना ही स्वरुप बताया है। श्रीजी महाराजने शास्त्रो के साररुप एक गुटका तैयार किया था वैसे हमनेभी एक गुटका तैयार करके आप सबको भेट देतें है, जिसको आशीर्वाद मानकर नित्यपाठ करने का अनुरोध करता हूँ।

(प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री (दि.४-४-०४ की कथा सत्संग समय पर)

"आज सभा में कई अच्छी बातें सुनी । उसमें अपने चौधरी युवक हरिभक्तने जो बात कही, उपासना की स्वच्छता की, हृदय छू जाय वैसी है । हम कई बरस पहले एक बंगले में पधरामणी के लिए गए । उस बंगले के मालिकने एक बहुत ही नामांकित विदेशी आर्केटिक के पास से बंगले की योजना बनाई है । हम योजना में थोडा बदलाव लाना चाहतें है । इस जगह पर सीलींग पंखा डलवाना है । आर्केटिकने कहा हमें कोई तकलीफ नहीं है परंतु पंखे के नीचे एक सूचना की पट्टी लगानी होगी की यह पंखा आर्केटिक की मरजी के विरुध्ध लगवाया गया है। जगत के आर्किटेक को अपने प्लानींग का इतना गौरव होगा तो महाराज कोभी अपने स्थापित कीए हुए सत्संग योजना पर भी कितना गौरव होगा । महाराज की इच्छा के विरुध्ध तसवीर रखतें है, संप्रदाय की आरती, शास्त्र, उपासना में बदलाव करते है, वह महाराज को मंजूर नहीं है । कल्याण तो दूर रहा । इसके विरुध्ध महाराज को नाराज करतें हैं । एक या दूसरी तरह से तो हमें महाराज की नाराजगी देखतें हैं । इसिलिए आध्यात्मिक केन्द्र शुद्ध रखना चाहिए । महाराजने सत प्रतिषत शुद्ध उपासना का मार्ग दिया है । इस तरह से चलेंगे तो इस जन्म में और आगे भी सुखी होंगे ।

"वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" इस पुस्तक को जरुर खरीदना, पढ़ना और मनन करना ।

"सबसे पहले तो इस दिव्य सभा के पास आशीर्वाद मॉगना है । सभी महाराज को प्रार्थना करना की बाल लालजी को महाराज सत्संग की सेवा करने का बल प्रदान करे । सत्संगिओको बहुत सुख दे । उनके समय में सत्संग की वृद्धि हो । वे जो छंद बोले हैं वह छंद ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित छंद था । स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी को धर्मकुल के प्रति बहुत प्रेम था । और धर्मकुल को भी ब्रह्मानंद स्वामी के प्रति भाव था । पीछले चार-पॉच दिन से कथा के बाद सभी महानुभाव, संत-हरिभक्त हमारी बहुत प्रशंसा करतें है । तब हमें क्या संकल्प होता है । जानते हो ? जब हमारी प्रशंसा होती है तब देह से तो हम यहॉ बेठै होतें है परंतु मन द्वारा सभा में आप सभी के बीच में कहीं एक कोने में बैठा होता हूँ । और बैठकर आचार्यपद की प्रशंसा देखता हूँ ।

एकबार एक पत्रकारने हमसे पूछा कि आप किसी के घर पधरामणी के लिए जाते है । तब आपको कैसे संकल्प होंते है, भाव, उर्मीयाँ होती है? हमने उत्तर दिया, आप जब किसी व्यक्ति के घर जाते हैं तब आपको अपने दादा की तसवीर देखने मिले उसे फूल का हार पटनाया हो , पूजन



होता हो, तो आपको कैसी श्रद्धा होती है । उसी तरह हमें भी अपने दादा को कोई दियाबाती करे, हार पहनाया हो ऐसा देखते है तो उस व्यक्ति के लिए हमारे हृदय में कितना उच्च स्थान होगा । उसकी कल्पना मात्र ही हो सकती है ।

महाराजने इस दिव्य सत्संगकी स्थापना की, महाराज का इस परिश्रम के सामने देखकर महाराज को राजी कर लेना चाहिए । जगत के मनुष्य सदाचार जैसे धर्म का पालन करके मृत्यु के बाद जो सुख प्राप्त करतें है वैसा सुख तो हम जीवित देह से भी

ले सकतें है । इस मनुष्य जन्म को अंतिम जन्म मानकर इस जन्म में ही अक्षरधाम में जाना है । इतना कह कर विराम लेता हूँ ।

-प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महारादश्री (महोत्सव प्रसंग पर ६-४-०४)

"प. पू. ध. धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने एक दीर्घ दृष्टि डाली, एक लक्ष्य रखकर संप्रदाय को विश्व के अंतिम दौर पर ले जाकर उसे गौरव युक्त बनाया । मूल परंपरा में अक्षत लीली करके विश्व के कोने-कोने में स्वामिनारायण भगवान को 'सर्वजीव हितकारी संदेशा', पहोंचाया, अपनें पथ की सर्वोच्च गरिमा को आंच तक नहीं आने दी । इस प्रसंग पर हम हमारा अपना ही अभिवादन कर रहे हैं । गुरु के ऋण में से कभी मुक्त नहीं हो सकतें । इस प्रसंग पर हमको ऐसा था कि हमको कोई भेंट अर्पण करनी है. परंतु महाराजश्री के प्रति अपना सच्चा भाव अर्पण करते है । कामी, क्रोधी, कपटी, लोभी और मानी । इन में से भी महाराज वचनामृत में कहतें है कि अहंकारी कभी भी सत्संग में टिक नहीं शकतें । पंचवर्तमान पालने में जो चिंतित नहीं होता वहीं पक्का हरिभगत है । "पक्का सत्संगी बनना है" । यह संकल्प आज करतें है यही महाराजश्रीकी सर्वोच्च भेट दी गई कहलाएगी ।

रमेसभाई मारफतिया परिवार, अन्य छोटे बड़े यजमान परिवार, अनेक विविध सेवा में छोटे से छोटी सेवा दी हो उन सब पर श्री नरनारायणदेव की बहुत कृपा रहे, बहुत सुखी रहे । वे लोग जो अमेरिका, अफ्रिका, इग्लेन्ड, आदि देशो में से जो पधारे हों, और जिन्होंने चुस्त सत्संग रखा । उन सब पर श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव की असीमकृपा बनी रहे । पू. महाराजश्रीने आज तक हमको जो मार्गदर्शन दिया है वह संदैव मिलता रहे ऐसी प्रभु से प्रार्थना ।"

श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराज १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री (अभिनंदन प्रसंग दि. ८-४-०४)

"धुन-भजन उत्सव का हार्ध है । हृदय है । जिन्होंने इस भक्ति मंडप के नीचे बैठकर थोडा सा भी नाम स्मरण करके भजन किया है वे धन्यवाद के पात्र है ।" (उत्सव-पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर: "जब से इस सत्संगके धर्मकुल में जन्म लिया है, तब से बीते हुए ६० वर्ष के एक एक क्षण हमने आप लोगों के लिए बिताए है । अब बाकी का समय हमको हमारे लिए व्यतीत करना है । सभी को उत्सुकता हो रही होगी कि कैसे ? सत्संग छोडना नहीं है । सत्संग के बीच में ही रहना है । प्रसादी कि चीजों के मिलने की शुरुआत कहाँ से हुई ? जानते हो ? पू. मातुश्रीने एक बार अपने रुम में बुलाकर दाँत खोदने की चांदी की लकडी दी । तब से यह दिव्य अलौकिक भेट मिलनी चालु हो गई । किसी को लोटरी लगती है तो चिंता होती है कि इसका इन्वेस्ट कहाँ करना ? सभी पहुँच जाते है कि हमारी कंपनी में हमारे बँक में इन्वेस्ट किजीए । हमें प्रसादी की चीजों की लोटरी लगी है । समय मिलते ही विचार करके आयोजन करना है । सुंदर वैज्ञानिक तरह से देखभाल हो शके



ऐसी इच्छा है । कईबार परंपरा से प्राप्त हुई चीजों का ख्याल भी नहीं होता । पुराने निवास स्थान से जब नए निवास स्थान में आए तब फाईलो को खोलने पर महाराज के हस्ताक्षरवाला और स्याहीवाला । एक कागज हाथ लगा । उस समय अंग्रेज १ रुपिये के स्टेम्प पर लिखाए हुए इस मुखत्यार नामे की विशिष्टता यह है कि उसमें संवत वर्ष की जगह इस्वीसन वर्ष, मार्च महिना और तारीख लिखी है । उसे म्युझीयम में मुख्य स्थान पर रखना है । प्रतिकृत, कोपी, फोटो होने नहीं दी है । होगी भी नहीं । रंग के छीटे वाले वस्त्र रंग

के छीटों के साथ हमारे पास है। जिसका देश-विदेश के लोग दर्शन कर शकतें है इसिलिए उसकी रक्षा होती रहे यह हमारा स्वप्न है।

इस महोत्सव को पूर्ण और फलिन करने के लिए छोटे बड़े सभीने साथ दिया। पूरे दिन एक पैर खड़े रह कर काम करने वाले स्वयं सेवक हो या कागज पर नकशा बनानेवाले आर्केटिक हो, लालजी महाराज रोज रात बारह बजे तक तत्पर रहतें है। इन सबको धन्यवाद देकर विराम लेता हूँ।

-प.पू. आचार्य महाराज १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री दि. २-४-०४)

"हमरा दिया हुआ योगदान फलित हुआ है क्योंकि महाराजश्री जैसे नरनारायणदेव को जाना है। हमने स्वयं सेवको को प्रथम सभा में ही कह पूछा था कि उत्सव, अपना कार्य करेगा। म्युझीयम के लिए हमारे स्वयंसेवक युवान खून के अंतिम बूंद तक समर्पित कर देंगे। इस की जवाबदारी हम लेतें है। उत्सव में महाराजश्री का कार्ड देकर पुण्य हमने लिया है। उत्सव के निमित्त में समग्र वर्ष दरमियान सभा, धुन, मंत्रलेखन, पदयात्राएँ जनमंगल के पाठ, महापूजा आदि जो कुछ प्रवृत्ति की उसका पुण्य हमको मिला है। भगवान हम पर प्रसन्न हुए है। महाराजश्री प्रेम, भावना आदि अपने कुटुंब को देते है - हमको संभालतें है परंतु उससे कई ज्यादा संतो और हरिभक्तो को संभालते हैं। अपने समय के दसवें भाग से भी कम महाराजश्री अपने परिवार को देते है। सत्संग परिवार ही उनका बृहद कुटुंब है। ऐसा सुख बढ़ता ही रहे ऐसी भगवान नरनारायणदेव से प्रार्थना।

प.पू. लालजी महाराजश्री (दि.२-४-०४)"

"महाराजने एक बार गाँव की चालु सभा के बीच में एक भगत की दी हुई चरण भेट को स्वीकार्य किया। कुछ लोग खड़े हो गए तब महाराजने दूसरा चरित्र किया। एक दोनो पैर डाले। आधे लोग खड़े हो गए। 'इसे कहतें हैं भगवान।' अब दिल खोलकर बात करने में मजा आएगी। क्योंकि कच्चे खडे हो गइ। परिपूर्ण निश्चयवाले रहें। महाराजश्री की सेवा मात्र भाग्य में लिखी होने से नहीं मिलती। इसके लिए तो भगवान की कृपा चाहिए। मुझे इस समय सेवा करने का अवसर मिला है। यह सब महाराज की शक्ति, बल और करुणा का आभारी है। महाराजने कहा है कि देह और संबधिओं के लिए यह जीवात्मा कितना कुछ करती है? इतना ही वह भगवान को प्राप्त करना आसान हो जाएगा। आपके घर १०-१२ कि.मी. चल कर कोई संबंधि आए हो, और आप मटके में से पानी भरकर पीने जाते हों, संबंधि आए है इसलिए वहीं पानी का गिलास आप उनके सामने रख देते हैं। क्योंकि वह आपके संबंधि है, चल कर आएँ हैं। उसके साथ आपका अपनापन जुड़ा है।

संपूर्ण जानते हो या न पहचानते हो तो भी उसके लग्नादिक प्रसंग में कई लोग नाचते जाते हैं। एक आदमी हंमेशा नाचता था, पार्टी प्लोट में हमारी वाडी के बगल में ८-१० पार्टी प्लोट है। पार्टी प्लोट शुरु होता तब हम सो जातें बंध होता तब जग जातें। एक भाई पू. लग्नमें दिखाई दिए। आसपास में ही घूमतें थे। जिसका विवाह हो उसमें नाचने जाता। पूछा 'तु कौन है?" कहा मुझे नाचने का शोख है। मनुष्य इतना सब करता है। जहाँ पहचान नहीं वहाँ पर भी जाता है। यह एक मानसिकता है। पर अंदर बैठा हुआ भगवान क्या करे उसकी चिंता नहीं करते। वैसी ही प्रीती जब भगवान में भी होती है तब जीव का कल्याण होता है।

इस समय हमें बहुत ही आनंद हुआ है। हम उत्सव के ग्राउन्ड पर दोपहर के १२ से साम के ७ बजे तक, जबभी नीकलते तब पार्किग, स्वागत और मार्गदर्शन सेवा से लेकर जूता-चप्पल, आदि जैसी छोटी-छोटी सेवा में सभी स्थलो पर कार्य के लिए तत्पर स्वयं सेवको को देखते। बहुत बड़ी चीज है। शरीर के संबंधिओ के लिए हो सकता हो तो महाराज के लिए क्यों न हो?

हमारे प.पू. महाराजश्री

शास्त्री स्वा. हरिकृष्णदासजी (छपैया माजी महंत)

प.पू. महाराजश्री बाल्यावस्थामें अफ्रिका में - केनिया, युगान्डा, तथा टान्झानिया के देशों में धर्मप्रवास में पधारे तब गुजरात तथा कच्छ के हरिभक्तो ने लालजी महाराज के रुप में वर्तमान आचार्य महाराजश्रीका जब प्रथम दर्शन किया उसी समय से मानो साक्षात परमात्मा का दर्शन हुआ है। इतनी छोटी उम्र में विदेश का प्रवास तथा अफ्रिका जैसे देश में जाना यह दोंनो ही बड़ा कठिन था। फिरभी प. पू. ध. धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजने उन्हे आशीर्वाद तथा आन्तरिक प्रेरणा दिये जिसका आज हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहें है। ऐसे आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री सम्प्रदाय को मिले है जिससे सम्प्रदाय का गौरव उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है। अफ्रिका के हरिभक्त प. पू. लालजी महाराजके दर्शन से खूब प्रभावित हुए। जो आज भी नाइरोबी. मोम्बासा, दारेसलाम में सत्संग फूल फल रहा है। प .पू. महाराजश्री की आज्ञा से तथा कच्छ के सन्तों की प्रेरणा से वहॉ बड़े - बड़े मन्दिर तैयार हो गये है। यह सब महाराजश्री की कृपा का फल है। इसी प्रकार अमेरिका में प्रवास के लिए निश्चित हुआ उस समय गिनती के सत्संगियोका पता लेकर सन्तो के साथ महाराजश्री पधारें कितना कठिन समय था वहॉ जाकर रुकना तथा सभा करना। दुनिया की महासत्ता ऐसे अमेरिका में किसी के पास समय ही नहीं रहता। फिरभी वहॉ जाकर सभा-सत्संग, पधारामणी का कार्यक्रम प.पू. महाराजश्री के दिव्यप्रताप से तथा उनमें विद्यमान साक्षात श्रीहरिके प्रताप से प्रथम प्रवास में ही अनेक घरों में पदार्पण, सार्वजनिक सत्संगसभा, नये आश्रितों को गुरुमंत्र, की तो लाईन लगने लगी। क्रमशः I.S.S.O. संस्था (श्री न.ना.देव गादी संलग्न) को स्थापित करके न्यूजर्सी में मंदिर निर्माण करके वहॉ पर शिकागो, एल.ए., ह्युस्टन, फ्लोरिडा, डिट्रोइट जैसे बड़े बड़े शहरों में शिखर बद्ध मंदिरो का निर्माण हुआ। आज तो वहॉ का सत्संग इतना बढा की हजारों क संख्या में हरिभक्त का समुदाय खड़ा हो गया। थोड़े समय में ही ऐसे महान भगीरथ परीश्रम का यह फल है। जो भगवान के अंश विना यह संभव नही है। यह केलव अमेरिका की ही बात नहीं है अपितु समग्र विश्व में श्री नरनारायणदेव की ध्वजा फरक रही है। लंडन के मोटे-मोटे शहर में मंदिर बने, स्वीडन ओस्ट्रोलिया, न्युजीलेन्ड, मोरेश्येस, सिसल्स, खाडी के देश दुबई, मल्का तथा शारजाह जैसे मुस्लिम देशों में सत्संग तथा मंदिरो का निर्माण हुआ। विदेश के युवानों में भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का बल तथा प्रेरणा मिलती रहती है। विदेशों में युवान सत्संगी इतना तैयार हुए है कि इन पर चढ़े न दूजो रंग। यह सब प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा-करुणा तथा दयालुता का फल है।

अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री के व्यक्तिगत महान गुणों में से एक गुणभी अपने में आजाय तो जीवन का सब कुछ बदल जाय।

प.पू. महाराजश्री अक्षर सह श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन करतें है जिसके परिणाम स्वरुप शुद्ध शासन, देव द्रव्य की शुद्धता, देव का हित, लाखो करोडो की भेंट आवे तो तुरंत ही मंदिर के नाम रसीद काट दी जाती है और जिसने दिया उसके नाम भेंज दी जाती है। मंदिर में हो या घर पर या बाहर, कही भी हों वगैर किसी लांच रिश्वत के जो भी आवे उसे मंदिर को भेंट कर देते है। हम सभी दोनो देशके सन्तों को समान रुप से सम्मान देते है। ऐसे महान गुण से युक्त महान विभूति स्वरुप प. पू. आचार्य महाराजश्री की इस षष्टि पूर्ति महोत्सव पर कोटि-कोटि वन्दन।

गुरुदेव के चरणो में क्रोटी-कोटी वंदन

महंत शा. स्वा प्रेम स्वरुपदासजी (नारणपुरा)

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महारजश्री के चरणो में कोटी-कोटी वंदन । प. पू. आचार्य महाराजश्री ने ६० वर्ष तक अपने देह की चिंता किए बिना, अविरत सत्संग की सेवा की है । पामर और पतित जीवात्माओ के श्री स्वामिनारायण भगवान को सर्वोपरिता को समझाया है । बड़ा शहर हो या नगर हो या छोटा सा गॉव या फिर बिछडे वर्गकी झोंपडी हो तो भी वहॉ तक जाकर स्वामिनारायण महामंत्र का नाम रोशन किया है । ऐसे अनेक प्रसंग पू.महाराजश्री के जीवन में जुड़े है । उसमें से कुछ प्रसंग नीचे अनुसार है ।

गॉव कडी के पास देउसणा में अचार्य महाराजश्री पूरे गॉवमें पधरामणी करतें थे । उसमें एक हरिजन बहुत ही गरीब आदमी था । जिसके पास रहने के लिए छोटा सा झोंपडा ही था । जिसमें ढंग से प्रवेश करने की भी जगह नही थी । मेहनत करके बड़ी मुश्कील से गुजर-बसर करता था । पधरामणी के दौरान उनको इच्छा हुई कि बड़े भगवान की, अपने घर पधरामणी क रवाउ। परंतु पू. महाराजश्रीने हरिजन हरिभक्तो के भाव से जान लिया कि इन हरिजन भक्तो को पधरामणी करवाने की इच्छा है । इसलिए पू. महाराजश्रीने पूछा कि आपका घर आए तब कहना । जब घर आया तब भक्तने बताया । और पू.महाराजश्रीने शरीर से आधा झुककर घर में प्रवेश किया और उनकी तूटी हुई खटीया में बैठ गए । उनके घर आरती करके उन्हें प्रसन्न किया । ऐसे अनेक प्रसंग है ।

२००१ की साल में राजस्थान झालोर जिल्ला के वापा गॉव में एक छोटा सा मंदिर बनाया गया है । वहॉ पू. अचार्य महाराजश्री ने वहॉ के हरिभक्तो के आग्रह से मूर्ति प्रतिष्ठामें ले गए । वहॉ राजस्थान मरुभूमि में बहुत सारी मुसीबतें आई । पाणी की तकलीफें । रहने के लिए व्यवस्था नहीं थी । ऐसे प्रसंग पर पू. महाराजश्री को छोटा सा रुम बनाकर उतारा दिया । संत और हरिभक्त जरा चिंतित थें । इसिलिए पू. महाराजश्री को पूछा कि बापजी आपतो महाराजा धिराज हो । इसलिए आप को यहॉ पर अनुकूलता है या नहीं । पू. महाराजश्रीने कहा अरे , स्वामी ऐसी व्यवस्था तो बड़े नगरों में भी नहीं मिल शकती । बाद में रात के समय लाईट के अभाव की वजह से हजारो आदमी प्रकाश के लिए आचार्य महाराजश्री के उतारे के पास फाईटर चालू किया । क्योंकि दूर रखने की व्यवस्था नहीं थी । इसलिए पू. महाराजश्रीने कहा कि आप थोड़ीं भी चिंता मत कीजिए । आपके प्रेम की वजह से फाईटर का आवाज संगीत की सुरावली बन जाएगा ।

पू. महाराजश्रीने छोटे से छोटे संत का तथा छोटे से छोटे से सत्संगी का व्यक्तिगत ख्याल रखा था । और उन्होंने उनकी देखभालभी की थी । १९८९ की साल में जब हमारे अहमदाबाद में प्रारंभ के दिन थे और सिध्धपुर की महंताई पू. महारजश्री ने दी थी तब हमारे साथ संत समुदाय नहीवत् की तरह था । मैं ने पू. महाराजश्री को पूछा बापजी सिद्धपुर की महंताई अकेले चलाना बहुत कठीन हैं । तब पू. महाराजश्री इतना ही बोले कि आपको नरनारायणदेव को साथ रखकर हरिकृष्ण महाराजकी सेवा करना । मैं आपका हूं और आपके साथ रहूंगा । आपको कोई भी तकलीफ हो तो मुझे बताईएगा । ऐसी छोटी छोटी बातो का पू. महाराजश्रीने ध्यान रखा है । जैसे रामायण में कहा है कि

''करहुं सदा तिनकी रखवारी जीमी बालक राखे महतारी''

इस तरह जैसे मा बच्चे का रक्षण करती है

उसी तरह पू. महाराजश्रीने सत्संग समाज का रक्षण किया है ।

मोरेश्येस के प्रवास दरम्यान पू. महाराजश्री

नित्यकर्म के अनुसार स्नान-पूजा पाठ करके मंदिर पर

आरती करने के लिए कथा वार्ता

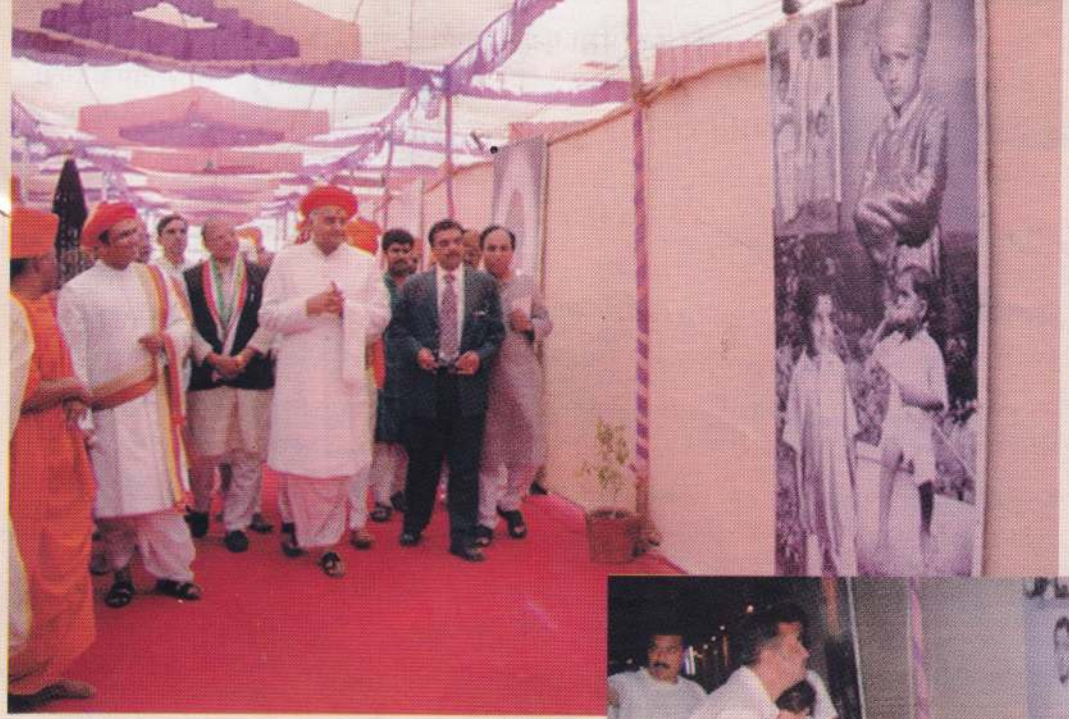
के बाद उनके रुम में प्रवेश किया । दोपहर ११-३० बजे बाहर आकर ठाकोरजी को खिलाकर संतो के साथ थोड़ी चर्चा की । हरिभक्तो को मिलकर रुम में चले जातें ।

एक दिन मैंने पूछा, 'बापजी' इतने समय आप अकेले रु म में क्या करतें हो ? तब पू. महाराजश्री ने हसते हसते कहा, "स्वामीजी मैं तो बहुत सारा काम लेकर आया हूं । मुझे आघारानंद स्वामी का ग्रंथ वांचन पूरा करना है । इसलिए में अंदर बैठकर समय व्यर्थ नहीं जाने देकर अध्ययन करता हूं । और बादमें महाराजश्री ऐसा बोले कि हमको वह शीख लेना जरुरी है कि हम भी अकेले घंटो तक बैठ शके । और समूह में भी घंटो तक बैठकर समय सफल कर शके । यह बात मुझे बहुत ज्यादा पसंद आई क्योंकि अकेले रहनेवाला समूह में नहीं रह शकता । और समुह में रहनेवाला अकेला नहीं रह शकता । परंतु हमारे पू. महाराजश्री दोनो तरह से खुशमिजाजसे जीते है । शाम को ६ बजे बाहर आकर आरती करने के लिए पधारे कथा वार्ता करके ठाकोरजी को खिलाया । वह समय हमारे लिए 'सुवर्णयुग' जैसा था । अंदाजित पू. महाराजश्री हमारे साथ दो घंटे नानागुट में बैठतें थे । इतनी सुंदर बातें करते थे उनमें से एक दो प्रसंद मुझे याद है उन्हों ने कहा था कि,

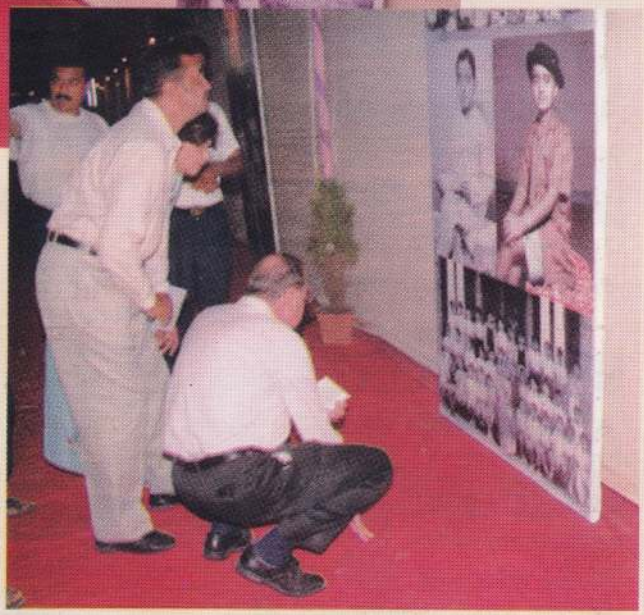
जीव प्राणी मात्र को अपने कर्मो को भोगना ही पड़ता है । उसमें भी सत्संगीओके किए कर्म का फलतो तुरंत मिलता है । शुभकर्मका फल शुभ मिलता है । और अशुभकर्म का अशुभ । इस दिन योगानुयोग हम दो जन ही इस कर्म के साक्षी है । और हम सोंचते हैं तो अपने ध्यान में आ भी जाता है । महाराजश्री ने बताया कि व्यवहार त्यागीओ को या गृहस्थोको संभालना पड़ेगा । हम तो आचार्य है । आप तो त्यागी है और दूसरे गृहस्थ है । ऋषि दक्ष प्रजापति और शंकर की दशा हुई ऐसी दशा अपनी भी होती है । ऐसी कई बातें की । संत-हरिभक्तो को भी प्रसन्न कर देतीं है । और एक बात मुख्य यह थी कि साथ - साथ ग्रुप में मजा कैसे किया जाय यह वे खुद ही अपने अचारण से बताया था । कईबार रसोई घर में जाकर कहतें कि स्वामी यह चीज इस तरह से बनाए तो अति निकटता रखकर एकता की भावना खड़ी करते थे । इस पन्द्रह दिन के प्रवास को हम सदैय याद करतें है । विशेष में यह था कि जैसे जैसे नजदीक आए वैसे वैसे महिमा बढ़ती गयी । पहले ऐसा लगता कि आचार्य है । बाद में लगता कि अति बड़े पुरुष है । बाद में ऐसा तय किया कि अति बड़े पुरुष है । बाद में ऐसा निश्चय किया कि श्रीजी महाराजने अपनी गादी पर अपना स्वरुप लेकर पधारें है । और ऐसा समजने के बाद सदैव आचार्य का केफ बढ़ता है । शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी उनके शब्द में सुंदरता से कहा कि फूल की पहचान सुगंध से है, सरोवर की पहचान पानीसे है, वृक्ष की पहचान फल से है ऐसे पू. आचार्य महाराजश्री की पहचान उनके दिव्य अलौकिक कार्योसे है, आज पू. आचार्य महाराजश्री आज्ञा करे और लाखो हरिभक्त दोड़ा दोड़ी करने लगतें है ।

द्विशताब्दी महोत्सव और उसके बाद रजत सुवर्ण जयंती महोत्सव दोनो उत्सव के बाद सत्संग में जो जागृति और चेतना प्रगट हुई वह सब उनकी कृपा से हुई है . आज देश-विदेश में घुमकर लोगो का दिल जीत लेनेवाले कोई भी आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार्य करके और पांचसो आदमी या पाँच हजार या पाँच लाख की सभा को वही भाव से वही प्रेम से संबोधन करतें है । हमारे पू. महाराजश्री के जीवन की कार्यशक्ति उमदा है । सूर्योदय होता है तब प्राची दिशा को बताने की कोई जरुरत नहीं होती । यह तो गर्जना से पता चलता है । उसी तरह हमारे आचार्य महाराजश्री को कुछ बताने की जरुरत नहीं है तो उनके कार्य से पता चलता है । सभा में हम उनकी प्रशंसा करके मात्र अपनी वाणी की साफल्यता करतें है । धर्मकुल का बगीचा ऐसा है कि अपनी सुगंध से ही महकता है । उसको अन्य सुगंध की जरुरत नहीं है ।

ऐसे हमारे प.पू. आचार्य महाराजश्रीका अपार सुख इस सत्संग समाज को हजारो वर्षो तक मिलता रहे थे ही आपके चरणो में अभ्यर्थना ।

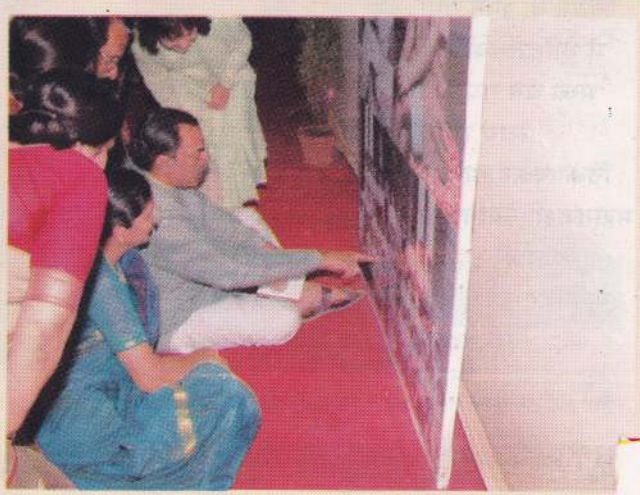


उत्तर-दक्षिण देश के दोनो पीठाधिश्वर प्रदर्शन का आनंद लेते हुए ।



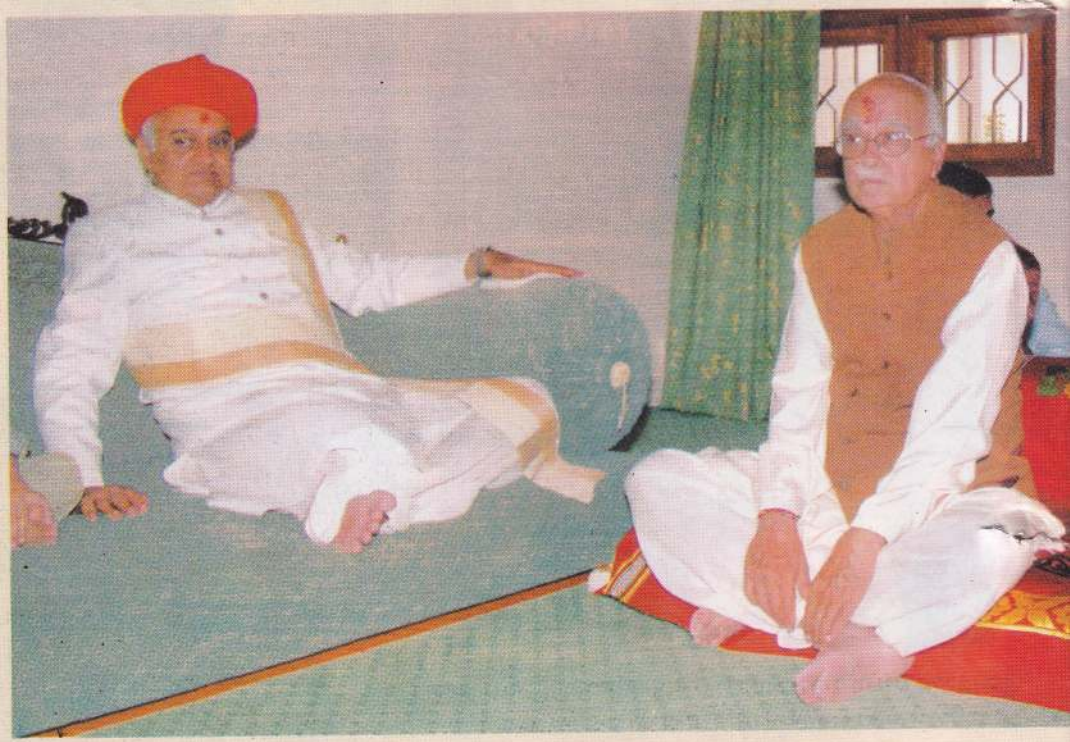


एक छोटे गाँव के सत्संगी से लेकर शहर के प्रतिष्ठित महानुभावों ने प्रदर्शन बारीकी से देखकर अपने सुंदर प्रतिभावों को प्रदर्शीत किया ।





श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर में श्री अडवाणीजी का स्वागत करते प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



भारतदेश के उप प्रधानमंत्रीश्री लालकृष्ण अडवाणी को ऐसे विशाल संप्रदाय के मुख्य और बड़े धर्मगुरु के प्रत्यक्ष दर्शन-मुलाकात का ऐसा प्रसंग उनके जीवन के इतने वर्षो में ऐतिहासिक और भव्य बन गया है। स्वयं समय निकालकर आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर दर्शन-आशीर्वाद प्राप्त करने पधारे थे ।

सनातन प.पू.ध.धु. आचार्यवर्याणां श्री १००८ तेजेन्द्रप्रसादजी-महोदयानां षष्टि पूर्ति समारोहे वन्दना - सप्तकम ॥

(प्रा. डॉ.वासुदेव वि.पाठक)

नरनारायणोदेवः स्वामिनारायणस्तथा ।
कृपां करोतु कल्याणं षष्टि पूर्ति महोत्सवे ॥
श्री तेजेन्द्रप्रसादानां विशिष्टा वन्दना वरा ।
षष्टि पूर्ति समारोहे धन्यतायाः प्रदायिनी ॥
धन्यास्सत्संगिनस्सर्वे महोत्सव परायणाः ।
निजाचार्यस्य दिव्येऽस्मिन्षष्टिपूर्ति महोत्सवे ॥
शतायुः पुरुषः पुण्यः भारते ऋषिकल्पकः ।
परेशकृपया भूयाद आचार्याणां ततोऽधिकम ॥

पुण्या च भक्तिमार्गीया परंपरा प्रवाहिता ।
पूज्यै श्री सहजानन्दैः सा भवद्भिः निभालिता ॥
श्री स्वामिनारायण संश्रितानाम
सत्संगापुण्यैश्च पवित्रितानाम ।
आचार्य पाद्श्च प्रसादितानाम
भूयात्परं मंगलं मंगालानाम ॥
आचार्य प्रवरत्वं ते स्यादेव वरदायकम् ।
विचार्यैतदवयं वन्द्या : ! प्रणामामः परम्पराम् ॥

शुभकामना प्रदायक

रचयिता - भवदीय :-डॉ. सी. एल. शास्त्री (शिकागो)

(१)

आचार्य श्रेष्ठ निजधर्म धुरंधरश्च
विश्वे सदा फलवती भवदीय कीर्तिः ।
षष्टि प्रपूरण महोत्सवभव्यकाले
अस्माकमत्र सकला शुभकामनास्ते ॥

(२)

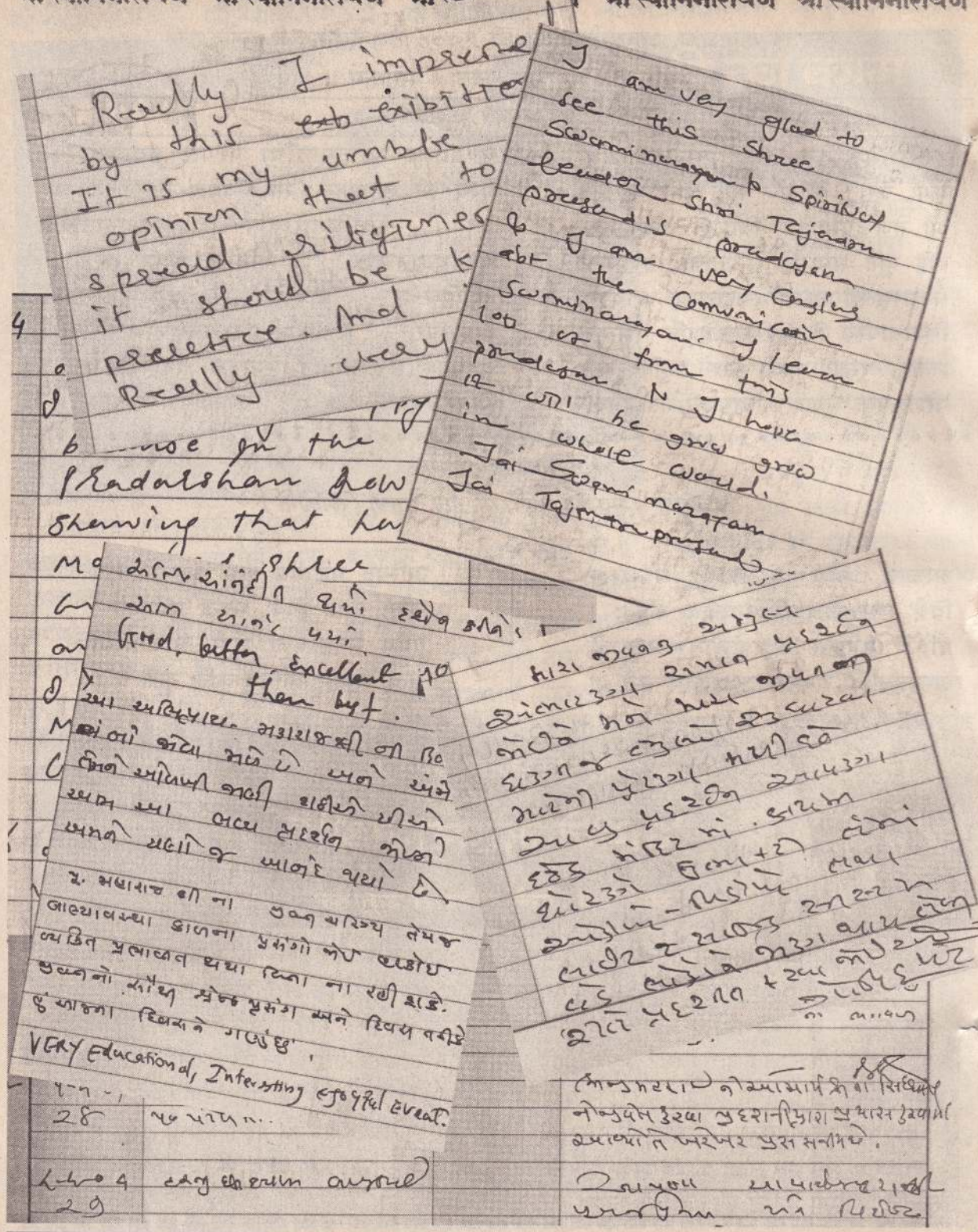
अस्मिन महोत्सव शुभे अहमागतोऽत्र
जातः प्रसन्न हृदयः भवतां प्रभावात ।
एषैव मदहृदयजा शुभा प्रार्थनास्ति
भूत्वा शतायुरविच्छिन्न कृतिः कृती च ॥

षष्ठी पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर

"अपने महाराजश्री"

सीडी का अपने मंदिर से प्रकाशन

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के छठ्ठे वंशज और श्रीहरि के साक्षात अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अलौकिक दिव्य महान जीवन भवन पर जन्म से लेकर ६० वर्ष के भव्य इतिहास की जिसमें छोटे से छोटी माहिती और उनके द्वारा हुई विराट प्रवृत्ति आदि अनेक उनके द्वारा विराट प्रवृत्ति आदि इनेक प्रसंगो के साख सीडी अपने प.पू. लालजी महाराजश्री के मार्गर्शन के नीचे तैयार की गई है। देश-विदेश के हरिभक्त और महा मंदिरो के महंत स्वामीओने मंदिर के साहित्य केन्द्र पर धर्मकुल प्रेमी सभी हरिभक्तो को लेने के लिए सुविधा प्रदान की गई है। सभी हरिभक्तो को अपने घर के लिए इस सीडी को खरीदकर समस्त परिवार को प.पू. आचार्य महाराजश्री के दिवय महान जीवन का दर्शन कराना चाहिए यह हड़ो का कर्तव्य है।



Really I impress
by His ~~exhibition~~
It is my unable
opinion that to
spread religious
it should be
presence. And
Really very

I am very glad to
see this Shree
Swaminarayan Spiritual
Leader Shri Tajinder
Pregudis Pradeyam
& I am very Enjoy
abt the Communication
Swaminarayan. I learn
lot of from this
Pradeyam N I hope
I will be grow grow
in whole world.
Jai Swaminarayan
Jai Tajinderpreyudh

Shree

Good, Letter Excellent
then but.

Jai Swaminarayan

एक विरल व्यक्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री



यह उस समय की बात है जब भारतखंड की भूमि पर कलयुग अपने प्रभाव से अधर्म तथा आसुरी प्रवृत्ति मानवसमाज को अस्त व्यस्त कर रहा था। हजारो वर्ष पहले लोग इच्छाविरुद्ध कर रहे थे । भारतखंड की प्रजा का जीवन सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सांसारिक, दुःखमय स्थिति से वीत रहा था ।

ऐसी धोर परिस्थिति में एक समय बद्रिकाश्रम में श्री नरनारायणदेव भगवान के समक्ष मरीच्यादि ऋषी, ऊद्धव, धर्मदेव तथा भक्तिमाता भारत खण्ड में प्रवर्तमान दुःस्थिति पर चर्चा कर रहे थे । उसी समय क्रोध के अवतार दुर्वासा मुनि वहाँ आये लेकिन संयोगवश उनका योथिचित सत्कार न हो सका परिणाम स्वरुप क्रोधायमान मुनिने स्व अपमान समझकर सभी को श्राप दे दिया ।

मेरे अपमान करने वाले आप सभी लोग भारतखंड में मनुष्यरुप प्राप्त कर आसुरीतत्वों द्वारा अपमानित हों और कष्ट प्राप्त करें ।

दुर्वासा मुनि के इस प्रकार के श्राप सुनकर धर्मदेव-भक्तिमाता विवेकपूर्वक वार्तालाप द्वारा मुनि को शान्त किये। इससे मुनि ने शांतिपूर्वक श्राप का हार्द्य समझाया ।

धर्मदेव-भक्तिमाता के ब्राह्मण कुल में नारायणऋषि पुत्र के रुप में अवतार लेंगे और आप सभी को मेरे श्राप से मुक्त करेंगे ।

इस वात को धीरे-धीरे काफी समय बीत गया । कलयुग का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया । सम्पूर्ण भारत में अराजकता का साम्राज्य छा गया । सर्वत्र, चोरी, व्यभिचार, भ्रष्टचाचार, हत्या, इत्यादि जैसे कुत्सिता का साम्राज्य छा गया । सामाजिक, धार्मिक, राजकीय, आंधी में समाज उड़ रहा था । समग्र समाज त्राहि त्राहि हो गया था । इसे उबारने हेतु किसी महापुरुष की आवश्यकता थी ।

उस समय भक्तों की विवदा आर्तनाद सुनकर "संभवामि युगे युगे" इस वचन का पालन करने हेतु दुर्वासा ऋषि के शाप को सत्य करने के लिए अनंत कोटि ब्रह्मांड के नायक पूर्ण पुरुषोत्तम श्री नारायण भगवान अपने समग्र ऐश्वर्य से युक्त पृथ्वी पर एकान्तिक धर्म स्थापनार्थ तथा अपने भक्तों की रक्षा हेतु, जीवमात्र का कल्याण करने के लिए धर्म को स्थापन तथा अधर्म का नाश कनरे के लिए भारतवर्ष की पवित्र भूमि उत्तरांखंड अयोध्या के पास अत्यन्तपावनकारी छपैया की धरती पर संवत १८३७ चैत्रमास शुक्ल पक्ष नवमी रात्रि में १०-१० बजे धर्म-भक्तिमाता के घर सर्वोपरि परमात्मा स्वामिनारायण भगवान के स्वरुप मे मनुष्य देह को धारण किया ।

जगत के जीवमात्र का कल्याण करने के हेतु से भगवान श्री स्वामिनारायण अक्षरधाम से सन् १७८१ दूसरी अप्रैल सोमवार के दिन

सरयूपारीण ब्राह्मण के घर में प्रगट हुए जिनका नामकरण संस्कार करने हेतु मार्कण्डेय ऋषी पदार्पण किये और शुभ मुहूर्त में नामकरण विधि सम्पन्न हुई . जिसमें बाल स्वरुप भगवान का नाम "हरि" "कृष्ण" तथा दोनो को एक साथ जोड़कर "हरिकृष्ण" और प्यारानाम घनश्याम यह घर में पुकारने के लिए रखा गया।

अपने धर्मग्रन्थो में भगवान के प्रादुर्भाव के बहुत प्रमाण है। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार -

दत्तात्रेय कृतयुगे त्रेतायां रघुनंदनः।
द्वापरे वासुदेवः स्यात् कलौ स्वामी वृषात्मजः॥

अर्थात् - सत् युग में दत्तात्रेय, त्रेता में भगवान राम, द्वार में भगवान कृष्ण, कलयुग में भगवान श्री स्वामिनारायण। वासुदेव माहात्म्य मे भगवान श्रीकृष्ण ब्रह्मा को कहते हैं -

धर्मदेवात्तदा मूर्तो नरनारायणात्मना
प्रवृत्तेऽपि कलौ ब्रह्मन भूत्वाहं सामगोद्विजः।
मुनिः श्रापात्नृतनुं सर्षिजनकमात्मनः।
ततो विना गुरुभ्योऽहं सद्धर्मस्थापयन्नज॥

अर्थात् हे ब्रह्मा धर्मदेव एवं भक्तिमाता द्वारा में नरनारायणदेव के रुप में सामवेदी ब्राह्मण के घर अवतार लूंगा। वैसा ही हुआ मुनिश्राप के कारण भगवान ने अवतार लिया।

यदुकूल भूषण परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र भगवान ने भागवत के दसम स्कन्ध के ५० में अध्याय में बलभद्रजी से एसा कहा था कि मेरा यह अवतार मुख्यरुप से राजा के रुप में असुरों का नाश करने के लिए है। लेकिन सत्पुरुषो तथा धर्म की रक्षा हेतु पुनः द्विदीय अवतार लूंगा। जो



स्वामिनारायण भगवानने संकल्प को पूर्ण किया। स्वामी निष्कुलानंदने सत्यरुप में गाया है - व्यास मुनि ने जो पूर्व में कहा वही बात साची कही प्रगट हुए श्री सहजानंद हरि अन्य भक्त जनों ने भी गाया है -

पाप बध्या पृत्वी ने माथे, रैयत खूब खिबीगी रे।
तेदि सहजानंद स्वामिना रुपे, पगटय सारंग वाणी रे॥

बाल्यावस्था में श्रीहरिने अनेक लीला किये। धर्मपिता एवं भक्तिमाता के ऋण से मुक्त होकर, घर का परित्याग ११ वर्ष ३ मास २ दिन में किया। तपश्चर्या हेतु वनविचरण भारत भूमि को सुखी करने के लिए संवत १८४९ को आषाढ शुक्ल दशमी शुक्रवार को प्रारम्भ किये थे। समस्त भारत भूमि की पृथ्वी पर ७ वर्ष १ मास ११ दिन तक विचरण करके भारत भूमि को गौरवान्ति किये थे। वन विचरण करते हुए गुजरात की भूमि पर प्रथम लोज की वाव पर विराजमान हुए थे।

इस प्रकार उन्नीस वर्ष की उम्र में ७ वर्ष १ मास ११ दिन भारत कि भूमि पर विचरण करके गौरवान्तिक किये थे। नीलकंठ वर्णी के वेशमें श्रीहरि जव लोज पधारे तव भगवान श्री कृष्ण के सखा ऊद्धवजी के अवतार रामानंद स्वामी के आश्रम में पधारे। रामानंद स्वामी के साथ प्रथम मिलन संवत १९५६ जेष्ठ वद १२ द्वादशी के दिन पिपलाणा गाव में कृष्णभक्त नरसिंह महेता नामवाले ब्राह्मण के घर हुआ था।

इस भव्य अलौकिक मिलन में दोनों का अभूतपूर्व आत्मसम्बन्धी तत्व का चिन्त हुआ ! दोनों मूक बने रहे रामानन्द स्वामी मौन तोडते हुऐ आदरपूर्वक बोले - त्वम् मदीयोऽसि वर्णिन" आप तो हमारे ही हैं वर्णीन। इस प्रकार का शब्द सुनकर सभी आश्चर्य युक्त हो गए। पुरातन इतिहास धर्म भक्ति का रामानंद स्वामीने सभी को सुनाया ओर नीलकंठ वर्णी को शिष्य बना लिया। थोडे समय वीतने के बाद रामानंद स्वामीने नीलकंठ वर्णी को पीपलाणा गाँव में भागवती दीक्षा दी। दीक्षा देकर नीलकंठवर्णी का "सहजानंद" तथा "नारायणमुनि" दो नाम रखा। एकवर्षबाद रामानंद स्वामी ने सं. १८५८ एकादशी को विशाल सभा में जेतपुर गाँव में सहजांद स्वामी को सम्प्रदाय की धुरा सौंप दी। और कहा कि आज से सम्प्रदाय की धुरा आपके हाथ में है।

संत-हरिभक्तं को समझाते हुए रामानंद स्वामी ने कहा कि - आज से

आप सभी लोग सहजानंद स्वामी की आज्ञा में रहना। मैं कई बार कह चुका हूं कि मैं तो डुगडुगी बजाने वाले हूँ, सच्चा नट तो अब आने वाला है। जो आज आप सभी के समक्ष है।

भक्तवत्सल भगवान की करुणा ही निराली है। गुरु रामानंद स्वामी से धर्म धुरा लेते समय गुरु की कृपा प्राप्त करके दो वरदान मांगे -

इह च यदुरु दुःखमन्तकाले
ह्यगणितवृश्चिकदंशतुल्यमाहुः ।
यदितरदपि तच्च वैष्णवानां
भवतु ममाथ च तेषु सन्त्वदुःखाः ॥
क्वचिदपि भुवि कृष्ण भक्ति भाजां
निजकृत कर्मवशादवश्य भोग्यम् ।
इह यदुरु तथान्नवस्त्र दुःखं तदपि
ममास्तु न तु प्रजेश तेषाम् ॥

अर्थात् - मेरे भक्त को एक वृश्चिक के डंक जितनी पीड़ा हो तो वह मेरे रोम-रोम में करोड़ो वृश्चिक की पीड़ा हो लेकिन मेरे भक्त को न हो। मेरे भक्त को अन्न वस्त्र की कभी कमी न हो।

सद्गुरु रामानंद स्वामीने इस प्रकार जनकल्याण की वाणी सुनकर दोनो वरदान देदिया। और गादी देने के थोड़े समय के बाद ही सं. १८५८ में मार्गशीर्ष मास शुक्ल त्रयोदशी के दिन अपनी जीवन लीला समेट लिये। इस के बाद स्वामिनारायण भगवान ने भक्त समाज को बुलाकर अपने स्वामिनारायण महामंत्र का उपदेश किया और स्वामिनारायण नाम से प्रसिद्ध हुए।

भगवान स्वामिनारायणने विशाल शिष्यं समुदाय को साथ रहकर गाँव गाँव विचरण किये और सद्धर्म की स्थापना की। समाज में अंधश्रद्धा, कुरिवाज, आडंबर इत्यादि को दूर किया। शुद्ध उपासना भक्ति का मार्ग बताया। भगवान श्री स्वामिनारायण ने सम्प्रदायकी प्रतिदिन उत्तरोत्तर वृद्दि होती रहे इस हेतु से संकल्प किया -

१. मंदिर निर्माण : पृथ्वी पर बड़े-बड़े मंदिरो का निर्माण करके उसमे भगवत्स्वरुप की स्थापना। जिससे आश्रितजन स्वधर्म में रहकर भगवत्भक्ति करके धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ को प्राप्त कर सकें।

२. आचार्य पदकी स्थापना : मुमुक्षजन को मंत्रदीक्षा सन्तों को



भागवती दीक्षा देने के लिए तथा साम्प्रदायिक व्यवस्था एवं व्यवहार हेतु धर्मवंशी आचार्यपद की स्थापना किये।

भगवान स्वामिनारायण गूढरहस्य जानकर ही भक्तिमार्गकी पुष्टि के लिए मंत्रदीक्षा पर बल दिये जिसके लिए धर्मकुल को ही आचार्य पद पर स्थापित किये।

३. शास्त्र सर्जन : सम्प्रदाय के आश्रित लोग यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकें जिसके लिए सम्प्रदाय के शास्त्रों की रचना किए।

इस प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण ने शुद्ध सनातन वैदिक धर्म की स्थापना की और यह स्थायी बना रहे इसके लिए स्वधर्मवंशी आचार्यपद को आरुढ किया। वड़ताल तथा कालुपुर दो गादी स्थान बनाये एवं दोनों का देश विभाग किये इसके साथ ही आचार्यों की धर्म मर्यादा बनाये और उसी में रहकर वर्तन करने की आज्ञा किये।

धर्मसंगठन एवं सुप्रबन्ध के लिए धर्मकुल में से ही आचार्य पद का शुभारंभ सं. १८८२ कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन अपने बडे भाई रामप्रतापजी एवं छोटेभाई इच्छारामजी के पुत्रों को जो अयोध्याप्रसादजी एवं रघुवीरप्रसादजी को आचार्य पद पर आरुढ किया। उत्तर विभाग में श्री नरनारायणदेव देश में रामप्रतापजी का कुल तथा दक्षिण विभाग में इच्छारामजी का कुल स्थापित किये। उत्तरदेश में आजतक पांच आचार्यो ने अपने स्थान को सुशोभित किया। प्रथमाचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वितीयाचार्य केशवप्रसादजी महाराज तृतीयाचार्य पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज

चतुर्थाचार्य वासुदेवप्रसादजी महाराज पच्चमाचार्य देवेन्द्रप्रसादजी महाराज इस प्रकार आज भी नित्य सत्य गादी संस्थान षष्ठ आचार्य महाराजश्री १००८ तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज द्वारा सम्पूर्ण विश्व में प्रतिष्ठान्वित हो रहा है ।



श्री रामोधरणीधरो भगवतो गंगाधरो लक्ष्मण,
श्री वंशीधर वेदमान कनही बोलाश्च धर्मो हरिः ।
आचार्योऽवधकेशवौचपुरुषः श्रीवासुदेवस्ततः,
श्री देवेन्द्रप्रसादकोकनुज्युतस्त्वेजेन्द्र नामास्थितः ॥

सम्वत २००० फाल्गुन शुक्ल पंचमी ता. ११-४-१९४४ के दिन माता शारदा देवी के दक्षिण कुक्ष से परमप्रतापी तेजःपुञ्ज एसे नरनारायण देव गादी के भावी आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी का जन्म हुआ ।

सम्प्रदाय तथा धर्मकुल के आचार्य विचार के अनुसार ही वि.स. २००९ में चौल संस्कार तथा वि.स. २०१० चैत्र मास शुक्ल पक्ष को दशमी तिथी को धर्ममय वातावरण में उपनयन संस्कार विधि सम्पन्न हुई । देववाणी संस्कृत का अध्ययन पं. दुर्गानाथ झाजी द्वारा सम्पन्न हुआ । अहमदाबाद की सुप्रसिद्ध सेंटझेवियर्स स्कूल में बाललाल तेजन्द्रप्रसादजी का अभ्यास प्रारम्भ हुआ । अभ्यास काल में साहित्य, संगीत, कला तथा विज्ञान जैसे विषयों में गूढ अध्ययन किये अन्य विषयों में उत्कट अभिलाषा वर्ती रहती ।

स्कूल - कोलेज अध्ययन काल में महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी की छाप बहुत उत्तम थी । मितभाषण, निरांडबरता, नम्रता, विवेक, निस्पृहता, धर्मनिष्ठा, सततज्ञानपिपासा, अपने गुरुओं के प्रति प्रेम-आदर, देहशुद्धि, चारित्र्य शीलता, इत्यादि गुणों की पराकाष्ठा से गुरुजनो के आप प्रियपात्र बने रहते ।

साम्प्रदायिक प्रशिक्षण, कर्तव्य तथा पवित्र आचरण का पाठ पूज्यपाद पिताजी देवेन्द्रप्रसादजी महाराज द्वारा प्राप्त हो रहा था । परिणाम स्वरुप वह उत्तरोत्तर निखार आता गया और आज के समाज में उदाहरण रुप बना हुआ है ।

८वीं दिसम्बर १९५७ में लालजी महाराजश्री तेजेन्द्रप्रासदजी महाराज छोटी उम्र अर्थात् १४ वर्ष की अवस्था में आफ्रिका में मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु प्रथम विदेश की यात्रा में गये । उत्तम व्यक्तित्वधारी विभूतियों को उमर की मर्यादा का बाध नहीं होता । लालजी तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के साथ पंदुर्गानाथझा, स्वामी जगतप्रकाशदास, पुराणी घनश्यामचरणदासजी मोम्बासा की भूमिपर पहुँचे । उस समय वहाँ के लोगों ने खूब स्वागत किया ।

छोटी अवस्था में सफल विदेश



यात्रा करके शिक्षण कार्य में दत्तचित्त हो गये और क्रमश वी. एस.सी. की परीक्षा की पदवी धारण किये ।

पूज्य पिताजी की अस्वस्थता के कारण साम्प्रदायिक उत्तरदायित्व का बोझ पिताजी की आज्ञानुसार अधिभार बढ गया था । जिससे अभ्यास में रुथावट आयी और पिताजी की कांवर को हथा में लिए उत्तरदायित्व को सम्भालने लगे ।

युवानवय में आभापूर्ण आकर्षक व्यक्तित्व, कुदरती अद्‌भुत निर्णय

शक्ति, मितभाषी अमृतवार्षणी मधुर मुग्ध वाणी और सभी को खुश रखकर संप से काम लेने की कार्यपद्धति के शुभ गुणो के कारण लालजी महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी देखते देखते ही समग्र संप्रदाय के नेत्रो का



रतन बन गए हैं, परमपवित्र चारित्र्यशीलता और सदाचरिता ही प्रेरक बल हैं।

"विद्या आवे अने विनय न
विसराय ते इशकृपा
धन आवे अने धर्म न विसराय ते
विभुकृपा
यौवन आवे अने शीलरक्षानुं सतत
स्मणर रहे ते सजहजानंद कृपा."

ब्रह्मचर्याश्रम का आंगन शीलसदाचार से, गृहस्थाश्रम के परम सात्विक प्रवेश की भावना लालजी महाराजश्री, तेजेन्द्रप्रासदजी अपने हृदय में भावना होने से पहले ही, संवत २०२५ के आसो महिने की प्रथम नवरात्री के रात के दस बजे श्री नरनारायणदेव देश गादी के पांचवे आचार्य, पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज इस पंचभौतिक देह का त्याग किया। सत्संगिओ, स्वजन, हरिभक्त और धर्मप्रेमी जन समुदाय पर वज्रपात जैसा आधात हुआ। संप्रदायने सत्संग शिरोमणी आचार्य, गुजरातने एक मूक सेवक और हजारो दुःखी लोगो ने अपना धनी खोदीया।

एक तरफ पूज्यपाद पिताश्री की छत्र छाया खोने का सहजभाव शोक और दूसरी तरफ संप्रदाय को संचालन की देखभाल की कठीन जवाबदारी प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी के मस्तक पर आ गई। अंतर में उठने वाले अश्रु सागर को आँखो की पलकों के किनारे से वापस मोड़ दिया। आचार्यपद पर अभिषिक्त होने के नए मंगल अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने एक विरल विभूति की तरह से स्वीकार कर लिया।

सन १९६९ के अक्तूबर २४ तारीख के दिन नव अभिषिक्त प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने विशाल जनसमुदाय समक्ष विनम्र भाव से उपस्थित रहकर, प्रसादी के दिव्य अपने स्वआश्रित भक्तो को सभामंडप के मध्य में सत्कार पूजन-अभिवादन का स्वीकार किया। प्यारे हरिभक्तोने उनमें रखे विश्वास और श्रद्धा को देखकर प्रत्युतर देने श्री नरनारायणदेव के छठ्ठे वंशज पीठाधिपतिने गंभीरतापूर्वक कहा कि - "इस संप्रदाय की जवाबदारी हमारे ऊपर आ गयी है पर सामने बैठे हुए सर्वोपरि नरनारायणदेव, सन्त समुदाय और हरिभक्तो ने मुझे जवाबदारी निभाने के लिए बलप्रदान करेगा। इन तीनो में मुझे श्रद्धा है। इतने आभार के साथ विराम लेतां हूँ।

और ऐसे शुरु हुआ एक युवान आचार्य की संप्रदाय सेवा की संकल्प यात्रा का नया अध्याय।

संप्रदाय के उत्तरदायित्व की धर्मधुरा संभालने के साथ-साथ आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने गृहास्थाश्रमकी धूरा भी संभाली। संवत २०२६ के ज्येष्ठ महिने की शुक्लपक्ष की त्रयोदशी, ता. १७ जून १९७० के मंगलमय दिन, आजयगढ के सुविख्यात आयुर्वेदाचार्य तथा दर्शनाचार्य पंडित

वर्य श्री चंद्रदत्त त्रिपाठी की सौभाग्यकांक्षिणी सुपुत्री विराजकुमारी के साथ, शास्त्रोक्त विधिविधान पूर्वक दबदबे के साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीने विवाह किया । गृहस्थाश्रम की पावनकारी मंगलमय यात्रा की शुरुआत की ।

विराजकुमारी ने आचार्यकुल में लक्ष्मीरुप के स्वरुपमें पदार्पण करके लाखो महिमा वाले सत्संगीओं के लिये गुरु के गौरव युक्त पद को प.पू. गादीवालाने सुशोभित किया ।

इस पवित्र युगल के प्रसन्न दांपत्य जीवन में एक भाग्यशाली सुपत्री (बिन्दुराजा) निहारीका का जन्म हुआ । संवत २०२८ ता. १७ अक्तूबर १९७२ की विजयादशमी के मंगल दिन पर श्री नरनारायणदेव की गादी के सातवे भावि आचार्यश्री लालजी महाराजश्री का जन्म हुआ । विजयादशमी के दिन प्राकट्य हुए



लालजी महाराज का नाम कोशलेन्द्रप्रसादजी निर्धारित हुआ ।

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने धर्मकुल के आध्यात्मिकता और संस्कारिता के साथ-साथ प.पू. पिताश्री की तरफ से संगीत, चित्रकला, स्थापत्यकला आदि ललितकला की चाहना और कौशल्य भी वारसागत प्राप्त किये थे । प.पू. आचार्य महाराश्री ने पवित्र करकमलो से आकार लिए हुए चित्रो - कलापूर्ण दृष्टि का विज्ञान के साथ समनव्य करके नवसर्जन करती कला-तस्वीर कला में भी प.पू. महाराजश्री की कलामय नजर का अंदाज व्यतीत हुए बीना नहीं रहता । अच्छे तसवीरकार को भी शरम आ जाये ऐसी कलासूझ



द्वारा प.पू. महाराजश्री ने कैमरे में रक्षित कर धन्यता बक्षी है ।

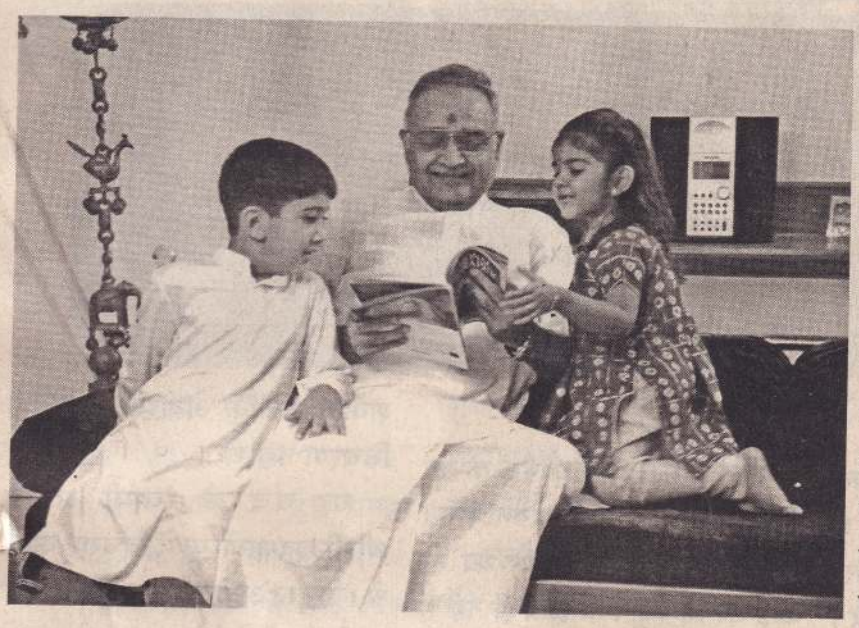
ज्ञान, भक्ति, शक्ति, तेज, करुणा, शील, आचार्य, आर्जव, माधुर्य, क्षमा, शुचिता और सादगी जैसे अपार गुणो के भंडार जैसे विभूति मंडित व्यक्तित्व वाले प.पू. महाराजश्री धर्मप्रवर्तक और धर्मरक्षण की जवाबदारी के इतने बडे बोझ के नीचे दबे हुए होने के बावजूद भी हमेशा हलके फूल की तरह रह कर, उच्च-नीच, अमीर-गरीब के भेदभाव को छोडकर, धर्मके ध्वज का सदैव रक्षण करते हुए सच्चे अर्थ में सत्संग और संप्रदाय की सेवा में लीन रहते है ।

प.पू. महाराजश्री आज श्री नरनारायणदेव देश, गुजरात तथा समग्र भारत वर्ष तथा दरियापार के देश युरोप, अमेरिका और आफ्रिका तथा अखाती देशो के ३००० से भी ज्यादा मंदिर, असंख्य सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओ तथा देश-विदेश के करोडो अनुयायीओं के धर्मजीवन पथप्रदर्शक है । जीवनकाल के साठवर्ष बिता चूके होने के बावजूद भी आज वे वही यौवन सरल स्फूर्ति से आचार्यत्व का उत्तरदायित्व निभा रहे है ।

युवानो में अतूट श्रध्धा रखने वाले आचार्य महाराजश्री का प्रारंभ हुआ । जव कि परदेश में. "जी : जी" इन्टरनेशनल स्वामिनरायण सत्संग ओर्गेनाईझेशन को स्थापित करके युवानो की शक्तिको सेवा परायण मार्ग दिखाया । शैक्षणिक प्रवृत्ति तथा धर्मप्रचार के लिए प.पू. महाराजश्रीने देश-विदेश में अनेक यात्राएं की ।

(विदेश यात्राओंकी विगत)

उत्सव और महोत्सव लोकसमाराधन के अविभाज्य अंग है। प.पू. लालजी महाराजने



जीवनकाल में ऐसे कई उत्सव-महोत्सवो का आयोजन करके मनाया।

(मनाए गए उत्सवोकी विगत)

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने प.पू. लालजी महारजाश्री को युवाशक्ति के संगठन की जवाबदारी सौंप कर उंहे सत्संग और समाजसेवा के पावनकारी कर्तव्यो में सम्मिलित किया। नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्यो ने सत्संग की विविध प्रवृत्तिओं के प्रति समर्पित होकर वृक्षारोपण, रक्तदान, परिसंवाद, गोष्ठि, वक्तृत्व, स्पर्धा, प्रभातफेरी, शिबिर, धर्मसभाए, साक्षरता अभियान आदि प्रवृत्तियों द्वारा युवाधर्म अदा किया। इस युवा समाज में आज के युवको से लेकर वकील, डॉक्टर और विविध व्यवसायीओने भी अपना विनम्र योगदान दिया है।

प.पू. गादीवालाश्री भी बहनो के विभाग में ऐसी ही सुंदर प्रवृत्तियां चला रही है। (प्रवृत्तियाँ) सांख्ययोगी और कर्मयोगी बहनें उनकी आज्ञा से अहमदाबाद के शहेर-गाँव, गाँव और नगर, नगर-और मंदिरो में सत्संग और सभा करके अंधश्रद्धा और वहेमो को दूर करके सच्चे अर्थ में सत्संग मे ओतप्रोत करती हैं। उन्होने भी प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री भी प.पू. महाराजश्री की तरह ही रात-दिन सत्संग की प्रवृत्तियाँ करती रहती हैं। बहेनो की सत्संग में विशेष जागृति के लिए भक्तिसुधा त्रैमासिक जैसी सामाजिक और प्रजभाषा में वचनामृत जैसे ग्रथं श्री सत्संगिभूषण शिक्षापत्री के अनुवाद उन्होंने हिन्दी भाषामें किया है। इतनी विराट प्रवृति में भी ऐसे संप्रदाय को पोषण करके साहित्य के संरक्षण का कार्य कर रही है।

प.पू. महाराजश्रीने आचार्य के रुप में अपनी जात को कभी केन्द्र में नहीं रखा है। श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में प्रबोधित सिद्धांत के द्वारा उन्होंने शिक्षण के अपने कार्यो में अग्रीमता से स्थान दिया। ध.धु. अक्षरनिवासी आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के रजत जयंती महोत्सव के समय पर सत्संग संचालन स्मृति प्रतीक के रुप में जो संचित-निधि समर्पित किया था। वह रकम आचार्य महाराजश्रीने अपने पास न रखतें हुए ट्रस्ट की रचना की। इ.स. १९६६ में श्री सहजानंद आर्टस एन्ड कोमर्स कालेज आंबावाडी अहमदाबाद में प्रारंभ किया। इस कोलेज के अभ्यास में प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजको बहुत रस था। पू. महाराजश्री की प्रेरणा से ही १९६२ मे कोलेज होस्टेल का स्वप्न भी पूर्ण हुआ। इसके बाद क्रमशः (तमाम शैक्षणिक संस्था, गुरुकुल, स्वामिनारायण मासिक आदि विगत लेना, अन्य सामाजिक प्रवृत्तियों की विगत, षष्ठी पूर्ति महोत्सव, मुलाकांते प.पू. महाराजश्री के मुलाकात, प.पू. महाराजश्री का महास्वप्न म्युझीयम्। समापन में पू. महाराजश्री के बारे में थोड़ी बाते)

स्नेह सागर का उद्‌गम स्थान

प्रो. हितेन्द्रभाई नारायणभाई पटेल

व्रज ना स्वामी अयोध्यामां विचर्योने त्रणेय थया रणीयात ।
अयोध्या ना स्वामी पधार्या केशवप्राने, सत्संग मा थयो चणाकाव ।
केशव पुरुषोत्तम मां समानाने, सत्संग थई रह्यो सम गंगाघाट ।
पुरुषोत्तम तणो प्रसाद पाम्या वासुदेवने, आखा मुलकमां थयो मलकाट ।
देवाधिदेव वासुदेवे अर्प्या देवेन्द्रने, सत्संग मां तई रह्यो मधमघाच ।
देवेन्द्रनुं तेज तेजेन्द्रमां उतर्युं ने, थई रह्यो जगमगाट ।
तेज तेजेन्द्र कौशलेन्द्र समर्थ्या ने कईरह्यो घनगनाट ।
कौशलेन्द्र ने किया विहार व्रजेन्द्रमां ने, थई रहेयो किल किलाट ।

सामान्य - अर्थ :-

भगवान श्रीहरिने स्वयं स्थापित किए हुए श्री नरनारायणदेव गादिसंस्थान, उन्ही के वंश परम्परा की एक झलक उपरोक्त काव्य में है। भगवान श्रीहरि के दत्तक पुत्र अयोध्याप्रसाद उनके आत्मज केशव प्रसादजी उनके पुत्र पुरुषोत्तमप्रसादजी उनके पुत्र वासुदेवप्रसादजी उनके पुत्र श्री देवेन्द्रप्रसादजी, उनके आत्मज श्री पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री जो वर्तमान में नरनारायणदेव गादि संस्थान के आचार्य पद पर आरुढ है।

भावी आचार्य के रुप में कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराज विधमान है।

इस समय श्री हरि के छठ्ठे वंशज श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री बिराजमान है।

विशिष्ट अर्थ :-

उपरोक्त काव्य में "शीर्षक के रुप में " स्नेह सागर का उदगम स्थान बताया गया है , सो सागर का तो कोई उदगम स्थान तो होता ही नही है । इसका आद्यन्त ही नहीं है यहाँ पर स्नेह सागर शब्द प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के लिए प्रयुक्त किया गया है। इनके माहात्म्य को समझाने का यहाँ प्रयाश किया गया हैं।

१. कव्य की शुरुआत और पूर्ति दोनो, 'व्रज' शब्द से भी। प्रथम कडी में व्रज के स्वामी शब्द का प्रयोग हुआ है वह द्विअर्थी है । इसलिए काव्य ज्यादा गूढार्थ बनता है। व्रज के स्वामी का अथे है। वजेन्द्रप्रसादजी के मूल दादा मतलब कि श्री हरि स्वयं व्रज के स्वामी शब्द श्री कृष्णचंद्रके लिए नहीं प्रयोजित हो शकता क्योंकि अयोध्या में उनका विचरण नहीं था।

यह व्रज के स्वामी अर्थात श्रीहरिखुद अयोध्या में विचरण करते थे। प्रभुका अयोध्या नगर में विचरण करने से तीनो लोक धन्य हो गए। यहाँ अयोध्या शब्द नगर-शहेर तथा व्यक्ति के विषय में उपयोग करके पंक्तिओं में जान डाली है। भगवान श्रीहरिने अयोध्याप्रसादजी को अपने पुत्र के रुप में स्वीकार्य किया इसिलिए तीनो, लोक - स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल तथा ब्रह्मकोटी, ईश्वरकोटी तथा जीवकोटी - खूब धन्य हुए। क्योंकि परब्रह्म परमात्माने अपने आचार्य स्थापित करने का गूढार्थ परिपूर्ण किया। ऐसा अर्थ भी बताया है कि अयोध्याप्रसादजी की तीन पेढ़ी तक संतानो की परंपरा है। इसलिए अदृश्य रुप से यह तीनो पीढियां भी

धन्य हुई हैं ।

२. दूसरी कड़ी में लिखे शब्द अयोध्या के स्वामी मतलब कि अयोध्या नगर के स्वामी अर्थात प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री क्योंकि अयोध्या श्री नरनारायणदेव के देश का गॉव है । इस अयोध्याप्रसादके पुत्र केशवप्रसादजी हुए ।

उस समय सत्संग में उथलपाथल इसलिए हुई क्योंकि तभी से सबसे पहलीबार हस्तलिखित शास्त्रो का मुद्रण कार्य शुरु किया गया । शास्त्रो की पोथिओं पर पड़ी हुई धूल को साफ करके आचार्य श्री केशवप्रसादजी महाराजने ज्ञान से शोभित किया है । वचनामृत जैसे गहनशास्त्र भी उन्हों ने ही सबसे पहले मुद्रित करवाया था ।

ऐसा भी अर्थ फलित होता है कि अयोध्या के स्वामी अर्थात अयोध्याप्रसादजी के स्वामी अर्थात स्वयं श्रीहरि खुद ही केशवप्रसादजी महाराजश्री में आविर्भाव हुए थे ।

३. तीसरी कड़ी में केशव शब्द विशिष्ट रुप में श्री कृष्ण भगवान के लिए लिखा गया है । केशव अर्थात, श्री कृष्णचंद्र पुरुषोत्तम नारायण में वितिन हो गए हैं । अर्थात कविने सुंदर युक्ति से पुरुषोत्तम नारायण को सर्व अवतारी का भेद बताया है । केशवप्रसादजी महाराजश्री के पुत्रभावको श्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री ने प्राप्त किया तब दिनप्रतिदिन सत्संग के विकास से, आचार्य संत हरिभक्तो के तप के तेजस्वीता से उसकी पवित्रता को कविने गंगा-घाट के समान वर्णीत किया है । जिस तरह गंगाघाट पापी पुण्यशाली, मनुष्य पशु, स्त्री-पुरुष, त्यागी-भोगी, राजा प्रजा सभी का एक समान भाव से कल्याण करतें है उसी तरह से आचार्यश्री पुरुषोत्तमदासजी के मार्गदर्शन के नीचे सत्संग में कल्याणकारी धोध अविरतता से बहने लगा ।

४. चोथी कडी में स्पष्ट अर्थ यह है कि पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजकी कृपा वासुदेव प्रसादजी पर उतरी थी । खुद को संतान न होने की वजह से वासुदेवप्रसाद महाराजश्री को दत्तक लिया गया । उन्होंने उनको प्रसाद दिया । कवि ऐसा भी कहना चाहतें है कि परात्पर परमात्मा पुरुषोत्तमनारायण की कृपा से ही श्वेतदीपपति वासुदेव भी आकर समर्थन दे गए । सर्व अवतार के अवतारी सिद्धांत यहॉ प्रस्तुत होता है । पुरुषोत्तमनारायण ने दिये ऐश्वर्य को सभी अवतार भोगतें हैं ।

सभी देशो में मलकाट हुआ क्योंकि वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री गादी पर बिराजमान हुए तब उनकी उंमर २५ वर्ष थी अपने इस आचार्य के समक्ष बड़े बड़े वृद्ध संत, गृहस्थ विद्वान सभी हाथ जोडकर खडे रहते थे । क्योंकि यह वासुदेव तो पुरुषोत्तमनारायण की कृपा से ही गादी पर बैठे थे । श्रीहरि की इस अलौकिक लीलाको देखकर बड़े-बड़े संत हरिभक्तो के मन प्रफुलित हो जाते थे ।

अगर पुरुषोत्तम अर्थात पुरुषोत्तमनारायण और वासुदेव अर्थात श्वेतदीपपति वासुदेव लिखे तो, वासुदेव को इस संसार ब्रह्मांड की रचना के लिए प्रेरित करने से, अक्षर कोटि तक सभी अपने-अपने आत्यतिक कल्याण की राह देखकर बैठे हुए ईश्वरादि सभी जीव अत्यंत हर्षित हुए ।

५. कडी में उपयोग किए शब्द देवाधिदेव वासुदेव अर्थात श्रीहरि स्वयं । श्रीहरिने खुद ही अपनी ईच्छा से देवेन्द्रप्रसादजी महाराज को इस सत्संग में भेजा था ।

देवेन्द्र अर्थात देवो के देव इन्द्र अर्थात परमात्मा वासुदेव खुद ही कारण रुप से देवेन्द्रप्रसादजी के रुप में पधारे थे ।

जब परमात्मा खुद ही आंशिक रुपसे यहॉ पधारे तब स्वाभाविक रुप से ही गुणो की सुगंधने पूरे सत्संग में फेलकर उससे सत्संग को सुगंधित बना दिया ।

६. देवेन्द्रप्रसादजीने स्वयं वासुदेवको तेज-सामर्दी-शक्ति दी वही तेज तेजेन्द्रप्रसादजी में ग्रहित हुआ है । अर्थात तेजेन्द्रप्रसादजी में जो तेज का प्रभाव, वैराग्य की घांट नम्रता की

नदी, सभी में समभावना की द्रष्टि आदि उत्तम गुण स्वयं वासुदेवने दिए है। और उसीके प्रताप से आज सत्संग में झगमगता देखने मिलती है।

७. जो तेजेन्द्रप्रसादजी को वासुदेव के पाससे सामर्थीयॉ मिली है। उन्होने इस सत्संग को अपने लाल कोशलेन्द्र को समर्पित कि है। कवि ने यहॉ शब्द समर्पण का उपयोग किया है। समर्पण अर्थात सेवा में देना। अपने पुत्र को सत्संगकी सेवा करने, अर्पण किए बिना महंताईने, बिना गादी के अपने आचारण से युवानो के हृदय के गादीपति बन गए। और खुद अवस्था से भी युवान हैं। इसिलिए सत्संग में अभी श्रीहरि को प्रसन्न करने का समय है।

सत्संग प्रचार और प्रसार के लिए देश-विदेश में बहुत विचरण करके संत-हरिभक्तो का आशीर्वाद पाकर विनम्रता के सागर कोशलेन्द्रप्रसादजीने सत्संग समाज को बाल लालजी व्रजेन्द्रप्रसादजी दिए और उनकी तोतली भाषा-बातो से सत्संग में बाल सहज किलकिलाट गुंज गया।

यहॉ कोशलेन्द्र अर्थात कौशल देश के इन्द्रं अर्थात श्रीहरिने स्वंय व्रजेन्द्र में अर्पिभाव किया है। व्रजेन्द्र अर्थात व्रज के इन्द्र अर्थात श्री कृष्ण चंद्र में अर्पिभाव श्रीहरि का ही है ऐसा बताकर कवि फिर सर्वावतारी के सिद्धांत को समझाते है।

इस काव्य को बहुत ध्यान से शुद्धता से कहेंगें तो, परमात्मा को कन्द्र में रखकर समझेंगे तो स्पष्ट होगा कि :-

१. उत्तरोत्तर सभी धर्मवंशी आचार्यो में भी साक्षात पुरुषोत्तम नारायण श्रीहरि का ही आर्विभाव है। और इसीलिए सभी धर्मवंशी आचार्य मानुषी शरीर लेकर कोई के पुत्र या कोई के पिता है परंतु मूल में तो श्रीहरि के अपर स्वरुप हैं।

२. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री में भी तप, दया, धर्म, सौम्यता आदिक गुण तो स्वयं वासुदेवने दिए हैं। उसकी किंमत तो अमूल्य है। अर्थात अशक्य है।

३. संप्रदाय में भगवान श्रीहरि स्वयं सर्व अवतार के अवतारी है यह सिद्धांत है।

उपसंहार : इस प्रकार शब्दों का यथार्थ ज्ञान करके संप्रदाय के आचार्यश्रीकी महत्ता का इस काव्य की पंक्ति सें विशिष्ट अर्थघटन किया गया हैं। और हम सभी इस गूढार्थ का रहस्य जान सकतें हैं। हम लोगों ने यह उत्सव नहीं बल्कि महोत्सव किया है। क्योंकि श्रीहरिके अपर स्वरुप का लाभ लिया है।

यह विचार करते हुए शरीर में रोमांच हो जाता है कि आज से पूर्व पांच पीढ़ियों में षष्टि पूर्ति का अवसर मिला नहीं जिस महाराजश्री द्वारा समाज दीर्धायुष्य सुखी खुशहाल बनता है उसी महाराजश्री का यह पुनीत अवसर सभी के आंगन में मनाया गया जो इस पूर्णचार्यो में नहीं था। इसका लाभ अर्थात षष्टि पूर्ति महोत्सव के दर्शन का लाभ आज हम सभी को मिला है। श्री नरनारायणदेव को हृदय से पार्थना करें कि इसी प्रकार हम सभी को आनेवाली सभी धर्मवंशी आचार्यो की परंपरा का लाभ मिलता रहे।

सत्संग का गौरव

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. अरविंदभाई परसोत्तमदास ठक्कर (शितल मोटर्स वाले) को दिल्ली की संस्था "ईन्डीयन इकोनोमी रीसर्स एन्ड डेवलपमेन्ट ओर्गेनाईझेशन" द्वारा श्रेष्ठ कार्य तथा सामाजीक संस्था में योगदान के लिए "भारतीय उद्योग रत्न" का एवोर्ड प्राप्त हुवा है। श्री स्वामिनारायण जयंती के दीन यह एवोर्ड दि. ३०-३-२००४ को रामनवमी को दिल्ली में भारत सरकार के पूर्व चुनाव आयोग के कमिश्नर श्री जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति तथा यु.पी. स्टेट के भूतपूर्व राज्यपाल श्री रमेश भंडारी के द्वारा दिया गया था। उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प.पू. महाराजश्री आशीर्वाद देते है।

कार्यवाहक समिति

अध्यक्ष - प.पू. युवाचार्य पूज्य लालजी महाराजश्री
उपाध्यक्ष - स.गु. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी
सेक्रेटरी - स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी. पी. स्वामी)
सैक्रेटरी - स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (कांकरीया महंत)
खजानची - स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी (भूतपूर्व महंत छपैया)
खजानची - स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदा (जेतलपुर महंत)
सभ्यश्री - स.गु. ब्र. स्वामी वीसुदेवानंदजी (ट्रस्टीश्री, छपैया महंत)
सभ्यश्री - स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (ट्रस्टीश्री)
सभ्यश्री - प.भ. दशरथभाई पटेल
सभ्यश्री - प.भ. मणीभाई पटेल
सभ्यश्री - प.भ. रमणभाई पटेल
सभ्यश्री - प.भ. जी.के पटेल
सभ्यश्री - प.भ. अमृतभाई चौधरी

धर्मशाला (उतारा) समिति

१. स.गु. ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजी (छपैया)
२. स.गु. शा.स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा महंत)
३. स.गु. शा. स्वामी आनंदप्रसाद (कांकरीया कोठारी)
४. स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदास (जेतलपुर महंत)
५. स.गु. शा.स्वामी प्रेमवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर)

शोभायात्रा समिति

१. स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (ट्रस्टीश्री)
२. स.गु. स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुर)
३. स.गु. स्वामी रघुवीरचरणदासजी (सोकली)
४. स.गु. स्वामी इखिलेश्वरदासजी (मथुरा)
५. स.गु. पी. पी. स्वामी (कोटेश्वर)
६. स.गु. माधव स्वामी (आबु)
७. प.भ. डाह्याभाई सोमाभाई, नवा वाडज
८. प.भ. अमृतभाई शीवाभाई शाहीबाग
९. प.भ. भरतभाई पारलावाळा (जीवराजपाक)
१०. प.भ. दासभाई (बापुनगर)
११. प.भ. प्रविणभाई (श्रध्धा केसेट, वडुवाले)

प्रचार समिति

१. स. गु. ब्र. वासुदेवानंदजी (छपैया महंत)
२. स. गु. स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा महंत)
३. स. गु. शा. स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी
४. स. गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी (धोलका महंत)
५. स. गु. स्वामी नंदकिशोरदासजी (अयोध्या)
६. स. गु. स्वामी हरिप्रसाददासजी (वाली वाले)
७. स. गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (इडर)
८. स. गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर)
९. स. गु. स्वामी प्राणजीवनदासजी (मूली)
१०. स. गु. स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजी (चराडवा)
११. स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी (भूतपूर्व कोठारी छपैया)
१२. स.गु. स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी (मूली)
१३. स. गु. स्वामी भक्तवत्सलदासजी (लींबडी)
१४. शास्त्री ऋषीकुमार सेटेलाईट

समिति

१. स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर महंत)
२. स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी (भूतपूर्व महंत छपैया)
३. प. भ. श्री रसिकभाई दयालजीभाई सोनी
४. प.भ. श्री चंद्रकांतभाई प्रबुदासलभाई पटेल
५. प.भ. ठक्कर अरविंदभाइ पुरुषोत्तमदास (वासणा)
६. प.भ. ठक्कर कनुभाई (गांधीवगर)
७. प.भ. पटेल नटुभाई गोरधनभाई (काकरिया)

रसोई समिति

१. स. गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (ट्रस्टीश्री)
२. स. गु. स्वामी धर्मस्वरूपदासजी (नाथद्वारा)
३. स. गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी (मूली)
४. स. गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी (मूली)
५. प.भ. नारायणभाई टी. मालवणीया (सुरेन्द्रनगर)
६. प.भ. अमृतभाई पटेल (लखतर)
७. प.भ. हरिभाई कच्छी (मोरबी)
८. प.भ. झवेरभाई (मोरबी)
९. प.भ. चीरागभाई (हळवद)
१०. प.भ. घनश्यामभाई दलवाडी (घनश्यामनगर)
११. प.भ. दलाल कांतिभाई
१२. प.भ. सोनी नटुभाई (धोऴका)
१३. प.भ. डॉ. गोविंदभाई (राणीप)
१४. प.भ. सोनी मनुभाई गोरधनभाई

प्रदर्शन समिति

१. स. गु. पी. पी. स्वामी (कोटेश्वर गुरुकुल)
२. स. गु. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)
३. प.भ. जनकभाई विनुभाई पटेल (मेमनगर)
४. प.भ. संजयभाई रमणीकभाई सोनी (सेटेलाईट)
५. प.भ. पंकजभाई भावसार (नवा वाडज)
६. प.भ. मनुभाई (बायड वाले)

संत रसोई तथा

१. स.गु. भंडारी स्वामी रामचरणदासजी (माणसा)
२. स.गु. भंडारी स्वामी कृष्णप्रसाददासजी (टोरडा)
३. स.गु. पुराणी स्वामी नारायणचरणदासजी
४. स.गु. स्वामी निलकंठ (सापावाडा)
५. स.गु. भंडारी स्वामी माधव (प्रांतिज)
६. स.गु. स्वामी शांतिप्रसाददासजी (पेथापुर

वी.आई.पी. आमंत्रण तथा स्वागत

१. स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर महंत)
२. स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी (भूतपूर्व महंत छपैया)
३. स.गु. शा. स्वामी मुकुंदप्रकाशदासजी (मूली महंत)

४. स.गु. शा. स्वामी आनंदप्रसाददासजी (कांकरिया)
५. स.गु. शा. स्वामी घनश्यामजीवनदासजी (भालोडा)
६. स.गु. शा. स्वामी केशवप्रसाददासजी
७. स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (हरिद्वार)

विष्णुयाग

१. स.गु. शा. स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी (नारायणपुरा)
२. स.गु. शा. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (प्रायाग)
३. स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी (भूतपूर्व पूजारी)
४. स.गु. स्वामी नारायणमुनिदास (पाटडीवाले)
५. स.गु. शा. स्वामी नाराणप्रसाददासजी (मूली)
६. स.गु. शा. स्वामी विष्णुप्रसाददासजी (मथुरा)

महापूजा

१. स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभादासजी (मूली)
२. स.गु. शा. स्वामी आनंदजीवनदासजी (हिंमतनगर)
३. स.गु. शा. स्वामी छपैयाप्रसाददासजी
४. स.गु. शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी (सिध्धपुर)

स्टोर समिति

१. स.गु. स्वामी श्यामचरणदासजी (जेतलपुर)
२. स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी (भूतपूर्व पूजारी)
३. स.गु. स्वामी देवप्रसाददासजी (खणीवाले)
४. प.भ. कांतिभाई रणछोडदास पटेल (विसनगर)
५. प.भ. बलदेवभाई शंकरभाई पटेल (सितापुर)
६. प.भ. गोविंदभाई वेलजीभाई पटेल (ट्रेन्ट)

सभा मंडप व्यवस्था

१. स. गु. शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (हरिद्वार)
२. स. गु. शा. स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (नारायणघाट)
३. स.गु.शा. स्वामी इश्वरचरणदासजी (धरियावद)
४. स.गु.शा. स्वामी सत्यप्रकाशदास (कोठारी, अहमदाबाद)
५. स.गु.शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी
६. स.गु.शा. स्वामी मुक्तजीवनदासजी (कोठार, अहमदाबाद)
७. स.गु.शा. स्वामी भक्तिप्रकाशदासजी (कोठार , अहमदाबाद)
८. प.भ. पटेल रमेशभाई (माणसा)
९. प .भ. भानुभाई शिवरामदास पटेल (महेसाणा)
१०. प.भ. धीरुभाई सौरठिया (बापुनगर)

प्रेस मिडीया

१. स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर महंत)
२. स.गु.शा. स्वामी मुकुन्दप्रसाददासजी (मूलीमहंत)
३. स.गु.शा. स्वामी आनंदप्रससाददासजी (कांकरिया)
४. प.भ. पटेल कांतिलाल नरोत्तमदास (नान उभडा)
५. प.भ. पटेल महादेवभाई चतुरभाई (मेमनगर)
६. प.भ. हितेन्द्रभाई नारायणभाई (अहमदाबाद)
७. प.भ. दिनेश के. भगत
८. प.भ. गोरधनभाई वी. सीतापरा
९. प.भ. शैलेन्द्रसिंह झाला

अन्नकूट छपन्नभोग

१. स. गु. स्वामी उत्तमप्रियदासजी (मूली)
२. कोठारी स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी
३. भंडारी स्वामी धर्मप्रकाशदाजी
४. स्वामी राधारमणदासजी
५. प.भ. संडलीया भूराभाई गोविंदभाई (बापुनगर)
६. प.भ. खिचडीया महेन्द्रभाई (बापुनगर)

समिति

१. प.भ. सोनी संजयभाई रमणीकभाई (सेटेलाईट)
२. प.भ. पटेल भरतभाई (बारेजा)

पानी समिती

१. प.भ. पटेल इश्वरभाई गंगारामभाई (मेमनगर)
२. प.भ. पटेल ज्यंतीभाई नरसीभाई (मेमनगर)
३. प.भ. पटेल कनुभाई रेवाभाई (नारायणघाट)
४. प.भ. पटेल लालजीभाई गणेशभाई (भउपुरा)
५. प.भ. पटेल कांतिभाइ परसोत्तमभाई (मेमनगर)
६. प.भ. पटेल कृष्णकांत शामजीभाई (मेमनगर)
७. प.भ. पटेल प्रविणभाई नारायणभाई (मेमनगर)

पार्कींग समिति

१. प.भ. काछीया हैमंतभाई (सेटेलाईट)
२. प.भ. पंड्य कैशलभाई (जनतानगर)
३. प.भ. पटेल नवनीतभाई (अरोडा)
४. प.भ. पटेल रामभाई (उमेदगढ)

लाईट समिति

१. प.भ. ब्रह्मभट्ट धिरुभाई (नारायणपुर)
२. प.भ. खिचडीया नारायणभाई (बापुनगर)

स्वंय सेवक समिति

१. प.भ. महाराज उदयनभाई अविनाशभाई (विसनगर)
२. प.भ. पटेल भक्तिभाई रामजीभाई

टेलीफोन इन्टरकोम समिती

१. प.भ. ठक्कर हसमुखभाई (वासणा)
२. प.भ. पटेल चीमनभाई (राणीप)

अखंड धुन समिति

१. प.भ. गंगारामभाई महादेवभाई (मेमनगर)
२. प.भ. जीवरामभाई परषोत्तमभाई (मेमनगर)
३. प.भ. पटेल परषोत्तमदास (बापुनगर)
४. प.भ. सरदारजी सपजीतसिंह एम (कांकरीया)
५. प.भ. पटेल गोविंदभाई (उंझा)

सफाई समिति

१. प.भ. राणा जयेन्द्रसिंह (बापुनगर)
२. प.भ. झवेरभाई झाला (बापुनगर)

वीडीयो फोचोग्राफी समिति

१. प.भ. हरीशिभाई (केरा-कच्छ)
२. प.भ. खरसाणी अमीतभाई (अहमदाबाद)

संरक्षण समिति
१. प.भ. गजेन्द्रसिंह बापु (नरोडा)
२. प.भ. महेशभाई (मणथलाल, कठलाल)

वाहन व्यवहार समिति
१. प.भ. रवजीभाई छभाडीया (सहजानंद ट्रावेल्स)
२. प.भ. जंयतिभाई शाह (अलका ट्रावेल्स)

आरोग्य समिति
१. प.भ. डॉ. कनुभाई (वासणा)
२. प.भ. डॉ. भाविनभाई (कांकरिया)
३. प.भ. डॉ. कनुभाई पटेल (बापुनगर)

पुछताछ समिति
१. प.भ. पाटडीया कौशिकभाई (नवरंगपुरा)
२. प.भ. डाह्याभाई (नडियाद)

दानपेटी समिति
१. प.भ. पटेल बाबुभाई इश्वरदास (चांदीसणा)
२. प.भ. पटेल रामभाई (मोखासण)

स्टेज
१. प.भ. इश्वरभाई त्रिभोवनदास (माणसा)
२. प.भ. सोनी अजयभाई कांतिलाल (महेसाणा)

कायदाकीय सलाह समिति
१. प.भ. सोनी परवेशभाई (सेटेलाईट)
२. प.भ. पटेल कांतिलाल

सिविलवर्क समिति
१. प.भ. कानाणी जयकामभाई छगनभाई (बापुनगर)
२. प.भ. प्रविणभाई नसीन

मेगेजीन समिति
१. प.भ. बुटिया डाह्याभाई चेलाभाई (कालियाणा)
२. प.भ. पटेल शंभुभाई नागजीभाई (वाडज)

षष्ठी पूर्ति महोत्सव की सीडी का प्रकाशन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के षष्ठी पूर्ति महोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में धामधुम से संपन्न हुआ । देश-विदेश के लाखो हरिभक्तोने जिसके दर्शन करके अपने जीवन को धन्य माना । ऐसे महोत्सव को सदैव चिरंजीव कहता है । वर्तमान युग में टेकनोलोजी बहुत विस्तृत हो रही है । इसिलिए वर्षो तक इस महोत्सव के दर्शन हो और सभी जीवमात्र के लिए उसकी यागे शक्षित रहे तथा संजोगो के आधिन कोई उत्सव में न आ सके हो वो सभी के लिए षष्ठी पूर्ति महोत्सव की सीडी (दो सीडी का सेट) प.पू. लालजी महाराजश्री के मार्गदर्शन के नीचे तैयार की गई है । जो अपने मंदिर के साहित्य केन्द्र पर से प्राप्त होगी ।

श्री नरनारायण देश के पीठाधिपति के सिंहासन का सुवर्ण के सिंहासन में रुपांतर

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री से सेकर वर्तमान आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में नित्य जिस पर बिराजमान होने है वह उस सिंहासन कई वर्षो तक चांदी से बना था । परंतु षष्ठी पूर्ति महोत्सव के उपक्रम से प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामीश्री की प्रेरणा से श्रद्धालु धर्मप्रेमी श्री नरनारायणदेल के प्रति बहुत निष्ठावान अ.नि.प.भ. भालजा साहब के मंडल की तरफ से और दूसरे कई भाविक भक्तो के आर्थिक सहकार से 'आचार्य' पीठ के सिंहासन को सुवर्ण से मढ़वाया गया है । प.पू. महाराजश्री सभा में बिराजतें है तब और उसके बाद भी इस दिव्य अलौकिक सिंहासन के हजारो संत-हरिभक्त नित्त्य दर्शन करतें है । सुवर्ण से मढ़ने के बाद सिंहासन अनि सुंदर और भव्य लगता है । श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के इस दिव्य सिंहासन के तमाम आश्रितो को नित्य दर्शन करना चाहिए ।

श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा

प्रवेश चालु है कक्षा १ से १२

परम पूज्यपाद् धर्मधुरंधर आचार्य महाराजश्री के प्रसादी के पुराने निवास स्थान श्री स्वामिनारायण वाडी असारवा में पीछले कई बरसो से श्री नरनारायणदेव की मालिकी के गुरुकुल हरिभक्तो के बच्चो को उच्चशिक्षण के साथ संस्कार सिंचन का उमदा काम करतें है। जिस से गुरुकुल की प्रगति उत्तरोत्तर बढती जा रही है।

कक्षा १ से १२ तक रहने की सुंदर व्यवस्था और संस्कार के साथ सुंदर व्यवस्था सत्संगी के बच्चों को दी जाती हैं। कक्षा १० (S.S.C.) के परिणाम के बाद तुरंत ही प्रवेश के लिए कक्षा-११ के विद्यार्थीओ का संपर्क कीजीए।

श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा (स्वामिनारायण वाडी)
उत्तर गुजरात पटेल सो. विभाग-१ के पासमें
अहमदाबाद-३८० ०१६. फोन नं. ०७९-२२१३६८२२

श्री सहजानंद गुरुकुळ माउन्टआबु में

प्रवेश सूचना

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद द्वारा संचालित श्री सहजानंद गुरुकुल मान्टआबु (राजस्थान) में जुनीयर के.जी. से कक्षा-१० तक अंग्रेजी मीडीयम में अभ्यास करने के ईच्छुक विद्यार्थीओ के लिए प्रवेश कार्य चालु है।

प्रिप्रायमरी - प्रायमरी के गुजराती, हिन्दी मीडीयम के विद्यार्थीओ को अंग्रेजी मीडीयम में दाखिल कर शकते हैं। जेतलपुर के मंदिर के महंत स्वामी शास्त्री आत्मप्रकादासजी तथा पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन द्वारा संचालित गुरुकुल में अपने पुत्र को प्रवेश देनां चाहते है वे माता-पिता नीचे के पते पर अपना संपर्क करे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर
मु. जेतलपुर,
फोन : ०२७१८-२८२३७६
मो. : ९८२५०१००६०, ६८२५८०४५६१

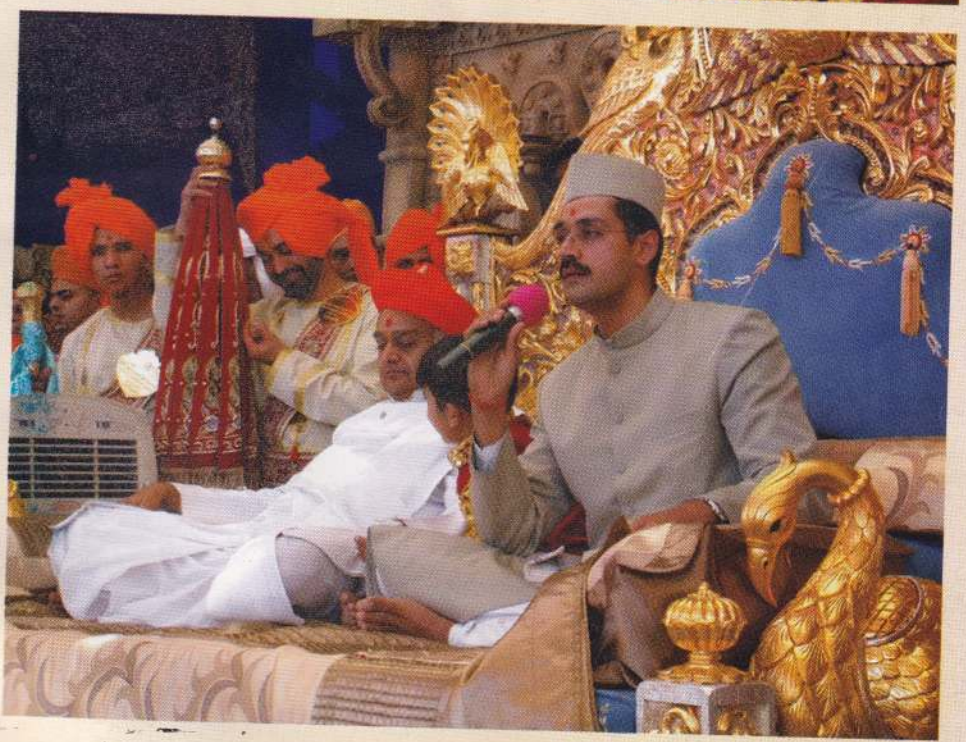
श्री सहजानंद गुरुकुल
देलवाडा रोड, माउन्ट आबु (राज.)
फोन : ०२९७४-२३८९२१, २३५१३३

संप्रदाय के गौरव

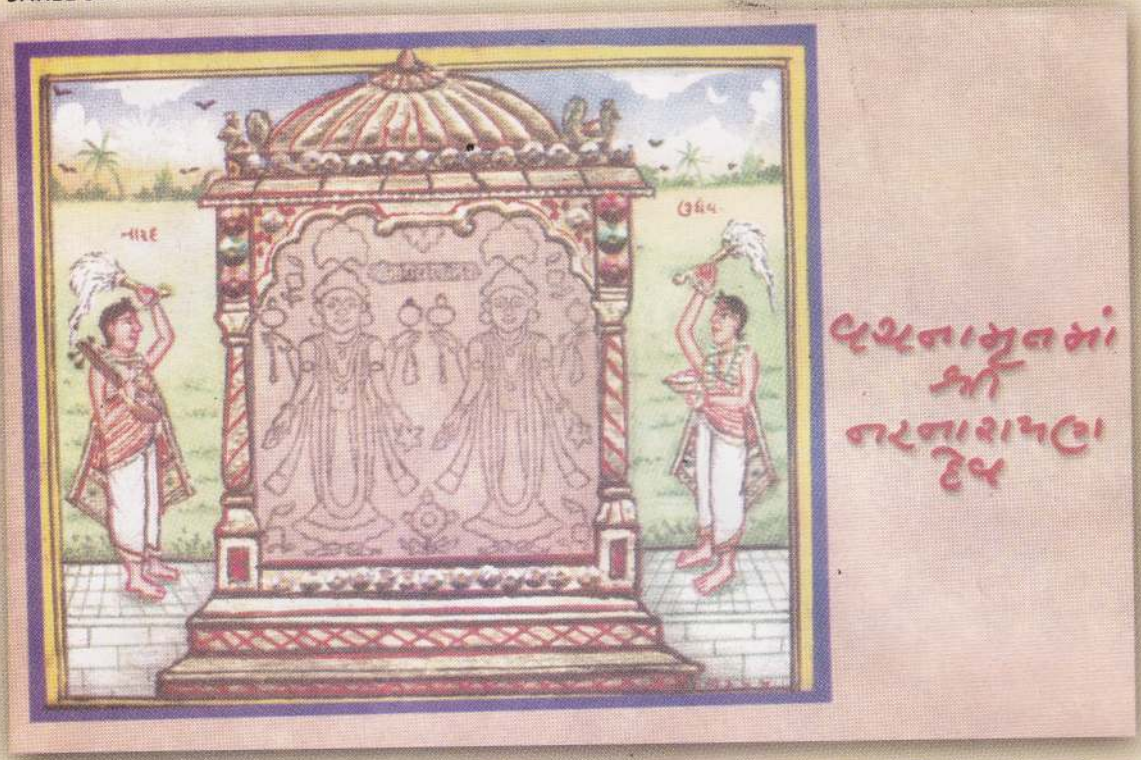
★ जिन्होंने मोरेशियस में अपने सुंदर मङ्गदिर का निर्माण किया ऐसे अ.नि.प.भ. कुरजीभाई रामजी के सुपुत्र प.भ. श्री कल्याणभाई कुरजी (के.के) जो समग्र मोरेशियस देश में रव्यातनाम बिल्डर है। उन्होंने जी. ओ. एन. एस. के की पदवी देकर मोरेशियस के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति का बहुमान किया है।

★ सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के अनन्य निष्ठावान और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अत्यंत कृपामात्र प.भ. प्रो हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल के लघु बंधु प.भ. श्री धीरुभाई नारणभाई पटेल की गुजरात हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति के रुपमें नियुक्त किया गया है। इस के पहले तो वे केन्द्र सरकार सरकारी वकील के रुप में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करके छोटी सी उंम्र में वे हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति के रुप में स्थान प्राप्त किये। इनकी अत्तरोत्तर प्रगति के प.पू. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते है।

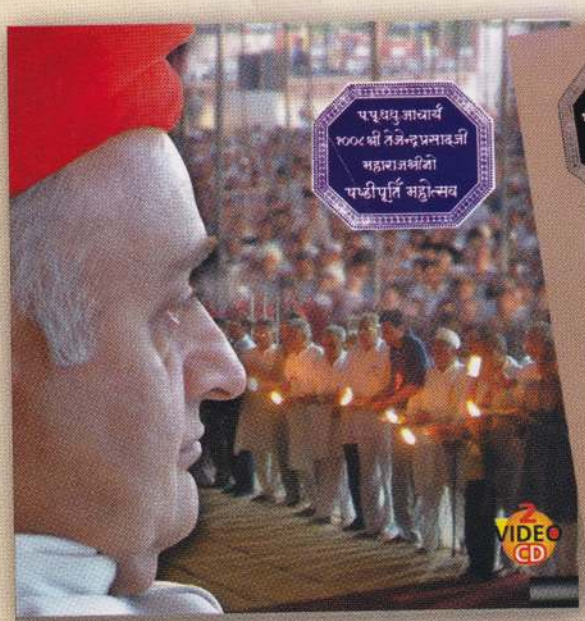




महोत्सव में प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रकार से सहभागी हुए सभी लोगो का आभार मानते वक्त सबके उपर अत्यंत प्रशन्नता के कारण पू. महाराजश्री का पुलकित हृदय भावविभोर होकर हर्षाश्रु बहने लगे क्षण भर के लिए पू. महाराजश्री की वाणी नहीं परंतु मौन बोल रहा था। इस मौन को पू. लालजी महाराजकी मधुरवाणी द्वारा बहते देख हजारो हरिभक्तो का हृदय गद्‌गदी हो गया था।

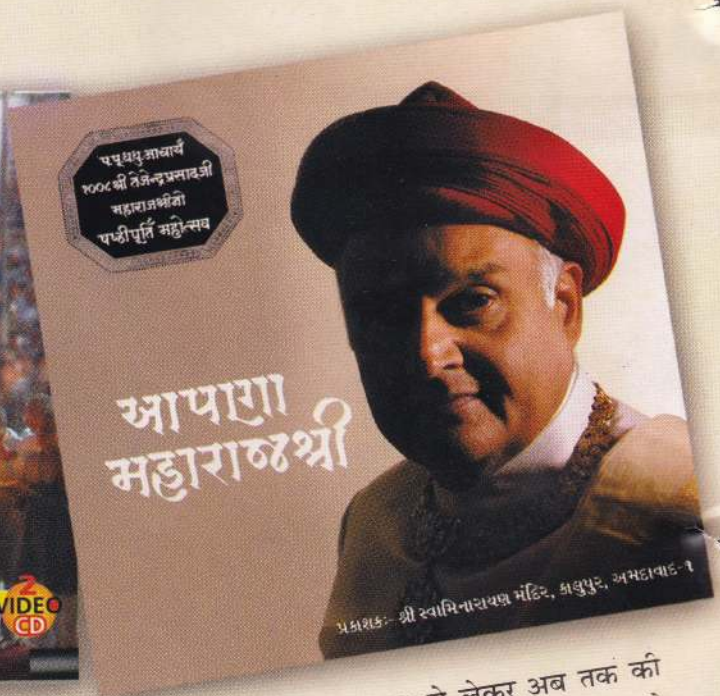


षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. महाराजश्री के कर कमलो द्वारा 'वचनामृत में श्री नरनारायणदेव' पुस्तिका का विमोचन हुआ था ।



षष्टि पूर्ति महोत्सव की याद स्म दो विडियो सीडी का सेट मंदिर द्वारा प्रकाशित हुआ है ।

ये दोनो सीडी अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र पर से प्राप्त हो शकती है ।



प.पू. महाराजश्री के बचपन से लेकर अब तक की जीवनयात्रा के प्रसंगो का स्वीकार करती ''अपने महाराजश्री'' विडियो सीडी प्रकाशित की गई थी ।